Vol.-14 Issue-54 Jan.-Mar., 2026

CHHAVI

National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679 PEER REVIEWED

April 2026

SERIC
BIKANER

Prof. (Dr.) Rajendra Kumar Shrimali

Editor in Chief
09414742973, 09413471252

Published by :-

Shubham Education, Research & Information Centre

B/H KARNI MATA TEMPLE, O/S JASSUSAR GATE, BIKANER-334004, RAJ
E-mail : shrimalidrrajendra@gmail.com Website : www.chhavinjhe.in

OUR REVIEWER BOARD



DR. RANJEET KHINCHI
Educationist, Hindoli, District-Bundi



Sh. P.D. YADAV
Educationist, Neem Ka Thana, Sikar



DR. SANJAY KUMAR VERMA
Educationist, Haryana



DR. ASHOK K. GODARA
Educationist, Jhunjhunu



DR. YOGESHWAR S. YADAV
Educationist, Kotputli-Behror



DR. SUMAN SHARMA
Educationist, Malsisar, Jhunjhunu



AD. ARUN KUMAR
Educationist, Behror



DR. MITHILESH K. SHRIVASTAV
Educationist, Ajmer

राजस्थान सरकार के पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमान भंवरसिंह भाटी छवि पत्रिका के वेबसाईट का लोकार्पण व त्रैमासिक अंक का विमोचन करते हुए





शुभम एज्युकेशन, रिसर्च एवं इन्फोरमेशन सेन्टर के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां



महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय परिसर, बीकानेर



एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली



शि.सं.उ. न्यास, नई दिल्ली से डॉ. अतुल कोठारी



केन्द्रीय कानून मंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल



पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला

DISCLAIMER

The accountability of the research matter articulated in this journal is entirely of the author(s) concerned. The view expressed in the research papers/articles in this journal does not essentially correspond to the views of the publisher/editor, The publisher/editor of the journal is not liable for errors or any consequence arising from the exercise of information contained in it.

-Chief Editor

हमारे सदस्यगण

CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

Published by

International Education & Research Centre, Bikaner

1. डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर
2. श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर
2. डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी
3. डॉ. रूपा यादव, हरियाणा
4. डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर
5. डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़
7. डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर
9. श्री रवि बिजारणिया, सीकर
10. श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली
11. डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़
12. डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़
13. डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर
14. डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़
15. डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद
16. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू
17. डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं
18. डॉ. निहालचन्द, घड़साना
19. डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर
20. डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर
21. डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर
22. डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
23. डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू
24. डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर
25. श्री औंकार सिंह राठौड़, नागौर
26. डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर
27. डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर
28. डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़
29. डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर
30. डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर
31. डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़
32. डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर
33. डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़
34. डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर
35. डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर
36. डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा
37. डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं
38. डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर
39. डॉ. अंजली पारीक, जयपुर
40. डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू
41. डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर
42. डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर
43. डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर
44. डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़
45. डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर
46. डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर
47. डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर
48. डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर
49. डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर
50. डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर

CONTENTS

S. No.	AUTHOR(S) NAME AND TITLE	PAGE NO.
1.	वेदान्त और ब्रह्मविद्या की प्राप्ति : एक नया अध्ययन – प्रो. रजनीरमण झा	1–3
2.	मेवाड़ का प्रसिद्ध लोक नृत्य – गवरी – डॉ. इन्द्र सिंह राठौड़	4–6
3.	आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 का समग्र अध्ययन – डॉ. गोपाल प्रसाद 'पाठक'	7–14
4.	आधुनिक शिक्षा व्यवस्था भारत में शिक्षा के क्षेत्र में आए परिवर्तन और उसकी वर्तमान दिशा – अणु प्रकाश, अखिलेश शर्मा	15–16
5.	भारत में प्रौढ शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ में – डॉ. शिवानी	17–19
6.	**Artificial Intelligence in Financial Reporting : Transforming Accounting Practices - Vikas Jangid**	20–22
7.	**Understanding the Influence of Gamification on the Academic Achievement of Senior Secondary Student - Shishupal Raika, Dr. Bharti Sharma**	23–28
8	**A Study of Mathematical Problem-Solving Ability of Secondary School Students Taught through Inductive and Deductive Teaching Methods - Arun Kumar Sharma, Dr. Dola Chakravotry**	29–33
9	शिक्षण प्रशिक्षणों से शिक्षा की गुणवत्ता एवं शिक्षकों की कार्यक्षमता में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन –देवेन्द्र कौर	34–35
10	महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीयता की भावना के विकास में प्रभावशीलता का अध्ययन – प्रियंका यादव, डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय, बृजेश कुमारी शर्मा	36–37
11	फंतासी जाल में आज का युवा : दशा एवं दिशा – डॉ. नरेन्द्र कुमार	38–39
12	शिक्षा की गुणवत्ता : दशा एवं दिशा – प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	40–41
13	वैवाहिक संक्रमण – डॉ. (श्रीमती) प्रियंका श्रीमाली	42–44

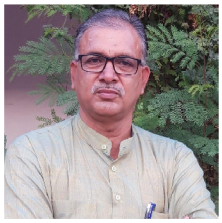
CONTENTS

S. No.	AUTHOR(S) NAME AND TITLE	PAGE NO.
14	आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक सामंजस्य एवं अन्तर्वैव्यक्तिक संबंधों (मिलनसारिता) का अध्ययन – रमेश चन्द मीना, डॉ. शिखा सर्वा	45–47
15	**Impace of Academic Stress on the Personality at Senior Secondary School Students - Hitesh Kumar Rathore Dr. Shailja Dubey**	48–52
16	**Personality Traits as Predictors of Altruistic Tendencies among College Learners - Arvind Sharma, Dr. Bhawna Kulshrestha**	53–55
17	**Difficulties in Understanding Accounting Concepts among Senior Secondary Commerce Students - Priyanka Jhalani Dr. Shruti Tiwari, Dr. Beena Sharma**	56–58
18	हिंदी उपन्यासों में आदिवासी – सतीश चंद्र जोशी, डॉ. ललित कुमार श्रीमाली	59–63
19	**Reading Literature in the Age of Artificial Intelligence : Challenges and Opportunities for Indian Academia - Dr. Suman Dahiya**	64–68
20	आर.एस.सी.आई.टी. (RS-CIT) का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान एवं इसके प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन – मुक्ता शर्मा, डॉ. सुरजमल शर्मा	69–72
21	शैक्षणिक पुस्तकालयों में इलेक्ट्रानिक प्रकाशन – सुनील महर्षि डॉ. योगेन्द्र सिंह	73–75
22	नई शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शिक्षण–अभ्यास के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन– प्रियंका शर्मा, डॉ. सुरजमल शर्मा	76–79
23	**Culinary Adaptation in Mewar : A Study of Traditional Cooking Techniques, Ingredients, and Climate-Based Food Practices - Ranjana Vaishnava**	80–81
24	**Problems of District Level Weightlifting Players and Their Significance- Rakesh Paliwal, Dr. Bhupendra Singh Chouhan**	82–84

CONTENTS

S. No.	AUTHOR(S) NAME AND TITLE	PAGE NO.
25	महात्मा गांधी की भाषा नीति : भाषा विकास के संबंध में – डॉ. अर्चना कुमारी	85–88
26.	**To Study Effect of Different Training Methods on Hand and Shoulder Muscle Strength and Abdominal Strength on Hockey Players- Karan Singh Sarangdevot, Dr. Bhawani Pal Singh Rathore**	89–91
27	**A Study on assessment of functional fitness among Athletes and Non-Athletes of Kota Division - Rakesh Sharma, Dr. Bhawani Pal Singh Rathore**	92–94
28	अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों की स्वसामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन – खुशबू दोशी, डॉ. सुनीता मुर्डिया	95–97
29.	उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि, का तुलनात्मक अध्ययन – गरिमा भारती, प्रो. सुषमा सिंह	98–101
30.	विभिन्न आयु वर्गो के खिलाड़ियों व गैर खिलाड़ियों की दुश्चिता पर प्राणायाम के प्रभावों का एक अध्ययन – शिक्षा माथुर, डॉ. भवानी पाल सिंह राठौड़	102–103
31.	शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का प्रभाव – हेमन्त यादव, प्रो. ममता गुप्ता	104–109
32	**E- GOVERNANCE/GOOD GOVERNANCE - RAM NIWAS SAINI, Prof. DR. D.P. MISHRA**	110–113
33.	उत्तर आधुनिकता के उपन्यासकार मधु आचार्य 'आशावादी' – प्रियंका हर्ष	114–117

वेदान्त और ब्रह्मविद्या की प्राप्ति : एक नया अध्ययन



प्रो रजनीरमण झा
प्राचार्य
भीमसेन चौधरी राजकीय महाविद्यालय लूणकरणसर
जिला–बीकानेर (राजस्थान)

सदानन्दयोगीन्द्र का वेदान्तसार वेदान्तदर्शन का निचोड़ जैसा है। वेदान्त उपनिषद् को कहते हैं। उपनिषद् वेद के अन्तिम भाग हैं, अतः वेदान्त कहलाते हैं। पर इसकी एक और व्याख्या है। अन्त परिणाम को भी कहते हैं। यानी वेदों के परिणाम उपनिषद् हैं। वैदिक दर्शन जो कहलाता है, वह मुख्यतः औपनिषदिक दर्शन ही है।

वेदान्त या उपनिषद् का प्रतिपाद्य विषय ब्रह्मानुभूति है जिसे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म (सब ब्रह्म है)', 'तत्त्वमसि (तुम वह ब्रह्म हो)', 'अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूं)', 'अयमात्मा ब्रह्म (यह आत्मा ब्रह्म है)', 'प्रज्ञानं ब्रह्म (प्रज्ञान या ज्ञान ब्रह्म है)' आदि वाक्यों से पहले वेदों में कहा गया। उपनिषद् इन्हीं महावाक्यों का विस्तार से वर्णन करते हैं।

सदानन्दयोगीन्द्र का वेदान्तसार इन उपनिषदों का सार प्रस्तुत करता है, इसीलिए वेदान्तसार कहलाता है।

प्रारम्भ में ही सदानन्द कह देते हैं कि ब्रह्मविद्या का अधिकारी वह होता है, जिसने इस जन्म और पूर्वजन्म में वेद–वेदांगों का पूर्ण अध्ययन कर लिया हो, जिसने वेदान्त के अर्थ को समझ लिया हो, जो काम्य और निषिद्ध दोनों प्रकार के कर्मों का त्याग कर चुका हो, जो नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना अनुष्ठान करके समस्त कल्मषों से दूर हो गया हो और इस प्रकार उसका चित्त निर्मल हो गया हो, जो साधनचतुष्टय से सम्पन्न हो, ऐसा प्रमाता यानी प्रमाण के द्वारा व्यवहार करनेवाला पुरुष इस ब्रह्मविद्या का अधिकारी होता है।

अधिकारी तु

विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरस्सरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठान निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता। 1

यहां यह ध्यातव्य है कि यदि उत्कट और दुर्दमनीय मुमुक्षा उत्पन्न हो जाय, तो मनुष्य को मुक्त होने में अधिक समय नहीं लगेगा। राजा परीक्षित सात दिनों के लिए असाधारण रूप से ब्रह्मनिष्ठा को प्राप्त हुए और उन्होंने भागवत का श्रवण कर ब्रह्मभाव को प्राप्त किया। किन्तु यदि कोई प्रमादग्रस्त है, तो उसके लिए अनन्तकाल भी कम पड़ जाय। श्रीमद्भागवत महापुराण में कहा गया है कि अपने कल्याणसाधन की ओर से असावधान रहनेवाले पुरुष के अज्ञान में बीते हुए वर्षों का कोई लाभ नहीं है। सावधानी और ज्ञानपूर्वक बितायी गयी दो घड़ी भी श्रेष्ठ है, क्योंकि उसमें अपने कल्याण की चेष्टा की जा सकती है। राजर्षि खट्वाङ्ग अपनी आयु की समाप्ति का समय जानकर दो घड़ी में ही सबकुछ त्यागकर भगवान् के अभयपद को प्राप्त हो गये।

किं प्रमत्तस्य बहुभिः परोक्षैर्हायनैरिह।
वरं मुहूर्तं विदितं घटेत श्रेयसे यतः ।।
खट्वाङ्गो नाम राजर्षिर्ज्ञात्वेयत्तामिहायुषः ।
मुहूर्त्तात्सर्वमुत्सृज्य गतवानभयं हरिम्। 2

साधनचतुष्टय हैं – नित्यानित्यविवेक, इहामुत्रार्थफलभोगविराग, शमादिषट्कसम्पत्ति और मुमुक्षुत्व। इस साधनचतुष्टय की विवेचना के लिए अलग से एक

आलेख की आवश्यकता होगी। अभी इतना ही समझा जाय कि ब्रह्मविद्या की प्राप्ति में ये बड़े सहायक हैं।

वेदान्तसार में ब्रह्म को अद्वितीयवस्तु, अखण्डचैतन्य, शुद्धचैतन्य आदि नामों से बताया गया है। किस प्रकार उसको अनुभव किया जा सकता है, उसके उपाय बताये गये हैं। श्रवण, मनन, निदिध्यासन, अष्टाङ्गयोग आदि का इसमें वर्णन है।

एक बात इसमें यह कही गयी है कि यदि कोई साधक सविकल्प समाधि के रस का आनन्द लेने लगता है, तो वह रसास्वाद भी समाधि में बाधा हो जाता है। सविकल्पक समाधि में साधक को ब्रह्मानुभूति तो होती है,

पर उसका जो द्वैत है, आत्मा और परमात्मा का, वह बना रहता है। वह अद्वैत यानी आत्मा और परमात्मा के ऐक्य को नहीं समझ सकता।

कमाल की बात कही गयी है कि इस रसास्वाद को त्यागकर आगे बढ़ने में यानी निर्विकल्प समाधि में जाने में बहुत से साधक भयभीत हो जाते हैं।अतः वे वहीं रुक जाते हैं, उनकी पूर्ण समाधि नहीं हो पाती है।

विद्यारण्यस्वामी कहते हैं कि जैसे सागर में डूबे हुए मनुष्य की इन्द्रियां व्याकुल हो उठती हैं, उसी प्रकार सविकल्पक आनन्द का रसास्वादन करनेवाले योगी की बुद्धि अखण्डैकरस ब्रह्म का श्रवणकर उसमें प्रवेश न कर पाने से उससे भय खाने लगती हैं।

आचार्य गौडपाद कहते हैं कि यह अस्पर्शयोग या निर्विकल्प समाधि सभी योगियों के लिए दुर्दर्श है। योगिजन इस सर्वभयमुक्त योग को आत्मनाश समझते हुए इससे भय खाते हैं। वे अभयपद में भय का दर्शन करने से अविवेकी हैं।

अस्पर्शयोगो वै नाम दुर्दर्शः सर्वयोगिभिः।
योगिनो बिभ्यति ह्यस्मादभये भयदर्शिनः।। 3

तो पूर्ण या निर्विकल्प समाधि क्या है ? इसमें साधक का स्वरूप शुद्धचौतन्य में विलीन हो जाता है। वह परब्रह्मस्वरूप हो जाता है। उसका अपना कुछ नहीं बचता। उस परावर यानी अनादि और अनन्त ब्रह्म के स्वरूप में जाने का सबसे बड़ा सूचक यह है कि तब हृदय की गांठें टूट जाती हैं, सभी संशय नष्ट हो जाते हैं और सभी कर्म समाप्त हो जाते हैं।

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते सर्वकर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।

इसको पतञ्जलि ने योगसूत्र में निर्बीज समाधि कहा है।

इसे ही वे धर्ममेघ समाधि या कैवल्यप्राप्ति कहते हैं।

पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तेरिति। 5

अर्थात् जिनका पुरुष (परमात्मा) के लिए कोई कर्तव्य शेष नहीं रहा, ऐसे गुणों (सत्त्व, रजस् और तमस्) का अपने कारण में विलीन हो जाना कैवल्य है अथवा यों कहिए कि द्रष्टा यानी पुरुष का अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित हो जाना कैवल्य है। सरल भाषा में कहें तो गुण कार्य रूप में पुरुष को भोग कराकर पुरुष यानी परमात्मा रूपी अपने कारण में विलीन हो जाते हैं या पुरुष का गुणों से सम्बन्ध का अभाव हो जाता है, तो केवल पुरुष रह जाता है। यही कैवल्य है। यही ब्रह्मविद्या की प्राप्ति है।

यह हमारे जीवन का यह सर्वोच्च लक्ष्य बताया गया है।इसे मोक्ष या मुक्ति भी कहते हैं।

यह मुक्ति दो प्रकार की होती है – जीवन्मुक्ति तथा विदेहमुक्ति। जीवन्मुक्ति में व्यक्ति जीवित रहता हुआ भी मुक्ति की अवस्था में रहता है अर्थात् सभी प्रकार की कामनाओं से मुक्त। विदेह मुक्ति में शरीर छूटने की बाद मुक्ति मिलती है। इसके पीछे का तर्क यह दिया जाता है कि जबतक शरीर है, तबतक उसका धर्म रहेगा और पूर्णतः निष्कामता नहीं आ सकती। किन्तु जब शरीर छूट जाता है, तो उसका धर्म भी समाप्त हो जाता है और जीवात्मा पूर्णतः निष्काम होकर मुक्त हो जाता है।

यह तर्क अपनी जगह सही है। तथापि व्यक्ति यदि जीवन्मुक्त नहीं है, तो उसकी विदेहमुक्ति भी कैसे होगी ? जीवन्मुक्त की निष्कामता ही देह के छूटने के साथ विदेहमुक्ति हो जाती है। अतः जीवन्मुक्ति का अगला चरण ही विदेहमुक्ति है।

एक विचारधारा यह भी कहती है कि मुक्ति के लिए किसी साधन और साधना की आवश्यकता ही नहीं है। न कोई बन्धन है और कोई मुक्ति है। अष्टावक्र ने राजा जनक को कहा था कि तुम निस्सङ्ग, निष्क्रिय, स्वप्रकाश और निरञ्जन हो, तुम्हारा बन्धन ही यही है कि तुम मुक्ति प्राप्त करने के लिए समाधि का अनुष्ठान करते हो।

निस्सङ्गोऽसि निष्क्रियोऽसि त्वं स्वप्रकाशो निरञ्जनः ।
अयमेव हि ते बन्धः समाधिमनुतिष्ठसि।।

आदि शङ्कराचार्य ने निर्वाणषट्कम् में यह कहा कि मैं न शरीर हूं, न मन हूं, न बुद्धि हूं, न धरती हूं, न आकाश हूं, न माता, न पिता, न मित्र, न गुरु, न शिष्य आदि कुछ नहीं हूं।

आगे वे कहते हैं कि मैं निर्विकल्प और निराकार हूं, सभी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने वाला हूं । मैं आसङ्गत नहीं हूं यानी मेरा बन्धन नहीं और मेरी मुक्ति भी नहीं है। मैं सिद्ध नहीं किया जा सकता। मैं ज्ञान और आनन्दरूप शिव यानी परमतत्त्व हूं।

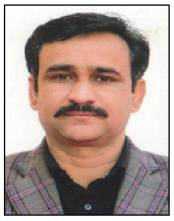
अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चासङ्गतं नैव मुक्तिर्न मेयश्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रह्मविद्या की प्राप्ति हमें बन्धन, मुक्ति आदि के वैचारिक द्वन्द्व से भी बाहर निकालती है और हमारे परमात्मस्वरूप को प्रकाशित करती है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. वेदान्तसार, लेखक सदानन्दयोगीन्द्र, कारिका – 5
2. श्रीमद्भागवत महापुराण, स्कन्ध 2, अध्याय 1, श्लोक 12–13
3. माण्डूक्यकारिका , प्रकरण 3, कारिका 39
4. मुण्डकोपनिषद् , मुण्डक 2 खण्ड 2, मन्त्र 3
5. पातञ्जल योगसूत्र, कैवल्यपाद, सूत्र – 34
6. अष्टावक्रगीता, प्रसङ्ग 1, सूत्र 15
7. निर्वाणषट्कम् , रचयिता – आदि शङ्कराचार्य, श्लोक – 6

मेवाड़ का प्रसिद्ध लोक नृत्य : गवरी



डॉ. इन्द्र सिंह राठौड़
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र,
बी.एन.पी.जी. गर्ल्स कॉलेज,राजसमन्द
rathore.isr77@gmail.com

लोक परम्परा की दृष्टि से राजस्थान समृद्ध प्रदेश है। राजस्थान के विभिन्न भागों में लोक कला के अनेक स्वरूप दर्शनीय है। बीकानेर व जैसलमेर के लोक नाट्यों में 'रस्मत' प्रसिद्ध है। इसी प्रकार लोक संस्कृति के प्रतीकों में मेवाड़ की 'गवरी' का विशिष्ट स्थान है। विश्व में एकमात्र मेवाड़ है जहाँ यह लोकनृत्य गवरी की जाती है। यह नृत्य भील जाति द्वारा किया जाता है। मेवाड़ का प्राचीन नृत्य गवरी राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को 800 वर्षों से भी अधिक समय से सुशोभित कर रहा है। इसका आयोजन मुख्यतः उदयपुर व राजसमन्द जिले में होता है। इस खेल का उद्भव स्थल उदयपुर माना जाता है। गवरी भीलों का सांस्कृतिक एवं धार्मिक नृत्य है। इस नृत्य का प्रचलन डूंगरपुर, भीलवाड़ा, उदयपुर व सिरोही में है। राखी पर्व के तुरन्त बाद शुरू होने वाला गवरी नृत्य 40 दिनों तक कठिन उपवास पर आधारित है। दिन में एक समय भोजन करते है जिसमें हरी सब्जी व मांस–मदिरा का सेवन नहीं करते है। जूते नहीं पहनते, जमीन पर सोते है, नहाते भी नहीं है। जिस गांव में गवरी ली जाती है उस गांव के आदिवासी घर में एक व्यक्ति व्रत करता है। गवरी केवल पुरूषों के द्वारा ही किया जाता है। यह नृत्य शिव–पार्वती को केन्द्र मानकर किया जाता है। जो प्रकृति के संरक्षण पर बल देती है। गवरी के कलाकारों का समर्पण अनुकरणीय है।

गवरी की उत्पत्ति :– गवरी शब्द माता गौरी से निकला है। गौरी यानी पार्वती जिसे भील जनजाति गौरजा के नाम से पुकारते है। इनके अनुसार श्रावण मास की पूर्णिमा के एक दिन बाद देवी गौरजा धरती पर आती है और धरती पुत्रों को आशीर्वाद देकर जाती है। गौरजा भीलों की प्रमुख देवी है। इस देवी को सर्व कल्याण एवं मंगल की प्रदात्री माना गया है। भील लोग देवी गौरजा के मंदिर में जाकर गवरी लेने की इच्छा व्यक्त करते है और पाती मांगते है। पाती मांगना एक परम्परा है। मूर्ति के सामने एक थाली रखी जाती है। उस थाली में यदि फूल या पत्ती आकर गिरती है तो इसे देवी की आज्ञा का संकेत माना जाता है। मंदिर में भी भोपों के शरीर में भी माता प्रकट होकर गवरी की आज्ञा देती है। तब गांव का प्रत्येक भील से एक व्यक्ति सवा महिने तक गवरी नृत्य के लिए घर से निकल जाता है। मान्यता है कि भगवान शिव से सृष्टि का निर्माण हुआ है। पृथ्वी पर पहला पेड़ बरगद था जो पाताल से लाया गया था। इस बरगद के पेड़ को देवी अम्बा व और उसकी सहेलियां लेकर आई थी जो उदयपुर के निकट हल्दीघाटी के पास उनवास में यह बरगद का पेड़ स्थापित किया गया था। गवरी का उद्भव शिव भस्मासुर की कथा से भी माना जाता है। भस्मासुर का जन्म भगवान शिव के शरीर पर लगी भस्म(राख) से हुआ था। भस्मासुर ने भगवान शिव की आराधना की तो भगवान शिव ने प्रसन्न होकर भस्मीकड़ा दिया जिसे भस्मासुर ने धारण किया। भस्मासुर जिसके भी सिर पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जाएगा। इससे भस्मासुर अहंकारी होकर पूरी दुनिया को तबाह करने लगा तभी भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप बनाया और एक आकर्षक नर्तकी का रूप धारण कर भस्मासुर को अपना हाथ अपने ही सिर पर रखवाकर उसे भस्म किया। यह गवरी इसी

घटना का गुणगान करती है।

गवरी के नियम :– चालीस दिनों तक चलने वाली गवरी केवल पुरूषों के द्वारा की जाती है। हर तीसरे साल गांव में गवरी ली जाती है। 40 दिनों का कठिन उपवास किया जाता है। एक समय खाना खाते है। हरी सब्जियां, मांस–मदिरा का परहेज रखते है। जूते–चप्पल नहीं पहनना, अपने घर नहीं जाना, जमीन पर सोना, नहाना भी नहीं होता है। गवरी के कलाकारों का समर्पण अनुकरणीय है। चालीस दिन 40 खेल का यह नृत्य सुबह से शाम को प्रतिदिन किया जाता है। यह नृत्य नाटक एक वृत में खेला जाता है। जिसके केन्द्र में त्रिशुल स्थापित होता है। गांव के खुले स्थान पर यह नृत्य किया जाता है।

गवरी के पात्र :– गवरी नृत्य में भगवान शिव को एक अनोखे रूप में दर्शाया गया है। गवरी के अनेक पात्रों का अपरिवर्तनीय स्वरूप है। कुछ पात्रों को वंशानुगत जिम्मेदारी दी जाती है। गवरी के पात्र सभी पुरूष ही होते है। गवरी में मुख्यतः चार तरह के पात्र होते हे।

1. मानव पात्र :– राई बुढिया/पुरिया– भगवान शिव का स्वरूप, राई माता(पार्वती एवं विष्णु स्वरूप), कुटकुडिया(गवरी का सबसे वृद्ध व्यक्ति), कंजर–कंजरी, मीणा, नट काजड़ी, शंकरिया, कालबेलिया, बणिया, जोगी, काना–गुजरी, कालू कीर, बणजारा, भोपा, बनवारी।

2. दानव पात्र :– भवरा, खंडल्या भूत, हठिया, भियांवल

3. पशु पात्र :– सुअर, रीछड़ी व शेर मुख्य है।

गवरी में पांच पात्रों की अहम भूमिका होती है।

1. राई बुढिया/पुरिया :– यह भगवान शिव व भस्मासुर का प्रतीक है जो हाथ में लकड़ी का बना खांडा, कमर में मौटे–मौटे घुंघरू की बनी पट्टी, जांघिया व चेहरे पर मुखोटा लिए होता है जो गवरी के विपरीत दिशा में नृत्य करता है।

2. राई माता :– गवरी में दो राई माता होती है। एक राई माता पार्वती का स्वरूप है तो दूसरी राई माता भगवान विष्णु का मोहिनी स्वरूप है।

3. कुटकुडिया :– गवरी का सबसे बुजुर्ग व्यक्ति होता है। जो गवरी के प्रत्येक खेल से पूर्व उसकी संक्षिप्त कथा सुनाता हुआ कुट कुडाई करता है। गवरी का डायरेक्टर होता है। इसका सहयोगी झामट्या होता है जो दर्शकों का मनोरंजन करता है।

4. झामट्या/खडकट्या :– यह कुटकुडिया की बातों को दोहराता है तथा दर्षकों का मनोरंजन करता है।

5. पाट भोपा :– गवरी में दो पाट भोपा होते है। एक गौरज्या का भोपा व दूसरा मामादेव का भोपा होता है।

6. खेल्या/खेलार :– मुख्य पात्रों के अलावा 40 से 50 खेल्या होते है जो विभिन्न खेलों में अपना किरदार निभाते है। मीणा–बंजारा, काना–गुजरी, कालू कीर, हठिया–दाणी, राजा–रानी, गाडुलिया, बाणीया, शंकरिया, देवी अम्बा व खेतुड़ी, बादशाह की सवारी, कालका जैसे अनेक खेल करते है।

पोशाक एवं वाद्य यंत्र :– गवरी नाट्य के विभिन्न पात्रों के अनुरूप अलग–अलग पोशाकें एवं रूप का सृजन करते है। उनके रंगरूपों का भी उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान होता है। पात्रों के गुण–दोषों के अनुसार ही उन्हें रंगों का चुनाव करना आता है। विभिन्न पात्रों का बनने के पीछे उनका धार्मिक विश्वास एवं विभिन्न देवी–देवताओं को खुश करना होता है। गवरी में मुख्य वाद्ययंत्र थाली व मादल होते है।

गवरी के प्रमुख गीत :– गवरी नृत्य में सभी खेलों में गीतों के माध्यम से घटनाक्रम को बताया जाता है। विभिन्न खेल जैसे– काना–गुजरी, कालू–कीर, हटिया–दाणी, राजा–रानी, गाडुलिया–लौहार, लाखा–बणजारा, शंकरिया इत्यादि खेलों में जो गीत गाए जाते है–

कानो मटकियां फोडे रे गेलुरिया।
माजी फुलड़ विणवा जावे रे गेलुरिया।।
छाती रे परवाने काछवा लाजेरे मोतीड़ा बामण।
काछवा पेणु तो परणाई धारी वाजूरे मोतीड़ा बामण।।
ऐरन मांडी रे लवारिया, ऐरन मांडी रे लवारिया।
थारे ऐरन रा धुंवा सू काली पड़ गई रे लवारिया।।
ले ले न वरजू अणी कपड़ा रो दान थूं मती बांदे वरता रे।
नी लेवू रे ऐ राणी अणी कपड़ा रो दान मैं तो बांदूली वरता

रे।।

गडावण–वलावण :– गवरी का समापन गडावण–वलावण कहलाता है। गडावण के दिन गवरी के कलाकार गांव के कुम्हार के पास जाकर मिट्टी के हाथी पर विराजित गौरज्या माता की मूर्ति बनवाते है। मूर्ति को सभी गाजे–बाजे के साथ माताजी के मंदिर में लाते है। रातभर गवरी खेली जाती है। अगले दिन गांव के सभी जाति के लोग मिलकर गौरज्या माता की यात्रा निकालते है और मिट्टी के हाथी पर विराजित गौरज्या माता की मूर्ति को बहते पानी में विसर्जित करते है जिसे वलावण कहते है। विसर्जन के बाद पेड़ो की रखवाली का संदेश देने के लिए 'बड़लिया हिंदवा' खेला जाता है।

संदर्भ :–

– भानावत डॉ. महेन्द्र ''राजस्थान के लोकनाट्य परम्परा'', भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर 1970

– भानावत डॉ. महेन्द्र ''राजस्थान के लोकनाट्य गवरी उद्भव एवं विकास'', भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर 1970

– जुगनू डॉ. श्रीकृष्ण ''गवरी महत्वपूर्ण नृत्त विरासत, 12 अगस्त 2025

– मीणा जगदीश चन्द्र ''भील जनजाति का सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन'', हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर

– जाट मोहन लाल ''दक्षिण राजस्थान की जनजातीय चित्रकला'', एपेक्स पब्लिकेशन हाऊस, उदयपुर 2014

आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020 का समग्र अध्ययन



डॉ. गोपाल प्रसाद 'पाठक'
सहायक आचार्य (शिक्षा)
श्री जैन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर
(राजस्थान)– 301001
मोबा. 07217466043

(1) सारांशः लगभग 34 वर्षों के लम्बे अन्तराल के पश्चात देश में नई शिक्षा नीति लागू की गई है। इस शिक्षा नीति को बेहद उत्साहवर्धक बताया जा रहा है। यह नये भारत की कल्पना करती है जो मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण, समृद्वशाली एंव प्रगति के पथ पर अग्रेषित हो। पिछले तीन दशकों के दौरान वैश्वीकरण उदारीकरण एवं निजीकरण के कारण देश में बहुत ही तीव्र गति से परिवर्तन हुए है। कोई भी क्षेत्र इन परिवर्तनों से अछूता नहीं रह गया है। चाहे वह विज्ञान, तकनीकी, कृषि उधोग या स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, सभी क्षेत्रों के परिवर्तन किसी न किसी रूप में शिक्षा से जुडे होते हैं, क्योंकि शिक्षा ही परिवर्तन को वांछित दिशा प्रदान करती है एवं शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र एवं समाज में वांछित परिवर्तनों को लाया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास का आधार होती है। देश में पहली शिक्षा–नीति सन् 1968 में लाई गयी, तदुपरान्त दूसरी शिक्षा नीति सन् 1986 में लाई गयी। इसके संशोधित रूप को सन् 1992 में लागू किया गया। यह शिक्षा नीति उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाई गई। यह आधुनिकरण व समानता पर आधारित एक व्यापक शिक्षा नीति थी, घर के द्वारा शिक्षा प्राणाली में आमूलचूल परिवर्तन हुए। पिछले तीन दशकों में देश में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों को देखते हुए एक नई शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की गई। 1

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्वति, जो गीता के कर्मयोग और वेदों–उपनिषदों की प्रज्ञा पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना था। यह शिक्षा हर गांव में सुलभ थी, जो एक आत्मनिर्भर व स्वस्थ समाज की नींव रखती थी। लॉर्ड मैकाले की 1835 की शिक्षा नीति ने इस व्यवस्था को तोडने का प्रयास किया। जिसका लक्ष्य ऐसी पीढी तैयार करना था, जो दिखने में भारतीय हो पर सोच, रूचि और भाषा में अंग्रेज हो। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा को प्रांसगिक बनाने के प्रयास हुए, लेकिन अपेक्षित क्रान्तिकारी बदलाव नहीं हो पाया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था में 34 वर्षों पुरानी शिक्षा नीति, 1986 के पश्चात किया गया एक व्यापक और परिवर्तनकारी सुधार है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, बहुविषयक और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुसार बनाना है। कस्तूरी रंगन समिति की सिफारिशों पर आधारित यह नीति स्कूली शिक्षा के 10+2 मॉडल में परिवर्तन कर 5+3+3+4 संरचना अपनाती है, जिससे सीखने की प्रक्रिया बच्चों के संज्ञानात्मक विकास चरणों के अनुसार हो सके और प्रारम्भिक वर्षों की असमानताओं को कम किया जा सके।

नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत 3 वर्ष से 18 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के अन्तर्गत रखा गया है। 2

अतः प्रस्तुत शोध आलेख में आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020 के समग्र अध्ययन को जानने का प्रयास किया गया है।

(2) मुख्य शब्दावलीः– आज, वर्तमान, परिप्रेक्ष्य, राष्ट्रीय शिक्ष नीति, समग्र, अध्ययन।

(3) प्रस्तावनाः नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की एक विशेषता यह भी है कि इसके तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात को 100 प्रतिशत लाने का लक्ष्य रखा गया है जिसके अन्तर्गत शिक्षा क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है। इसी के साथ मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय का नाम भी परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है जिससे शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार की प्राथमिकता परिलक्षित होती है। इसमें इस लक्ष्य का भी विशेष ध्यान रखा गया है कि प्राथमिक शिक्षा मातृ भाषा में होनी चाहिए। इस दृष्टि से पॉचवी कक्षा तक की शिक्षा में मातृ भाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही कक्षा–6 और आगे की शिक्षा के लिये मातृ भाषा को प्राथमिकता देने का भी सुझाव दिया गया है। देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों के लिये भारतीय उच्च शिक्षा परिष दनामक एक एकल नियामक की परिकल्पना की गई है। वस्तुतः शिक्षा नीति में इस परिवर्तन का निर्णय बहुत पहले लिया गया था, लेकिन इस बार 2020 में इसे जारी किया गया और बहुत अच्छा परिवर्तन है। इस नीति में यह भी उल्लेखनीय है कि संगीत, खेल, योग आदि को सहायक पाठ्यक्रम या अतिरिक्त पाठ्यक्रम की बजाय मुख्य पाठ्यक्रम में ही जोडा जाएगा। शिक्षा तंत्र पर सकल घरेलू उत्पाद का कुल वर्ततान 4.43 प्रतिशत से बढाकर 6 प्रतिशत खर्च करने का लक्ष्य है। इस नीति में एमः फिल0 की डिग्री को समाप्त करने का भी प्रस्ताव किया गया है। अब अनुसंधान में जाने के लिए तीन साल के स्नातक डिग्री के बाद एक साल स्नातकोत्तर करके पी.एच.डी. में प्रवेश लिया जा सकता है। इस नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर भी विशेष बल दिया गया है। व्यापक सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और सभी शिक्षा कार्यक्रमों को विश्वविद्यालयों या कॉलेजों के स्तर पर शामिल करने की सिफारिश की गई है। प्राईवेट स्कूलों में मनमाने ढंग से फीस रखने और बढाने को भी रोकने का प्रावधान किया गया है। पहले समूह के अनुसार विषय चुने जाते थे, किन्तु अब उसमें भी बदलाव किया गया है। जैसे जो छात्र इंजीनियरिंग कर रहे हैं वो चाहें तो संगीत आदि को भी अपने विषयों के साथ पढ सकते हैं। नेशनल साइंस फांउडेशन के तर्ज पर नेशनल रिसर्च फांउडेशन बनाई जाएगी जिससे विज्ञान के साथ सामाजिक विज्ञान को भी शामिल किया जायेगा। इस शिक्षा नीति में पहली और दूसरी कक्षा में गणित और भाषा एवं चौथी और पांचवी कक्षा के बालकों के लेखन पर जोर देने की बात कही गई है। स्कूलों में 10+2 फॉर्मेट के स्थान पर 5+3+3+4 फॉर्मेट को शामिल किया गया है। इसके अन्तर्गत पहले पॉच साल में प्री–प्राइमरी स्कूल के तीन साल और कक्षा एक और कक्षा दो सहित फांउडेशन स्टेज शामिल होंगे। पहले जहां सरकारी स्कूल कक्षा एक से शुरू होती थी वहीं अब तीन साल के प्री–प्राइमरी के बाद कक्षा एक शुरू होगी। इसके बाद कक्षा 3+–5 के तीन साल शामिल हैं। इसके बाद तीन साल का मिडिल स्टेज आएगा, यानि कक्षा 6 से 8 तक की कक्षा होगी। तदुपरान्त कक्षा 9 से 12वीं तक चौथी स्टेज 4 साल की होगी। पहले जहॉ 11वीं कक्षा से विषय चुनने की आजादी थी वहीं अब 9वीं कक्षा से रहेगी। शिक्षण के माध्यम के रूप में पहली से पॉचवीं तक मातृभाषा का इस्तेमाल किया जाएगा। इसमें रटन्त विद्या को खत्म करने की भी कोशिश की गई है। जिसको मौजूदा व्यवस्था की सबसे बडी खामी माना जाता है। यदि किसी कारणवश विद्यार्थी उच्च शिक्षा के बीच में ही कोर्स छोड कर चले जाते है, तो ऐसा करने पर अब तक उन्हें कुछ नहीं मिलता था। किन्तु अब नई शिक्षा नीति में पहले वर्ष में कोर्स को छोडने पर प्रमाण–पत्र, दूसरे वर्ष में छोडने पर डिप्लोमा एवं अंतिम वर्ष पर छोडने पर डिग्री देने का प्रावधान किया गया है। इस शिक्षा नीति का समालोचनात्मकता का क्रम जारी है। आवश्यकता इस बात की है शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों की व्यापक प्रतिक्रियाओं के दृष्टिगत इसके प्रत्येक बिन्दु पर सकारात्मक मंथन किया जाए ताकि सकारात्मकता का मार्ग प्रशस्त हो। 3

(4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के उद्देश्य :

(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमता के विकास पर जोर देती है।

(2) भारत को वैश्विक स्तर पर शैक्षिक रूप से महाशक्ति बनाना तथा भारत में शिक्षा का सार्वभौमीकरण करके शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने पर बल देती है।

(3) बच्चों को भारतीय संस्कृति के आदर्श मूल्यों से जोडने पर बल देती है।

(4) बच्चों को अनुशासन सिखाने पर जोर देती है।

(5) शिक्षा को लचीला बनाने पर बल देती है।

(6) शिक्षा प्रणाली को निष्पक्ष एवं पारदर्शी बनाने पर जोर देती है।

(7) बच्चों की सोच को सृजनात्मक बनाने पर बल देती है।

(8) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विकसित करने पर बल देती है।

(9) शोध पर ज्यादा ध्यान देने पर बल देती है।

(10) एक साथ अनेक भाषाओं के फोकस रखने पर जोर देती है।

(5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ:

(1) नई संरचना (5+3+3+4 प्रणाली)– पुरानी 10 + 2 शिक्षा प्रणाली को समाप्त कर अब 5 +3 +3 +4 का नया ढॉचा लागू किया गया है। 5 वर्ष आधारभूत चरण, 3 वर्ष प्रारम्भिक चरण, 3 वर्ष मध्य चरण और 4 वर्ष माध्यमिक चरण ।

(2) मातृ भाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा – नीति के अनुसार कक्षा 5 तक शिक्षण का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होगी। इससे छात्रों में समझने की क्षमता, सोचने की शक्ति और सीखने की रूचि बढेगी।

(3) बहुविषयक शिक्षाः – अब छात्र किसी भी विषय संयोजन का चुनाव कर सकता है। कला, विज्ञान, वाणिज्य के बीच की सीमाएँ समाप्त कर दी गई है। इससे छात्र अपनी रूचि के अनुसार अध्ययन कर सकेगा।

(4) कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा पर बल – कक्षा 6 से ही छात्रों को व्यावसायिक कौशल जैसे– बढईगिरी, खेती, कोडिंग, हस्तशिल्प आदि की शिक्षा दी जाएगी। इससे विद्यार्थी आत्म निर्भर बनेंगे और रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

(5) उच्च शिक्षा में सुधार– चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम में बहु–प्रवेश एंव बहिर्जगन प्रणाली लागू की गई है। उच्च शिक्षा आयोग की स्थापना का प्रस्ताव है, जो गुणवत्ता और मानकों का पर्यवेक्षण करेगा। अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान बनाया जाएगा।

(6) प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षाः– डिजिटल माध्यमों, ऑन लाइन शिक्षण और तकनीकी नवाचारों का व्यापक उपयोग शिक्षा में किया जाएगा। इससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की असमानता कम होगी। 4

(6) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख बिन्दुः नई शिक्षा नीति एक व्यापक शिक्षा नीति है। इसमें शिक्षा के सभी स्तरों में आमूल–चूल परिवर्तनों के लिए प्रावधान किया गया है।

स्कूली शिक्षा– स्कूली शिक्षा, शिक्षा प्रणाली का आधार होती है। यह बालक के विकास की नींव तैयार करती है। नई शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा में व्यापक परिवर्तन किये गये है।

शिक्षा की संरचना – नई शिक्षा नीति में वर्तमान की वर्षों से चली आ रही 10+2 शिक्षा संरचना को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 की एक नई व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात की गई है। इसमें शिक्षा को चार अवस्थाओं में विभाजित किया गया है।

(1) बुनियादी फाउण्डेशन स्टेजः– इसकी समयावधि 5 वर्ष रखी गई है। इसमें मल्टीलेवल प्ले। एक्टिविटी आधारित अधिगम की बात की गई है। प्रथम तीन वर्षों को प्री–स्कूल या बालवाटिका का नाम दिया गया है।

(2) प्रीपरेटरी स्टेज :– इसकी समयावधि 3 वर्ष है। इसमें प्ले, डिस्कवरी और एक्टिविटी आधारित अन्तः कियात्मक कक्षा –कक्ष अधिगम की बात की गई है।

(3) मिडिल स्टेज– इसकी समयावधि 3 वर्ष है। इसमें विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान व मानविकी में

अनुभवजन्य अधिगम का प्रावधान किया गया है।

(4) सेकण्डरी स्टेजः— इस अवस्था की समयावधि 14 वर्ष है। इसमें बहुविषयक अध्ययन व्यापक, समालोची सोच के साथ विषयों के चयन में लचीलापन व छात्र की रूचि के विषयों की बात की गई है।

मातृ भाषा में शिक्षा— नई शिक्षा नीति में कक्षा 5 तक छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है। मातृ भाषा में सम्प्रेषण अधिक प्रभावी होता है व छात्र ज्ञान को सरलता से ग्रहण कर लेते हैं।

कक्षा 6 से 8 तक व्यावसायिक शिल्प— शिक्षानीति में छात्र किसी कारणवश आगे की पढाई नहीं कर सकते, उनके लिए कक्षा 6 से व्यावसायिक कौशल के प्रशिक्षण का प्रावधान किया गया है, जिसमें आधुनिकतम कोडिंग के प्रशिक्षण को भी शामिल किया गया है।

शिक्षा का अधिकार — नई शिक्षा नीति में शिक्षा के अधिकार को 14 वर्ष से बढाकर माध्यमिक स्तर तक सभी के लिए शिक्षा का लक्ष्य रखा गया है। सन् 2030 तक 18 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए मुफत और अनिवार्य स्कूली शिक्षा होगी।

उच्च शिक्षा— विश्व में सबसे अधिक युवा संसाधन भारत में ही है। अनेक वर्षों से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में महती सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। नई शिक्षा नीति में उस आवश्यकता के मद्देनजर कई तरह के बदलाव की बात की गई है।

(1) लचीलापन— वर्तमान व्यवस्था में ग्रेजुएशन प्रोग्राम में छात्र यदि किन्हीं कारणों से पढाई छोडता है तो सहरा परिश्रम, धन तथा समय व्यर्थ हो जाता है। अब एक वर्ष में सर्टिफिकेट, 2 वर्ष में डिप्लोमा और 3 वर्ष में बैचलर डिग्री का प्रावधान किया गया है। शिक्षा नीति में 4 वर्षीय बैचलर बिद रिसर्च डिग्री का प्रावधान है जो आगे मास्टर्स या रिसर्च करने वालों के लिए आवश्यक है। छात्र एक या दो वर्ष छोडने के बाद फिर से बैचलर प्रोग्राम ज्वाइन कर सकता है और अपना कोर्स पूर्ण कर सकता है। मल्टी एग्जिट व मल्टी एन्ट्री नई शिक्षा नीति की विशेषता है।

(2) बहुविषयक उच्च संस्थान— देश में युवाओं की बडी संख्या का रचनात्मक उपयोग करने के लिए उच्च शिक्षा में 2035 तक 35 करोड नई सीटें जोडी जायेंगी। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को भटकना ना पडे इसके लिए 2030 तक लगभग हर जिले में कम से कम एक बहुविषयक वृहद उच्च शिक्षा संस्थान खोलने की बात की गई है।

(3) एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स— नई शिक्षा नीति में डिजिटल क्रेडिट बैंक की स्थापना एक अहम बिन्दु है। इसके द्वारा किसी प्रोग्राम या संस्थान में प्राप्त क्रेडिट्स को दूसरी जगह स्थानान्तरित किया जायेगा, यह किसी कारणवश संस्थान बदलने वाले छात्रों के लिए उपयोगी होगा।

(4) भारतीय उच्च शिक्षा आयोग— नई शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा में एकरूपता लाने व समग्र एकीकृत लक्ष्य निर्धारण हेतु एक एकल नियामक संस्था भारतीय उच्च शिक्षा आयोग के गठन का प्रावधान किया गया है। इसके तहत चार अलग— अलग स्वायत्त बॉडी, गुणवत्ता, नियमन, अनुदान और मान्यता के कार्य को देखेगी।

(5) नेशनल रिसर्च फाउंडेशनः पिछले कुछ वर्षों में अनुसंधान के क्षेत्र में नवाचार की कमी को देखते हुए नेशनल रिसर्च फाउंडेशन के गठन का प्रावधान है। इसके द्वारा शोध संस्कृति व क्षमता बढाने का लक्ष्य रखा गया है।

(6) सम्बद्वता की नई व्यवस्थाः— शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा की वर्तमान प्रणाली में भी सुधार की बात की गई है। इसके तहत धीरे—धीरे महाविद्यालयों के विश्वविद्यालय से सम्बद्व होने की प्रणाली को खत्म करके उन्हें डिग्री प्रदान करने वाले स्वायत संस्थानों को बनाया जायेगा अगले 15 वर्ष बाद कॉलेज या तो स्वायत होगा या किसी विश्वविद्यालय के अधीन होगा।

(7) शिक्षक—शिक्षाः — शिक्षा नीति में शिक्षकों की गुणवत्ता बढाने का भी प्रावधान किय गया है। 2022 तक राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद को नेशनल प्रोफेशनल स्टैंडर्ड फोर टीचर्स के लिए समान मानक तैयार करने का दायित्व

सौंपा गया है। 2030 तक सभी बहुआयामी कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षकों को पठन–पाठन कोर्स को अपग्रेड करना होगा। बी.एड.की 2 वर्षीय डिग्री 4 वर्ष बैचलर प्रोग्राम करने वाले छात्रों को, एक वर्षीय डिग्री पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों को और 4 वर्षीय इन्टीग्रेटेड बी.एड. डिग्री 12वीं वाले छात्रों को मिल सकेगी। 5

(7) नई शिक्षा नीति 2020 – देश की शिक्षा को नई दिशा प्रदान करने के लिए नई शिक्षा नीति में शिक्षा के सभी स्तरों को ध्यान में रखा गया है। शिक्षा की नई संरचना 5+3+3+4 स्कूली शिक्षा के लिए एक महत्वूपर्ण कदम है। कक्षा 5 तक मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधान बेहद सराहनीय निर्णय है। यह रटने की प्रवृत्ति को कम करके छात्रों में विभिन्न सम्प्रत्ययों के विकास में सहायक होगा। विषयों के चयन में लचीलापन होने से छात्र अपनी रूचि के विषयों को पढ सकेंगे। कक्षा 6 से 8 तक किसी व्यावसायिक शिल्प में प्रशिक्षण छात्रों को आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी बनाने में सहायक होगा। 18 वर्ष तक के बालकों के लिए 2030 तक मुफत एवं अनिवार्य शिक्षा आने वाले समय में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा व माध यमिक स्तर 100 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात को प्राप्त करने में सहायक होगा। उच्च शिक्षा में बैंचलर प्रोग्राम में मल्टी एग्जिट, मल्टी एन्ट्री एवं एक वर्षीय सर्टिफिकट, दो वर्षीय डिप्लोमा, तीन वर्षीय डिग्री, चार वर्षीय बैचलर बिद रिसर्च से छात्रों को आगे बढने के लिए एक दिशा–निर्देश प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा संस्थानों को स्वायत्ता मिलने पर वे अपनी गुणवत्ता में वृद्वि कर सकेंगे और विश्वविद्यालयों पर भी अतिरिक्त बोझ कम होगा। उच्च शिक्षा में एकरूपता लाने के लिए भारत उच्च शिक्षा आयोग का गठन भी एक महत्वपूर्ण कदम है। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन अनुसंधान के क्षेत्र में नवाचार को प्रेरित करेगा व शोध की गुणवत्ता को बढाने में सहायक होगा।

(8) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : सम्भावनाओं और चुनौतियों का द्वंद्व– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) ने भारत की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया है। हालांकि किसी भी बडे परिवर्तन को धरातल पर उतारने में कठिनाईयॉ आती है। एनईपी 2020 के सामने मौजूद प्रमुख चुनौतियॉ निम्नलिखित है।

(1) कार्यान्वयन की जटिलता – भारत की शिक्षा प्रणाली अत्यन्त विशाल है। लाखों विद्यालय, कॉलेज और विश्वविद्यालयों के साथ इस व्यापक ढॉचे में एनईपी 2020 को समानरूप से लागू करना अत्यन्त कठिन है। हर राज्य की अपनी भाषाऍ, संसाधन और परिस्थितियॉ है जिनसे नीति के समान रूप से क्रियान्वयन में बाधाऍ आती है।

(2) वित्तीय संसाधनों की कमी – एनईपी 2020 के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता है। नई इमारतें बनाना, मौजूदा बुनियादी ढॉचे का उन्नयन करना, डिजीटल संसाधन उपलब्ध कराना, शिक्षकों का प्रशिक्षण और नई शिक्षण सामग्री तैयार करना, यह सब एक विशाल बजट का प्रावधान करता है। सरकार ने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 6 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करने का लक्ष्य रखा है। लेकिन वर्तमान में यह ऑकडा लगभग 3 प्रतिशत से 3.5 प्रतिशत तक ही सीमित है। नई। संरचना, शिक्षक प्रशिक्षण तकनीकी सामग्री और डिजिटल शिक्षा के लिए बडे निवेश की आवश्यकता है जो एक बडी चुनौती है।

(3) प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी– नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों को नई शिक्षण पद्वतियों और बहुविषयक शिक्षा के लिए तैयार करना आवश्यक है। लेकिन देश में प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या अभी भी पर्याप्त नहीं है।

(4) भाषा की बाधा– मातृभाषा में शिक्षा देने की सिफारिश एक सराहनीय कदम है लेकिन इसके कार्यान्वयन में गंभीर चुनौतियॉ है। बहुभाषी देश होने के कारण हर क्षेत्रीय भाषा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षक तैयार करना एक कठिन कार्य है। माता–पिता की अंग्रेजी माध्यम के प्रति अधिक रूचि भी एक बडी रूकावट है। एक ही राज्य में कई भाषाऍ बोली जाती हैं, जिससे पाठ्यपुस्तकों की तैयारी और शिक्षकों की

नियुक्ति एक चुनौती बन जाती है।

(5) उच्च शिक्षा में संरचनात्मक परिवर्तन की जटिलता– विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में 4 वर्षीय स्नातक कार्यक्रम बहुप्रवेश/बहिर्गमन प्रणाली और स्वायत्ता के प्रावधानों को लागू करने के लिए बडे स्तर पर प्राथमिक बदलावों की आवश्यकता है, जो समय–साध्य और कठिन है।

(6) डिजिटल विभाजन– एनईपी 2020 डिजिटल शिक्षा पर बहुत जोर देती है, लेकिन देश के ग्रामीण और दूर–दराज के इलाकों में इन्टरनेट की पहुॅच, स्मार्टफोन और कम्प्यूटर जैसे उपकरणों की उपलब्धता एक बडी समस्या है।

(7) बोर्ड परीक्षाओं और मूल्यांकन में सुधार – एनईपी 2020 बोर्ड परीक्षाओं के दबाव को कम करने और मुल्यांकन को रटंत विद्या से हटाकर समग्र विकास की ओर ले जाने की बात करती है। लेकिन इस नए मूल्यांकन ढॉचे को डिजाइन करना और उसे पूरे देश में निष्पक्षता से लागू करना एक जटिल कार्य है।

(8) केन्द्र और राज्यों के बीच समन्वय का अभाव– शिक्षा एक समवर्ती विषय है। अतः इसके कार्यान्वयन में केन्द्र और राज्य दोनों की भूमिका होती है। अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग राजनीतिक दलों की सरकारें है, जिनकी एनईपी 2020 के प्रति अपनी–अपनी राय और प्राथमिकताएॅ है। कुछ राज्यों ने इसका विरोध भी किया है। 6

(9) आगे की राह : एनईपी 2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए रणनीतिः

(1) चरणबद्व और लचीला कार्यान्वयन– एनईपी 2020 को एक साथ पूरे देश में लागू करने का प्रयास नहीं होना चाहिए इसके बजाए, "एक फेज्ड अप्रोच" अपनाई जानी चाहिए। विभिन्न राज्यों में अलग–अलग स्कूलों और कॉलेजों को चुनकर पायलट प्रोजेक्ट शुरू किए जाएॅ। इन परियोजनाओं से सीखे गए सबक का उपयोग पूरे सिस्टम में सुधार के लिए किया जा सकता है। केन्द्र सरकार को एक रूपरेखा प्रदान करनी चाहिए। लेकिन राज्यों को अपनी स्थानीय आवश्यकताओं, भाषाओं और संसाधनों के अनुसार नीति को लागू करने की स्वायत्ता दी जानी चाहिए।

(2) सार्वजनिक–निजी भागीदारी (पीपीपी) को बढ़ावा– बुनियादी ढॉचे के विकास के लिए स्कूलों और कॉलेजों में डिजिटल लैब, लाइब्रेरी और कौशल विकास केन्द्र बनाने के लिए निजी क्षेत्र की मद्द ली जा सकती है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए उद्योग जगत के साथ साझेदारी करके इंटर्नशिप, अप्रेंटिस शिप और उद्योग–अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं। इससे शिक्षा को रोजगार से सीधा जोडा जा सकेगा।

(3) शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास : लक्ष्य आधारित प्रशिक्षण – शिक्षक– प्रशिक्षण को एक निरन्तर प्रकिया बनाना होगा। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से बडे पैमाने पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा सकते है। अनुभवी शिक्षक, नए शिक्षकों का मार्गदर्शन कर सकते है। शिक्षण को एक आकर्षक कैरियर विकल्प बनाने के लिए उनके वेतन और कार्य–स्थितियों में सुधार करना भी आवश्यक है।

(4) तकनीकी का रचनात्मक उपयोग – सरकार को ग्रामीण और दूर–दराज के इलाकों में इंटरनेट की पहुंच बढाने पर जोर देना चाहिए। साथ ही कम लागत वाले डिजिटल डिवाइस और ऑफलाइन उपयोग हो सकने वाली श्शैक्षिक सामग्री विकसित करनी चाहिए स्वयं ूलउ) जैसे प्लेट फार्म को मजबूत करना, जिससे देशरज भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल कोर्सेज का निर्माण और प्रसार किया जाए, ताकि प्रत्येक छात्र तक अच्छी शिक्षा पहुंच सके।

(5) जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी– अभिभावकों को नई शिक्षा पद्वति के फायदों, बहु–विषयक शिक्षा के महत्व और व्यवसायिक प्रशिक्षण के अवसरों के बारे में समझाना होगा। इसके लिए स्कूल स्तर पर वर्कशॉप और सेमिनार आयोजित किए जा सकते हैं। स्थानीय प्रसिद्व व्यक्तित्व, पूर्व छात्र और समाज के उच्च शिक्षित लोग इस शैक्षिक परिवर्तन के अग्रदूत बन सकते है।

(6) मजबूत निगरानी और मूल्याकंन तंत्र– एनईपी 2020 के कार्यान्वयन की प्रगति की नियमित रूप से निगरानी करने के लिए एक स्वतंत्र और डेटा आधारित तंत्र विकसित करना होगा। सफलता को मापने के लिए स्पष्ट संकेतक तय किए जाएं। जैसे– स्कूल नामांकन दर, ड्रॉप आउट दर, शिक्षण के स्तर में सुधार, व्यावसायिक शिक्षा लेने वाले छात्रों की संख्या आदि। उद्देशित लक्ष्यों के प्राप्ति वर्ष में प्रगति की व्यापक समीक्षा विभिन्न समागम के माध्यम से करना। जैसे– अखिल भारतीय शिक्षा समागम – 2025। 7

(10) उपसंहार– प्रस्तुत शोध आलेख को लेखक द्वारा किए गए शोध को आधार बनाकर लिखा गया है, जो दर्शाता है कि शिक्षा में बहुत सारे क्रांतिकारी परिवर्तनों के साथ आई नवीन शिक्षा नीति 2020 में चुनौतियों की भी कमी नहीं है। सबसे बडी चुनौती इसके कियान्वयन की है। भारत एक ऐसा देश है, जिसमें क्षेत्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक व आर्थिक विषमताऍं वृहद स्तर पर विधमान है। ऐसे में एक समान शिक्षा प्रणाली को लागू करना बहुत ही कठिन कार्य है। 5+3+3+4 शिक्षा संरचना में बुनियादी स्तर पर 3 वर्ष आंगनबाडी का देना एक चुनौती है क्योंकि देश में आंगनबाडियों की दशा से सभी परिचित है। उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकांश युवा देश में बेरोजगार हैं, उच्च शिक्षा के स्तर में बहुत गिरावट आ चुकी है। इसको सुधारना सभी युवाओं को रोजगार देना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। विषयों में अत्यधिक लचीलापन व अधिक विकल्प होने पर छात्र भ्रमित भी हो सकत हैं। शिक्षक शिक्षा में सुधार लाना एक कठिन कार्य है क्यों कि बहुत सारे शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान गुणवत्ता पर ध्यान न देकर सिर्फ डिग्रियॉ बॉटने का कार्य कर रहे हैं, उन पर पुनर्विचार करना और पूरी व्यवस्था में सुधार लाना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है।

बहुत सारे अवसर व चुनौतियों के साथ नई शिक्षा नीति 2020 एक ऐतिहासिक कदम है, जो स्वतंत्रता के पहले से व्याप्त मैंकालेकरण का अन्त करने में सहायक होगी। परिवर्तन संसार का नियम है। विश्व व देश में तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों के साथ ताल–मेल बनाने के लिए यह शिक्षा नीति निश्चित ही प्रशिक्षित युवा संस्थानों को तैयार करने में सहायक होगी। कक्षा 6 से कोडिंग जैसे आधुनिकतम व्यावसायिक प्रशिक्षण शुरू करना आज के समय की आवश्यकता है। यदि नई शिक्षा नीति को इसी तरह से लागू किया जाता है, तो भविष्य में इसके दूरगामी परिणाम प्राप्त होंगे और निश्चित ही यह आने वाले समय में भारत को एक समृद्वशाली राष्ट्र बनाने में सहायक होगी।8

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में मातृभाषा शिक्षा पर जोर, भारत में बच्चों के सीखने के अनुभव को उत्कृष्ट बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। सराक्त संज्ञानात्मक और संचार कौशल को बढावा देकर, सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करके और समावेशन को प्रोत्साहन देकर, यह नीति यह सुनिश्चित करती है कि भारत के विधिक भाषाई समुदाय न केवल शैक्षणिक रूप से कुशल हो, बल्कि सामाजिक रूप से सशक्त एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्व भी हो। क्षेत्रीय भाषाओं में तकनीकी शिक्षा को बढावा, द्विभाषी शिक्षण दृष्टिकोण एवं पाठ्य सामग्री का अनुवाद आदि की पहल, भारत में प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ, प्रभावी तथा समावेशी बनाने की प्रतिबद्वता को रेखांकित करती है। 9

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) शालिनी सिंह– नवीन शिक्षा नीति 2020: अवसर एवं चुनौतियां, समाज विज्ञान शोध पत्रिका, अक्टूबर 2020 से मार्च 2021, वॉल्यूम –02, नम्बर XL VIII पृष्ठ सं.– 101–102।
(2) रूपाली वर्मा– देश की प्रगति में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका, जनवरी– 2026, पृष्ठ संख्या– 111 ।
(3) डॉ. अशोक कुमार रूस्तगी– भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, समाज विज्ञान शोध पत्रिका, अक्टूबर 2020 से मार्च 2021, वॉल्यूम 02, नम्बर– XL VIII, पृष्ठ संख्या

9–10 ।

(4) रूपाली वर्मा– देश की प्रगति में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका,जनवरी 2026 पृष्ठ संख्या– 111 ।

(5) शालिनी सिंह – नवीन शिक्षा नीति 2020, अवसर एवं चुनौतियां, समाज विज्ञान शोध पत्रिका, अलवर अक्टूबर 2020 से मार्च 2021, वॉल्यूम–02, नम्बर– XL VII, पृष्ठ संख्या 102, 104 ।

(6) रूपाली वर्मा– देश की प्रगति में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका,जनवरी 2026, पृष्ठ संख्या– 112 ।

(7) रूपाली वर्मा– देश की प्रगति में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका,जनवरी 2026, पृष्ठ संख्या– 112, 121 ।

(8) शालिनी सिंह – नवीन शिक्षा नीति 2020, अवसर एवं चुनौतियां, समाज विज्ञान शोध पत्रिका, अलवरअक्टूबर 2020 से मार्च 2021, वॉल्यूम–02, नम्बर– ग्स् टप्प्ए पृष्ठ संख्या 105 ।

(9) रूपाली वर्मा– देश की प्रगति में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका,जनवरी 2026, पृष्ठ संख्या– 121 ।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था भारत में शिक्षा के क्षेत्र में आए परिवर्तन और उसकी वर्तमान दिशा



अखिलेश शर्मा
(सहायक आचार्य)
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी
मानव हितकारी संघ, राणावास



अणु प्रकाश
(सहायक आचार्य)
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी
मानव हितकारी संघ, राणावास

प्रस्तावना :–

शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र के विकास की आधारशिला होती है। यह केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक विकास का महत्वपूर्ण साधन भी है। भारत में शिक्षा व्यवस्था समय के साथ निरंतर परिवर्तनशील रही है। प्राचीन काल की गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक डिजिटल और तकनीकी शिक्षा तक भारत की शिक्षा व्यवस्था ने अनेक बदलाव देखे हैं। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, विज्ञान एवं तकनीकी विकास, और सामाजिक परिवर्तन के कारण शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य और पद्धति में व्यापक परिवर्तन आए हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य केवल रोजगार प्रदान करना ही नहीं, बल्कि एक जागरूक, जिम्मेदार और कुशल नागरिक का निर्माण करना भी है। प्राचीन और पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था :– भारत में प्राचीन काल में शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः गुरुकुल प्रणाली पर आधारित था। इस प्रणाली में विद्यार्थी अपने गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नैतिकता, आध्यात्मिकता और जीवन मूल्यों का विकास करना था। विद्यार्थियों को वेद, उपनिषद, दर्शन, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र आदि विषयों का ज्ञान दिया जाता था।

मध्यकाल में शिक्षा का स्वरूप कुछ हद तक बदल गया और मदरसे तथा मकतब शिक्षा के प्रमुख केंद्र बने। इन संस्थानों में धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ भाषा और साहित्य की शिक्षा भी दी जाती थी। हालांकि इस काल में शिक्षा का प्रसार सीमित वर्ग तक ही था।

औपनिवेशिक काल में शिक्षा व्यवस्था :– ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। अंग्रेजों ने पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को भारत में लागू किया। अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया गया और आधुनिक विषयों जैसे विज्ञान, गणित, इतिहास और भूगोल को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

इस काल में कई विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई और शिक्षा का प्रसार धीरे–धीरे बढ़ने लगा। हालांकि ब्रिटिश शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों के लिए क्लर्क और कर्मचारी तैयार करना था। फिर भी इस शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज में आधुनिक विचारधाराओं, राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधार आंदोलनों को जन्म दिया।

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा में परिवर्तन :– स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधारों की शुरुआत की। संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकारों और सामाजिक न्याय से जोड़ा गया। विभिन्न आयोगों और नीतियों के माध्यम से शिक्षा के विस्तार और गुणवत्ता सुधार पर जोर दिया गया।

सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण, उच्च शिक्षा के विस्तार और तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए कई योजनाएँ शुरू कीं। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई। इसके साथ ही अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षा में विशेष प्रावधान किए गए, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी बन सकी।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएँ :– वर्तमान समय में भारत की शिक्षा व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन तकनीकी और डिजिटल शिक्षा का विकास है। इंटरनेट, स्मार्ट कक्षाओं,

ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षा अधिक सुलभ और प्रभावी बन गई है।

इसके अलावा शिक्षा में कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अब शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान और रोजगारोन्मुखी शिक्षा को भी महत्व दिया जा रहा है।

शिक्षा में समानता और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाएँ जैसे सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना और डिजिटल शिक्षा कार्यक्रम लागू किए गए हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

शिक्षा के क्षेत्र में आए प्रमुख परिवर्तन :–

भारत की शिक्षा व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। पहला परिवर्तन शिक्षा के प्रसार में वृद्धि है। आज पहले की तुलना में अधिक लोग विद्यालय और विश्वविद्यालय तक पहुँच पा रहे हैं।

दूसरा परिवर्तन शिक्षा के स्वरूप में आया है। अब शिक्षा अधिक व्यावहारिक, वैज्ञानिक और तकनीकी बन गई है। कंप्यूटर शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विज्ञान और अन्य आधुनिक विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है।

तीसरा परिवर्तन शिक्षण पद्धति में आया है। पहले शिक्षा मुख्यतः रटने पर आधारित थी, जबकि अब छात्रों की रचनात्मकता, समस्या–समाधान क्षमता और आलोचनात्मक सोच को विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है।

वर्तमान दिशा और चुनौतियाँ :–

हालांकि भारत की शिक्षा व्यवस्था में कई सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, फिर भी कुछ चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर, शिक्षकों की कमी, संसाधनों का अभाव और उच्च शिक्षा की बढ़ती लागत जैसी समस्याएँ अभी भी सामने हैं।

इसके अलावा डिजिटल शिक्षा के विस्तार के बावजूद डिजिटल विभाजन (डिजिटल डिवाइड) भी एक बड़ी चुनौती है। कई ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के छात्रों के पास इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की पर्याप्त सुविधा नहीं है।

वर्तमान समय में शिक्षा का ध्यान बहुआयामी विकास, नवाचार, अनुसंधान और कौशल आधारित शिक्षा पर केंद्रित है। नई शिक्षा नीतियों के माध्यम से शिक्षा को अधिक लचीला, समावेशी और रोजगारोन्मुख बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

निष्कर्ष :–

भारत की शिक्षा व्यवस्था ने समय के साथ अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे हैं। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक डिजिटल और तकनीकी शिक्षा तक यह यात्रा निरंतर विकास और सुधार की प्रक्रिया रही है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि छात्रों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए सक्षम बनाना है।

हालांकि शिक्षा के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं, फिर भी गुणवत्ता, समानता और पहुंच सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। यदि शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक तकनीक, अनुसंधान और नैतिक मूल्यों के साथ संतुलित रूप से विकसित किया जाए, तो यह भारत के समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था भारत के भविष्य को सशक्त और प्रगतिशील बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

संदर्भ ग्रंथ :–

– योगेन्द्र सिंह (2000), भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास, नई दिल्ली रावत पब्लिकेशन।

– राम आहूजा (2012), भारतीय समाज, जयपुर रावत पब्लिकेशन।

– जे.सी. अग्रवाल (2014), भारत में शिक्षा का विकास और समस्याएँ, नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाउस।

– एस.पी. चौबे (2010), भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएँ, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।

– एन. जयराम (2013), समाजशास्त्र का परिचय, नई दिल्ली मैकमिलन पब्लिशर्स।

– भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020, नई दिल्ली।

भारत में प्रौढ शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष सन्दर्भ में



डॉ. शिवानी
निवास – शिवपुरा
कोटा (राज.)

भारत देश प्राचीन काल से ही अपने अपने ज्ञान और शिक्षा के लिए जाना जाता रहा है जब विश्व में विभिन्न जगहों पर सभ्यताए जन्म ले रही थी तब भारत में विभिन्न वेद पुराण भाष्य व्याकरण आदि लिखे जा रहे थें। पर धीरे धीरे स्थिति बदलती गई जागरूकता की कमी के कारण कारण हमारे देश में बहुतायत संख्या में अशिक्षित प्रौढ होना एक बिडम्बना है।

प्रौढ शिक्षा का उद्देश्य उन व्यक्तियों को पढने–लिखने के अवसर उपलब्ध कराना है जिनकी उम्र 15 साल या उससे अधिक है इस अभियान में वे सभी बच्चे युवा वयस्क प्रौढ शामिल है जो किन्ही कारणों से या तो स्कूल नहीं जा सके या फिर किन्ही कारणों से उन्हे स्कूल छोडना पडा।

प्रौढ शिक्षा मार्गदर्शिका NCERT (उडान शिक्षाकी)

प्रौढ शिक्षा या समाज शिक्षा का उद्देश्य प्रौढो को साक्षर बनाने के साथ–साथ उनकी आत्मानुभूति जागृत करना तथा उनमें नागरिकता एवं सामाजिक चेतना का विकास करना है।

शिक्षा ज्ञान कौशल में सुधार विकसित करती है। व्यक्तित्व व दृष्टिकोण को विकसित करती है

प्रौढ शिक्षा को विद्वानों ने निम्न लिखित प्रकार से परिभाषित किया है।–

गॉधी जी के अनुसार :– समाज शिक्षा जीवन के लिए शिक्षा है यह केवल साक्षरता नहीं है। इसमें सभी कुछ सम्मिलित है।

मौलाना आजाद के अनुसार:– प्रौढ शिक्षा का अर्थ वयस्कों को ही साक्षर बनाने तक सीमित नहीं होना चाहिए इसके अन्तर्गत उस शिक्षा को भी सम्मिलित कर देना चाहिए जो भारत के प्रत्येक नागरिक को लोकतान्त्रिक व्यवस्था का विवेकपूर्ण सदस्य बना दे।

स्वतन्त्रता के बाद केन्द्र सरकार ने प्रौढ षिक्षा के बारे में विचार किया जिसे समाज शिक्षा कहा गया। 1949 में इलाहबाद में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड का अधिवेशन हुआ। जिसमें अध्यक्षता कर रहे केन्द्रीय षिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने प्रौढ शिक्षा के स्थान पर समाज शिक्षा का प्रयोग किया गया।

1949 में यूनेस्कों के सहयोग से शिक्षा पर एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके तहत ग्रामीण प्रौढो के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में "जनता कॉलेज" बनाए गए।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में इसका काफी प्रसार हुआ कि 1951 में 30 प्रतिशत लोगो को साक्षर बनाने पर बल दिया गया। बहुत प्रयास के बाद भी 20 प्रतिशत लक्ष्य ही प्राप्त हो सका।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना लागू हुई तो इस क्षेत्र में अनेक षोध हुए अनेक सूचनाएं इकट्ठी की गई राज्यों के प्रौढ एवं समाज शिक्षा कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित किया गया।

शिक्षा के प्रति जागरूकता करने के लिए दूरदर्शन पर 1960 में कृषि कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। महिलाओं की समस्याओं के समापन के लिए केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद की स्थापना गई। क्योकि मूलतः

किसान व महिलाए ही सर्वाधिक निरक्षर थे। इतने प्रयास के बाद भी यह प्रगति 1961 में 24 प्रतिशत ही पहुॅची।

तृतीय पंचवर्षीय योजना में प्रौढ शिक्षा के लिए कॉलेज खोले तथा "ज्ञान सरोवर"नाम से में प्रौढो के लिए विश्वकोश भी प्रकाशित किया।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में कार्यपरक योग्यता पर बल दिया गया पढने लिखने के साथ–साथ व्यावहरिक ज्ञान अनिवार्य कर दिया।

पांचवी पंचवर्षीय योजना में 15 से 25 आयु वर्ग के निरक्षर प्रौढो के लिए अनौपचारिक शिक्षा व उससे अधिक आयु के निरक्षर प्रौढो के लिए शिक्षा कार्यक्रमों पर बल दिया गया।

छठी पंचवर्षीय योजना में सामाजिक चेतना उत्पन्न करने की प्रेरणा दी गई इसके लिए जनसंचार के साधनों के प्रयोग पर बल दिया गया। साक्षर बनाने सामाजिक चेतना जागृत करने और कार्यकुशलता बढाने पर बल दिया।

सातवी पंचवर्षीय योजना में गांवो में सतत् शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की। 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गई। प्रौढो के मन में तत्कालिक कार्यक्रमों के लिए जागरूकता पैदा की गई इसके लिए नुक्कड नाटकों समाचार पत्रों रेडियों टेलीविजन प्रसारण का सहारा लिया गया।

आठवी पंचवर्षीय योजना प्रौढ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य 15–35 आयु वर्ग के लोगो में निरक्षरता का उन्मूलन करना था। इसके लिए सम्पूर्ण साक्षरता अभियानों सामुदायिक भागीदारी और जन शिक्षण संस्थानो आदि की मदद ली गई।

नौवीं पंचवर्षीय योजना स्वतन्त्रता के 50 वर्ष से शुरू कि गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य "सामाजिक न्याय और समानता के साथ विकास था।" इसमें राज्य संसाधन केन्द्रों को अकादमिक सहायता के लिए मजबूत किया गया और जन शिक्षण संस्थान को व्यवसायिक कौशल विकास के लिए इस्तेमाल की गई है ।

दसवीं पंचवर्षीय योजना समाज के सभी वर्गो को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना और योजना अवधि के अंत तक साक्षरता दर 75 प्रतिशत तक बढाना था।

ग्यारवी पंचवर्षीय योजना(2007–12) में प्रौढ शिक्षा के "साक्षर भारत" मिशन की शुरूआत की गई जिसका मुख्य लक्ष्य 15 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं और हाशिये पर पडे समूहो को साक्षर बनाना था।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना में कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तर अमेरिकी मॉर्डन पर सामुदायिक कॉलेज स्थापित किए गए। साक्षरता के साथ साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण को जोडा गया ताकि साक्षर होने के बाद रोजगार के अवसर मिलें।

वर्तमान समय में प्रौढ शिक्षा के लिए प्रयास :– केन्द्र सरकार ने प्रौढ शिक्षा के नाम से चल रही योजना को विस्तार दिया है इसका नाम बदल कर "नव भारत साक्षरता कार्यक्रम" कर दिया है। इस योजना के तहत 15 वर्ष या उससे अधिक निरक्षर लोगों को कवर किया जाएगा। केन्द्रीय बजट 2021–22 में संसाधनों और ऑन लाइन मॉडयूल तक पहुॅच बढाने की घोषणा की गई थी। इसका उद्देश्य आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ 21 वीं सदी के नागरिकों के लिए आवश्यक अन्य घटकों जीवन कौशल, व्यवसायिक कौशल विकास और बुनियादी एवं सतत् शिक्षा को शामिल करना है –

वित्त वर्ष 2022–27 के लिए आधार भूत साक्षरता और साख्यात्मक ज्ञान का लक्ष्य ऑनलाइन अध्यापन शिक्षण और मूल्यांकन प्रणाली का उपयोग करके प्रतिवर्ष 1 करोड शिक्षार्थी को शामिल करना है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में निरक्षरों की कुल संख्या 25.76 करोड थीं। साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत हुई प्रगति के बावजूद 2009–10 और 2017– 18 के बीच 7.64 करोड व्यक्तियों को साक्षर किया जा सका ।

उल्लास– साक्षर भारत की और एक कदम उल्लास नव

भारत साक्षरता कार्यक्रम जिसे न्यू इण्डिया लिटरेसी प्रोग्राम (NILP) के नाम से भी जाता है यह कैन्द्र द्वारा प्रयोजित पहल है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है इसका उद्देश्य 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों को सशक्त बनाना है जिन्होंने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की है ताकि वे समाज में एकीकृत हो सके और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकें। इस कार्यक्रम के तहत वर्ष 2023 में 3.5 करोड 2024 में 4.34 करोड व 2025 में 6.23 करोड लोगो को भागीदारी रही। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की 2021 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की समग्र साक्षरता दर 77.70 प्रतिशत थी।

निष्कर्ष

NCERT समर्थित निकाय के साथ–साथ एक सुनियोजित ढाँचा विकसित किया जाएगा जो वयस्क शिक्षा के लिए समर्पित है और शिक्षण और सीखने के तरीके और सामग्री विशेष रूप से वयस्कों के लिए डिजाइन की जाएगी। पाठ्यक्रम में कम से कम पाँच कार्यक्रम शामिल होंगे।

1. साक्षरता और संख्यात्मकता का आधार
2. महत्वपूर्ण जीवन कौशल – इसमें वित्तीय और डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल, बाल देखभाल, स्वास्थ्य देखभाल और परिवार कल्याण शामिल होंगे
3. व्यावसायिक कौशल विकास
4. बुनियादी शिक्षा – इसमें प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक शिक्षा शामिल है
5. सतत शिक्षा – कला, संस्कृति, खेल या अन्य में पाठ्यक्रम।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रौढ़ शिक्षा लागू होने से समाज निश्चय रूप से एक नई दुनिया बन जाएगी जहाँ वे शिक्षित होकर अपने परिवार को बेहतर रास्ते पर लाना चाहते हैं। नीति द्वारा इस तरह की पहल में कोई भी नामांकन कर सकता है और लाभान्वित हो सकता है साथ ही शिक्षा का एक स्वयंसेवक हमेशा स्थानीय संगठनों के संपर्क में रह सकता है और शिक्षा प्रणाली को समर्थन दे सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, पी.डी., (2015). भारतीय शिक्षा तथा उसकी समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 359
2. मुख्योपाध्याय, श्रीधरनथ, भारतीय शिक्षा का इतिहास, आधुनिक काल, पृष्ठ 209
3. लाल बिहारी, रमन (2012). भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ सं. 520
4. पाठक, पी.डी., (2013). भारतीय शिक्षा तथा उसकी समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृष्ठ 36
5. https://readerblogs. navbharattimes.indiatimes.com/sadbhawna/after-independence-adult-education-in-india-a-vision/
6.https://hi.wikipedia.org/
7. https://www.education.gov.in/saakshar_bharat-hindi

Artificial Intelligence in Financial Reporting: Transforming Accounting Practices



Vikas Jangid
Assistant Professor
CLG Degree college, Sumerpur
M.No.7014229131
jangidofficial007@gmail.com

Abstract :-
Artificial Intelligence (AI) has emerged as a transformative force in financial reporting, reshaping traditional accounting systems and enhancing decision-making processes. The growing complexity of financial transactions, coupled with the need for real-time reporting and transparency, has driven organizations to adopt AI-based technologies. This research paper explores the role of AI in financial reporting, focusing on its applications, benefits, challenges, and future implications. It highlights how AI technologies such as machine learning, natural language processing, and robotic process automation are revolutionizing financial reporting systems. The study also examines the impact of AI on reporting quality, regulatory compliance, and organizational efficiency. While AI offers significant advantages, it also presents challenges such as data privacy concerns, ethical issues, and high implementation costs. The paper concludes that AI will play a crucial role in the future of financial reporting, but its successful adoption requires a balanced approach combining technology and human expertise.

1. Introduction

Financial reporting is a fundamental aspect of business operations, providing stakeholders with information about a company's financial performance and position. Traditionally, financial reporting has been labor-intensive, relying on manual processes, spreadsheets, and human interpretation. These methods are often time-consuming, prone to errors, and limited in their ability to handle large volumes of data.

With the advancement of digital technologies, Artificial Intelligence (AI) has emerged as a powerful tool in transforming financial reporting. AI enables automation, real-time data analysis, and predictive insights, making financial reporting more efficient and accurate.

In today's competitive and data-driven business environment, organizations require timely and reliable financial information to make strategic decisions. AI addresses this need by improving the speed, accuracy, and transparency of financial reporting systems.

2. Literature Review

Recent research highlights the growing importance of AI in accounting and financial reporting. Studies suggest that AI significantly improves financial reporting accuracy by reducing human errors and automating repetitive tasks. Researchers have found that AI-driven systems enhance transparency and reduce information asymmetry between companies and stakeholders. Another study indicates that AI technologies improve fraud detection by identifying unusual patterns in financial data. Similarly, research in the banking sector shows that AI-based reporting systems increase efficiency and reduce operational costs. However, some scholars argue that AI adoption faces

challenges such as lack of transparency (black-box models), data security risks, and regulatory uncertainties.

Overall, the literature indicates that AI has a positive impact on financial reporting, but its implementation requires careful planning and governance.

3. Research Objectives

The main objectives of this study are:

To analyze the role of AI in financial reporting

To examine the applications of AI in accounting processes

To evaluate the benefits and challenges of AI adoption

To study the impact of AI on financial reporting quality

To explore future trends in AI-based financial reportin

4. Research Methodology

This research is based on secondary data, including:

Research papers

Journals

Industry reports

Online publications

The study uses a descriptive and analytical approach to examine the role of AI in financial reporting.

5. Concept of Artificial Intelligence in Financial Reporting

Artificial Intelligence refers to computer systems that can perform tasks requiring human intelligence, such as learning, reasoning, and decision-making. In financial reporting, AI technologies include: -

5.1 Machine Learning (ML) :- Machine learning enables systems to learn from historical data and improve performance over time. It is widely used for: Forecasting financial trends , Detecting anomalies, Risk assessment

5.2 Natural Language Processing (NLP) :-

NLP allows machines to understand and generate human language. In financial reporting, it is used for: Generating financial statements, Analyzing management reports, Extracting information from documents

5.3 Robotic Process Automation (RPA) :- RPA automates repetitive tasks such as:

Data entry , Invoice processing , Reconciliation

5.4 Deep Learning :-

Deep learning models analyze complex financial data patterns and improve prediction accuracy.

6. Applications of AI in Financial Reporting

6.1 Automated Data Entry :- AI eliminates manual data entry by capturing and processing financial data automatically, reducing errors and improving efficiency.

6.2 Fraud Detection :- AI systems analyze transaction patterns to detect fraudulent activities in real time. This helps organizations prevent financial losses.

6.3 Real-Time Reporting :- AI enables continuous monitoring and reporting of financial data, allowing businesses to make timely decisions.

6.4 Predictive Analytics :- AI forecasts future financial performance based on historical data, supporting budgeting and planning.

6.5 Audit Automation :- AI enhances auditing by analyzing large datasets and identifying inconsistencies, improving audit quality.

6.6 Financial Statement Generation :- AI tools can automatically generate financial statements, reducing human effort and increasing accuracy.

7. Benefits of AI in Financial Reporting

7.1Accuracy and Reliability :-AI reduces human errors, ensuring more accurate financial reports.

7.2 Efficiency :- Automation speeds up financial processes, saving time and resources.

7.3 Cost Reduction :- AI reduces labor costs and operational expenses.

7.4 Better Decision-Making :- AI provides insights and forecasts, helping management make informed decisions.

7.5 Transparency :- AI enhances transparency by providing clear and consistent financial information.

7.6 Scalability :-AI systems can handle large volumes of data efficiently, making them suitable for growing organizations.

8. Challenges of AI in Financial Reporting

8.1 Data Security Risks :-AI systems require large datasets, increasing the risk of data breaches.

8.2 High Implementation Cost :- AI adoption requires significant investment in technology and skilled professionals.

8.3 Lack of Transparency :- AI models may act as black boxes, making it difficult to understand decision-making processes.

8.4 Ethical Issues :-AI may introduce bias or be misused, raising ethical concerns.

8.5 Regulatory Challenges :-Financial reporting must comply with strict regulations, which may not always align with AI systems.

8.6 Dependence on Technology :- Over-reliance on AI may reduce human judgment and increase risks in case of system failures.

9. Impact of AI on Financial Reporting Quality

AI improves financial reporting quality by:

Enhancing accuracy

Reducing fraud

Improving internal controls Providing real-time insights

Studies show that organizations using AI experience improved reporting reliability and stakeholder trust.

10. Case Studies

10.1 Banking Sector :- Banks use AI for fraud detection and real-time reporting, improving efficiency and security.

10.2 Corporate Sector :- Large companies use AI for automated financial reporting and predictive analytics.

10.3 Audit Firms :-Audit firms use AI tools to analyze large datasets and improve audit accuracy.

11. Future Trends in AI and Financial Reporting :-

11.1 Integration with Blockchain :-Combining AI with blockchain will enhance transparency and security.

11.2 Real-Time Auditing :- AI will enable continuous auditing, reducing the need for periodic audits.

11.3 Generative AI :- AI will automatically generate financial reports and insights.

11.4 Adoption by SMEs :- Small and medium enterprises will increasingly adopt AI tools.

12. Recommendations

Develop strong data governance policies

Ensure ethical use of AI

Provide training to employees

Maintain human oversight

Comply with regulatory requirements

13. Conclusion

Artificial Intelligence is revolutionizing financial reporting by improving efficiency, accuracy, and transparency. It enables automation, real-time reporting, and predictive analytics, making financial systems more reliable and effective.

However, challenges such as data security, ethical concerns, and regulatory issues must be addressed. Organizations should adopt a balanced approach that combines AI technology with human expertise. AI is not just a tool but a strategic asset that will shape the future of financial reporting.

References

Cui, B. (2025). Artificial Intelligence in Financial Reporting

Sibagariang, R. P. (2024). AI in Accounting Reporting

Adeyeri, T. B. (2024). Automation in Accounting

Wang, H. (2024). AI and Risk Management

Sanjiwani et al. (2024). AI Impact on Reporting Quality

KPMG Report (2024). AI in Finance

JETIR (2025). Challenges of AI

Understanding the Influence of Gamification on the Academic Achievement of Senior Secondary Students



Dr. Bharti Sharma
B.Ed.-M.Ed. Supervisor, Assistant Professor, Gyan Vihar School of Education, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur



Shishupal Raika
B.Ed.-M.Ed. (Scholar), Gyan Vihar School of Education, Suresh Gyan Vihar University
Jaipur

ABSTRACT

This study examines the influence of Gamification-both traditional and digital-on the academic achievement of senior secondary students. In today's fast-evolving educational landscape, Gamification are increasingly integrated into students' lives, with their impact on academic outcomes becoming a focal point of educational research. Utilizing a mixed-methods approach, the study involves a survey of senior secondary students, interviews with educators, and an analysis of academic performance data. The findings reveal that Gamification, when used constructively, can significantly enhance students' by fostering engagement, critical thinking, and collaborative skills. However, excessive gaming and poorly managed game-play can detract from academic focus and discipline. The research highlights the role of balanced gaming habits and educational Gamification in promoting academic achievement. Recommendations are made for educators and parents to leverage the benefits of Gamification while mitigating potential drawbacks.

This study contributes to the growing discourse on educational psychology and game-based learning, offering actionable insights for integrating Gamification into academic environments effectively.

Educational Gamification are directly linked to subjects or skills students are learning in school, making the content more engaging. They combine fun with educational value, leading to increase as students find enjoyment in activities that are directly related to their academic success (e.g., playing math or language arts Gamification).

Many educational Gamification provide instant feedback, allowing students to see their progress in real-time. This can enhance achievement, as students are driven by the desire to earn points, badges, or unlock new levels, which mimic the reward-based system often used in academic settings (e.g., grades, praise from teachers).

Keywords: Academic achievement, Game-based learning, Digital Gamification, Gamification in education.

INTRODUCTION -

Gamification have always played a significant role in human life, serving as a means of recreation, skill development, and social interaction. In the modern era, with the advent of advanced technology, Gamification have taken on new forms, ranging from traditional board Gamification and sports to sophisticated digital and online platforms. For senior secondary students, Gamification are not merely a pastime but often an integral part of their daily lives, offering both entertainment and cognitive engagement. This evolving landscape of gaming raises important questions about its impact on students' academic performance.

Gamification, with their ability to create immersive, goal-oriented, and rewarding experiences, have the potential to academic achievement positively. Well-designed Gamification can foster problem-solving skills, critical thinking, and perseverance-qualities that are equally valuable in academics. Moreover, educational Gamification, specifically developed to align with curriculum goals, have demonstrated the ability to make learning engaging, interactive, and effective.

However, the influence of Gamification is not universally positive. The growing popularity of digital gaming has also introduced challenges, such as excessive screen time, addiction, and distraction from academic responsibilities. Unregulated gaming habits can disrupt study schedules, reduce attention spans, and negatively impact academic outcomes. For many senior secondary students, balancing gaming with academic priorities becomes a critical challenge, especially during formative years when time management and discipline are key.

This study aims to explore the complex relationship between gaming and academic achievement among senior secondary students. It investigates how different types of Gamification traditional, digital, and educational-affect students' drive to excel academically and their overall performance. By adopting a mixed-methods approach, this research combines quantitative data from academic records and gaming habits with qualitative insights from student and teacher perspectives.

The findings of this study have important implications for educators, parents, and policymakers. If Gamification are to be integrated into the educational process effectively, it is essential to understand their dual-edged nature. On one hand, Gamification can serve as a tool to enhance engagement and learning outcomes. On the other hand, there must be measures to mitigate potential risks associated with unregulated gaming. By understanding these dynamics, stakeholders can adopt strategies to foster balanced gaming habits that support, rather than hinder, academic success. As Gamification continue to evolve, their influence on education becomes an area of growing significance. This study seeks to contribute to this discourse by providing actionable insights into how Gamification can be used to inspire, motivate, and empower students to achieve their academic goals, ensuring that gaming remains a constructive element in their developmental journey.

Different types of Gamifications (digital, traditional, and educational) influence the academic achievement of senior secondary students

The influence of different types of gamifications digital, traditional, and educational-on the academic achievement of senior secondary students can be understood through various dimensions. Each type of gamification provides unique learning experiences that enhance students' understanding, performance, and overall academic success. These approaches help students improve their knowledge retention, problem-solving skills, and academic outcomes."

1. Digital Gamification: Digital Gamification, including online multiplayer gamification, role-playing gamification (RPGs), and simulation gamification, are highly immersive and offer dynamic environments where students solve problems, strategize, and collaborate to achieve objectives. These gamification approaches primarily influence academic achievement by improving students' performance, understanding, and learning outcomes.

Engagement and Enjoyment:

Digital gamification is designed to be enjoyable, providing a sense of achievement when students overcome challenges. This helps students associate learning with fun, which enhances their

understanding and leads to better academic performance. For example, a student who enjoys strategy-based gamification may develop improved problem-solving skills that contribute to higher academic achievement.

Goal Orientation:

Many digital gamification systems have clear objectives, levels, and rewards, which help students set academic goals and track their progress. This structured approach supports improved academic achievement by encouraging students to complete tasks, achieve higher scores, and perform better in their studies.

Social Interaction and Peer Influence: In multiplayer or team-based digital Gamification, students are motivated by competition or collaboration with peers, which can be leveraged to encourage academic collaboration or a healthy sense of competition in academic settings.

2. Traditional Games:

Traditional games such as board games, sports, and puzzles, while less immersive than digital games, still carry elements that can influence academic achievement:

Cooperative Play and Teamwork: Traditional games that involve collaboration or teamwork, such as chess, football, or group problem-solving activities, help improve academic achievement by encouraging cooperation and strategic thinking. These skills are transferable to academic group work and projects.

Cognitive Skill Development: Games like chess or puzzles engage students' cognitive functions, enhancing skills such as critical thinking, pattern recognition, and decision-making. These abilities contribute to improved academic achievement as students perform better in their studies.

Structure and Routine: Traditional games often follow structured rules and guidelines, providing a sense of discipline. This structure helps students develop habits like focus and goal-oriented behavior, which positively influence their academic achievement.

Traditional games may have a more limited scope but are effective in building foundational cognitive and social skills that support academic achievement.

3. Educational Games:

Educational games are specifically designed to enhance learning and are often aligned with curriculum goals. These games play a significant role in improving academic achievement:

Personalized Learning:

Educational games often provide adaptive difficulty levels, catering to individual learning pace and style. This personalization enhances academic achievement by helping students understand concepts more effectively.

Sustained Engagement:

By making learning interactive and dynamic, educational games help students maintain focus and engagement. This leads to better understanding, improved retention, and higher academic achievement.

Gaming frequency, duration, and type affect students' academic achievement in terms of

grades, cognitive skills, and overall learning outcomes

Investigating how gaming frequency, duration, and type affect students' academic achievement-specifically grades, cognitive skills, and overall learning outcomes-requires a nuanced understanding of the interactions between gaming behaviours and academic achievement.

Each of these variables (frequency, duration, and type) plays a critical role in shaping how Gamification influence a student's educational

experience.

1. Gaming Frequency:

Frequency refers to how often students engage in gaming activities. The impact of gaming frequency on academic performance depends on whether gaming is used constructively or detracts from academic priorities.

" **Positive Effects of Moderate Gaming Frequency:** Engaging in Gamification on a moderate basis can enhance students' cognitive skills, such as critical thinking, problem-solving, and spatial awareness, which are transferable to academic tasks. For example, students who play Gamification involving strategy and logic, such as puzzles or role-playing Gamification, may develop skills that improve performance in subjects like mathematics and science. The key is moderation-when gaming is balanced with academic responsibilities, it can serve as a tool to enhance learning and stimulate interest in academic subjects, contributing positively to cognitive development and overall academic achievement.

" **Negative Effects of High Gaming Frequency:** Excessive gaming-especially if it becomes a daily routine-can negatively impact academic achievement. Prolonged gaming sessions may lead to decreased focus on schoolwork, resulting in lower grades and incomplete assignments. Gaming can also disrupt sleep schedules, which is essential for cognitive function and memory consolidation, ultimately leading to poor academic outcomes. High gaming frequency is also linked to reduced time spent on academic tasks, leading to poorer overall learning outcomes.

2. Gaming Duration:

Duration refers to the length of time spent on gaming in each session. The duration of gaming sessions directly impact the amount of time available for academic engagement and can influence both short-term and long-term learning outcomes.

" **Short, Controlled Sessions:** When gaming sessions are short and well-regulated, they can serve as a rewarding break, helping to recharge students' attention and reduce burnout from academic work. This balance can positively affect academic achievement, as students return to their studies feeling more focused and refreshed. Cognitive skills such as attention to detail, multi-tasking, and strategic thinking can be honed during these shorter gaming sessions, contributing to improved problem-solving abilities in academic settings.

3. Type of Gamification:

The type of Gamification played by students-whether they are digital, traditional, or educational-has significant implications for their academic performance, cognitive development, and overall learning outcomes.

" **Digital Gamification:** The effects of digital Gamification on academic achievement vary widely depending on the nature of the Gamification. Gamification that requires strategic thinking, problem-solving, and decision-making (such as strategy Gamification, puzzles, or simulations) can enhance cognitive skills that are transferable to academic tasks. For example, action and adventure Gamification can improve spatial awareness and multitasking abilities, which can benefit students in subjects such as geometry, engineering, or computer science. However, Gamification that are highly immersive and repetitive, such as those based on violence or simplistic mechanics, may lead to cognitive fatigue, reduced attention span, and a focus on immediate rewards rather than long-term academic goals.

" **Traditional Gamification:** Gamification like chess, board Gamification, and sports contribute to cognitive development by encouraging strategic

thinking, teamwork, and discipline. These types of Gamification also help build perseverance and focus, skills that are critical in academics. For instance, playing chess helps improve logical reasoning and critical thinking, which are valuable in subjects like mathematics and philosophy. Sports can foster time management and stress resilience, promoting a healthy balance between physical activity and intellectual work. Traditional Gamification, when balanced with study, tend to have a positive impact on grades and cognitive outcomes.

" **Educational Gamification:** Educational Gamification-those designed to teach specific academic concepts-have the most direct influence on academic achievement. These Gamification typically target areas such as math, language, and science, providing interactive and engaging platforms for students to practice and reinforce learning. By offering personalized, adaptive learning experiences, educational Gamification can significantly improve students' academic outcomes, particularly for students who may struggle with traditional learning methods.

Conclusion:

This research highlights the complex relationship between gaming and the academic achievement of senior secondary students. While gaming has often been viewed as a source of distraction, this study reveals that, when balanced appropriately, it can offer significant benefits in terms of cognitive development, problem-solving skills, and academic engagement. Gamification-particularly those that are educational or promote strategic thinking can enhance students' performance by making learning enjoyable and interactive, while also fostering critical thinking, memory, and attention to detail. These cognitive benefits can positively influence academic performance, leading to improved grades and overall learning outcomes.

However, the study also emphasizes the potential challenges associated with gaming. Excessive gaming, particularly if it becomes a distraction or disrupts time management and sleep schedules, can negatively impact students' focus, academic performance, and well-being. The key to maximum the positive effects of gaming while minimizing its risks lies in maintaining a balance between gaming and academic responsibilities. Gaming can be used as a tool to enhance cognitive skills when approached thoughtfully, with clear boundaries on time and type of Gamification played.

Educational Gamification, in particular, stand out as a promising approach to aligning gaming with academic goals, providing students with both enjoyment and relevant learning experiences. Teachers, parents, and educators can play a crucial role in guiding students toward healthy gaming habits and selecting Gamification that support their educational development.

In conclusion, this research demonstrates that the influence of Gamification on academic achievement is multifaceted. While gaming has the potential to enhance learning, its impact ultimately depends on how it is integrated into students' daily lives. A balanced, mindful approach to gaming can help senior secondary students leverage its benefits, ensuring that it complements and enhances their academic journey rather than detracting from it.

References:

1. Akinsola, M. K., & Animasahun, I. A. (2007). The Effect of Simulation-Gamification Environment on Students Achievement in and Attitudes to Mathematics in Secondary Schools. Online Submission, 6(3).

2. Annetta, L. A., Minogue, J., Holmes, S. Y., & Cheng, M. T. (2009). Investigating the impact of video Gamification on high school students' engagement and learning about genetics.

Computers & Education, 53(1), 74-85.

3. Akanmu, M. A., & Adeniyi, C. O. (2021). Effects Of Mathematical Gamification on Senior

Secondary Students' Academic Performance in Mathematics in Ejigbo, Osun State, Nigeria.

ATTARBAWIY: Malaysian Online Journal of Education, 5(1), 1-9.

4. Babang, V. M. M. F., Yuliartini, N. P. R., & Amir, L. S. (2024, April). The Impact of Utilizing Educational Gamification on Students' Learning Academic Achievement. In Proceeding of International Seminar on Student Research in Education, Science, and Technology (Vol. 1, pp. 172-181).

5. Camacho-Sánchez, R., Serna Bardavío, J., Rillo-Albert, A., & Lavega-Burgués, P. (2023). Enhancing academic performance through gamified digital game-based

learning methodology using the ARCS model. Interactive Learning Environments, 1-18.

6. Joson, K. (2023). Adolescent Motives, Gaming Behavior and Its Implications to Learning:

The Case of Junior and Senior High School Students. JETT, 14(5), 466-476.

7. Kebritchi, M., Hirumi, A., & Bai, H. (2010). The effects of modern mathematics computer

Gamification on mathematics achievement. Computers & education, 55(2), 427-443.

A Study of Mathematical Problem-Solving Ability of Secondary School Students Taught through Inductive and Deductive Teaching Methods



Dr. Dola Chakravorty
B.Ed.-M.Ed. Supervisor,
Associate Professor, Suresh
Gyan Vihar University, Jaipur



Arun Kumar Sharma
B.Ed.-M.Ed. Scholar, Suresh Gyan
Vihar University, Jaipur

ABSTRACT

Mathematical problem-solving remains a critical yet challenging skill for secondary school students, often hindered by rote learning and limited reasoning development. This study investigates the efficacy of inductive and deductive teaching approaches in enhancing problem-solving abilities among Class 9 students. Inductive methods emphasize pattern recognition and generalization from specific examples, while deductive approaches apply general principles to specific problems, fostering logical reasoning and conceptual understanding.

Mathematics plays a crucial role in developing logical reasoning and problem-solving ability among students. The effectiveness of teaching methods significantly influences students' understanding of mathematical concepts. The present study investigates the comparative effectiveness of the Inductive and Deductive teaching approaches in improving the mathematical problem-solving ability of secondary school students. A quasi-experimental research design with pre-test and post-test was adopted. Two groups of secondary school students were selected, where one group was taught through the Inductive Teaching Method and the other through the Deductive Teaching Method. The mathematical problem-solving ability test was administered before and after the treatment. Statistical techniques such as mean, standard deviation, and t-test were used to analyse the data. The hypothesis tested was that there is no significant difference between the mean scores of students taught through inductive and deductive teaching methods. The findings provide insight into the effectiveness of teaching strategies in mathematics education.

Keywords: Inductive Method, Deductive Method, Mathematical Problem Solving, Secondary School Students, Teaching Approaches

1. INTRODUCTION

Mathematics is universally recognized as a cornerstone of school education, not merely as a collection of procedures and formulas, but as a critical discipline that fundamentally shapes cognitive development. Its importance stems from its unparalleled capacity to cultivate vital intellectual skills, including analytical thinking, the systematic breakdown of complex information, logical reasoning, the ability to construct sound arguments and draw valid conclusions and sophisticated problem-solving skills, and the structured application of knowledge to novel challenges. These skills transcend the mathematics classroom, becoming indispensable tools for navigating academic, professional, and daily life.

However, a recurring challenge in mathematics education is the difficulty many students face in mastering problem-solving. This struggle is

frequently attributed not to a lack of student capability, but to the implementation of ineffective teaching strategies that fail to connect concepts to intuition or encourage deep understanding. Therefore, the deliberate and thoughtful selection of appropriate teaching methods is paramount for enhancing students' conceptual grasp, bolstering their confidence, and ultimately improving their academic performance in mathematics.

- Contrasting Pedagogical Approaches: Inductive vs. Deductive Methods

Within mathematics instruction, two primary and widely-utilized pedagogical frameworks stand out: the Inductive Teaching Method and the Deductive Teaching Method. These approaches represent fundamentally different pathways to knowledge acquisition and rule formulation.

- The Inductive Teaching Method

The Inductive approach adheres to a "discovery" model of learning. It systematically begins with specific examples, concrete observations, or detailed instances (e.g., measuring the angles of various triangles, calculating the area of several different parallelograms). From this base of specific data, the teacher guides students toward the discovery of general principles, overarching rules, or mathematical laws.

- The Deductive Teaching Method

Conversely, the Deductive approach follows a more traditional, top-down structure. It begins with general principles, established formulas, or well-defined rules (e.g., stating the Pythagorean theorem). Once the general rule is presented and thoroughly explained by the instructor, the method then moves on to applying these principles to solve specific problems and various examples (e.g., using the Pythagorean theorem to find the length of a side of a specific right-angled triangle).

- The Imperative for Comparative Study

Both the Inductive and Deductive methods are powerful tools, each possessing distinct advantages and limitations based on the learning objective, the nature of the mathematical concept, and the profile of the student. For instance, the Inductive method can be time-consuming, while the Deductive method can sometimes lead to rote learning without true conceptual insight.

Therefore, a critical area of educational research is to examine the relative effectiveness of these two teaching methods. The goal is to determine which approach, or combination of approaches, is most successful in improving students' mathematical problem-solving ability. This investigation is particularly relevant at the secondary school level, where mathematical concepts increase significantly in abstraction and complexity, demanding robust strategies for both understanding and application. The findings of such a comparative analysis are essential for informing pedagogical decisions and optimizing the learning experience for future mathematics students.

2. STATEMENT OF THE STUDY:

A Study of Mathematical Problem-Solving Ability of Secondary School Students Taught through Inductive and Deductive Teaching Methods.

3. OBJECTIVES OF THE STUDY:

1. To compare the mathematical problem-solving ability of secondary school students taught through the Inductive Teaching Method and the Deductive Teaching Method.

4. HYPOTHESIS OF THE STUDY:

H0: There is no significant difference in the mean scores of mathematical problem-solving ability between secondary school students taught through the Inductive Teaching Method and those taught through the Deductive Teaching Method.

5. POPULATION & SAMPLE

5.1 POPULATION

The population of the study consisted of secondary school students (class 9 & 10) of the Jaipur region.

5.2 SAMPLE

A sample of 60 students was selected using a random sampling technique.

The sample was divided into two groups:

Table 1.1:

Group	Number of Students	Teaching Method
Experimental Group	30	Inductive Method
Control Group	30	Deductive Method

6. Research Design

The present study is based on an experimental research design using the pre-test and post-test method.

Both groups were given a pre-test before the teaching intervention and a post-test after the completion of the teaching program. The difference between the pre-test and post-test scores was analysed to determine the effectiveness of the teaching methods.

6.1 Sampling Technique

The sample for the present study was selected using the random sampling technique.

Students were randomly divided into two groups to ensure that both groups had approximately similar characteristics in terms of ability and academic background.

6.2 Tool Used for Data Collection

To measure the mathematical problem-solving ability of students, the investigator prepared a Mathematical Problem-Solving Ability Test.

6.3 Procedure of the Study

The procedure of the study was conducted in the following steps:

Step 1: Selection of Sample

A total of 60 secondary school students were selected and divided into two groups.

Step 2: Administration of Pre-Test

Before starting the teaching program, a pre-test was administered to both groups to measure their initial level of mathematical problem-solving ability.

Step 3: Teaching Intervention

- The experimental group was taught using the Inductive Teaching Method.

- The control group was taught using the Deductive Teaching Method.

The teaching program continued for a specified period using lesson plans prepared according to the respective teaching methods.

Step 4: Administration of Post-Test

After the completion of the teaching program, a post-test was administered to both groups using the same test to measure improvement in students' performance.

Step 5: Data Collection

The scores obtained by students in the pre-test and post-test were recorded for statistical analysis.

6.4 Statistical Techniques Used

The following statistical techniques were used to analyse the data:

1. Mean
2. Standard Deviation
3. t-test

The t-test was used to determine whether there was a significant difference between the mean scores of the two groups.

7. RESEARCH METHOD

The present study employed an Experimental Research Design using a Pre-test and Post-test method.

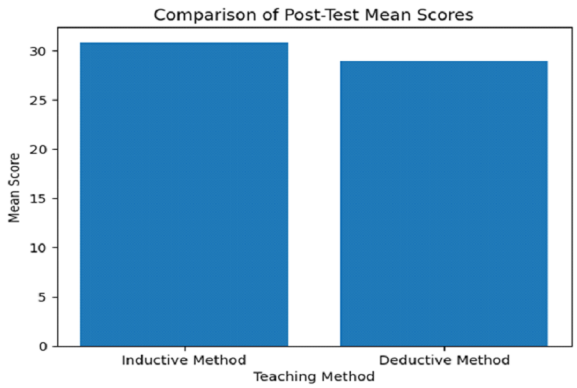
8. DATAANALYSIS & INTERPRETATION

Table 1.2: Comparison of Post-Test Scores

Group	N	Mean	S.D.	t-value	df
Inductive Method	30	30.8	4.2	1.75	58
Deductive Method	30	28.9	4.5		

Degrees of Freedom (df): For comparing two independent groups, the degrees of freedom are calculated using the formula

DF=N1+N2-2



The computed t-value of 1.75 was evaluated against the tabulated value of roughly 2.00 at the 0.05 significance level with 58 degrees of freedom. Given that the computed t-value is lower than the tabulated value, the disparity between the two groups is not statistically significant. Consequently, the null hypothesis is accepted, suggesting that there is no significant difference in the mathematical problem-solving capabilities of students instructed through inductive versus deductive teaching methods.

9. FINDINGS & CONCLUSION

1. The analysis of post-test scores indicates that both the Inductive Teaching Method and the Deductive Teaching Method contributed to improving the mathematical problem-solving ability of secondary school students.

2. The mean score of students taught through the Inductive Method (M = 30.8) was higher than that of students taught through the Deductive Method (M = 28.9), indicating comparatively better performance of the inductive group.

3. The calculated t-value (1.75) with df = 58 shows that the difference between the two groups is not statistically significant at the 0.05 level of significance. Hence, the null hypothesis stating that there is no significant difference between the two teaching methods is accepted.

4. The results suggest that although the inductive method produced slightly higher achievement scores, both teaching approaches were effective in enhancing students' mathematical problem-solving skills.

5. Classroom interaction, logical reasoning, and active participation observed during the teaching process indicate that both instructional approaches support conceptual understanding in mathematics.

10. References

1. Angraini, L. M., Larsari, V. N., Muhammad, I., & Kania, N. (2023). Generalization and Analogical Reasoning of Students in Mathematics Learning. https://doi.org/10.22460/infinity.v12i2.p291-306

2. Singh, N. K., & Yadav, A. K. (2023). Inductive and Deductive Methods in Mathematics Teaching. https://rsmams.org/journals/seajmams/article/258

3. Buchbinder, O., & McCrone, S. (2020). Preservice Teachers Learning to Teach Proof through Classroom Implementation. https://doi.org/10.1016/j.jmathb.2020.100779

4. Government of India (2020). National Education Policy 2020. https://www.education.gov.in/en/nep-2020

5. Mangal, S. K. (2019). Advanced Educational Psychology. PHI Learning.

6. Sharma, R. A. (2018). Educational Research and Statistics. Surya Publications.

7. Sidhu, K. S. (2017). Methodology of Research in Education. Sterling Publishers.

8. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). Research in Education. Pearson Education. https://www.pearson.com/en-us/subject-catalog/p/research-in-education/P200000003264

9. Aggarwal, J. C. (2015). Essentials of Educational Psychology. Vikas Publishing House.

10. Yildirim, A., et al. (2009). Learning and Reasoning Styles of Pre-Service Teachers: Inductive or Deductive Reasoning. https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2009.01.432

11. A Framework of Mathematics Inductive Reasoning - Christou, C., et al. (2007). Learning and Instruction. https://doi.org/10.1016/j.learninstruc.2006.11.009

12. NCERT (2005). National Curriculum Framework. https://ncert.nic.in/ncf/ncf2005.pdf

13. Badmus, G. A., & Harbor-Peters, V. F. (2002). Teaching Strategies and Students' Achievement in Mathematics. https://rsisinternational.org/journals/ijriss/articles/impact-of-inductive-and-problem-solving-teaching-methods-on-students-performance-in-geometrical-concepts-of-mathematics-among-junior-secondary-school-students-in-katsina-state-nigeria/

14. National Council of Teachers of Mathematics (2000). Principles and Standards for School Mathematics. https://www.nctm.org/Standards-and-Positions/Principles-and-Standards/

शिक्षक प्रशिक्षणों से शिक्षा की गुणवत्ता एवं शिक्षकों की कार्यक्षमता में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन



देवेंद्र कौर
शोधार्थी
शिक्षा विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़ (राज.)

सार

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का आधार होती है। शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान समय में बदलते शैक्षिक परिवेश, तकनीकी उन्नति एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण शिक्षकों के लिए निरंतर प्रशिक्षण आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों की कार्यक्षमता में क्या परिवर्तन होते हैं तथा इसका शिक्षा की गुणवत्ता पर क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि प्रशिक्षण के पश्चात शिक्षकों में शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन, तकनीकी दक्षता एवं नवाचार की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है, जिससे विद्यार्थियों के अधिगम स्तर एवं शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है।

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। यह केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, नैतिकता एवं जीवन कौशलों का विकास भी करती है। शिक्षा की गुणवत्ता का सीधा संबंध शिक्षक की दक्षता एवं कार्यकुशलता से होता है।

वर्तमान युग में शिक्षा प्रणाली तेजी से बदल रही है। डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट कक्षाएँ, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म तथा छात्र–केंद्रित शिक्षण पद्धतियाँ शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर रही हैं। ऐसे में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह मार्गदर्शक, प्रेरक एवं सहायक की भूमिका निभाता है।

इन परिवर्तनों के अनुरूप शिक्षकों को सक्षम बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता अत्यधिक बढ़ गई है। शिक्षक प्रशिक्षण न केवल शिक्षकों के ज्ञान को अद्यतन करता है, बल्कि उन्हें नई शिक्षण विधियों एवं तकनीकों से भी परिचित कराता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

आज की शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जैसे :

– शिक्षा की गुणवत्ता में असमानता
– पारंपरिक शिक्षण विधियों का अत्यधिक उपयोग
– तकनीकी ज्ञान का अभाव
– विद्यार्थियों की घटती रुचि
– कक्षा प्रबंधन की समस्याएँ

इन समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षक प्रशिक्षण एक प्रभावी माध्यम है। यदि शिक्षक को समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाए, तो वह नई शिक्षण तकनीकों को अपनाकर विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकता है।

शिक्षा की गुणवत्ता

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ केवल परीक्षा परिणामों में सुधार नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास से है। इसमें शामिल हैं :

– बौद्धिक विकास
– सामाजिक एवं भावनात्मक विकास

– नैतिक मूल्यों का विकास
– जीवन कौशलों का विकास

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर एवं जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

शिक्षक प्रशिक्षण का शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रभाव

शिक्षण विधियों में सुधार

प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक नई शिक्षण विधियाँ अपनाते हैं, जैसे :

– गतिविधि आधारित शिक्षण
– समस्या समाधान आधारित शिक्षण
– समूह कार्य एवं चर्चा

इन विधियों से विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी बढ़ती है।

विद्यार्थियों की रुचि में वृद्धि

जब शिक्षक नवीन एवं रोचक तरीकों से पढ़ाते हैं, तो विद्यार्थियों की सीखने में रुचि बढ़ती है।

अधिगम परिणामों में सुधार

प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को बेहतर समझते हैं, जिससे उनके अधिगम स्तर में सुधार होता है।

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा

प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों (विशेष आवश्यकता वाले, कमजोर छात्र आदि) के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करना सीखते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण का शिक्षकों की कार्यक्षमता पर प्रभाव

1 कक्षा प्रबंधन में सुधार

प्रशिक्षण से शिक्षक अनुशासन बनाए रखने एवं कक्षा को व्यवस्थित करने में सक्षम होते हैं।

2 संप्रेषण कौशल का विकास

शिक्षक विद्यार्थियों के साथ प्रभावी संवाद स्थापित कर पाते हैं, जिससे शिक्षण अधिक प्रभावी होता है।

3 तकनीकी दक्षता में वृद्धि

डिजिटल युग में तकनीकी ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षण से शिक्षक स्मार्ट बोर्ड, प्रोजेक्टर, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आदि का उपयोग करना सीखते हैं।

4 नवाचार एवं रचनात्मकता

प्रशिक्षण शिक्षकों को नए विचारों को अपनाने एवं प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है।

5 आत्मविश्वास में वृद्धि

प्रशिक्षण से शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी एवं प्रेरित होते हैं, जिससे उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

1. शिक्षक प्रशिक्षण से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में सुधार होता है।
2. प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों में तकनीकी दक्षता बढ़ती है।
3. कक्षा प्रबंधन एवं अनुशासन में सुधार होता है।
4. विद्यार्थियों के अधिगम स्तर एवं परीक्षा परिणाम बेहतर होते हैं।
5. शिक्षक अधिक रचनात्मक एवं नवाचारी बनते हैं।

सुझाव

1. शिक्षक प्रशिक्षण को नियमित एवं अनिवार्य बनाया जाए।
2. प्रशिक्षण को व्यावहारिक एवं गतिविधि आधारित बनाया जाए।
3. डिजिटल प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
4. प्रशिक्षण के बाद मूल्यांकन एवं फॉलो–अप किया जाए।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण सुविधाओं का विस्तार किया जाए।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का एक प्रभावी साधन है। यह शिक्षकों की कार्यक्षमता को बढ़ाता है तथा उन्हें आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों से परिचित कराता है। प्रशिक्षित शिक्षक न केवल बेहतर ढंग से पढ़ाते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक एवं सतत बनाया जाए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीयता की भावना के विकास में प्रभावशीलता का अध्ययन



डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
पर्यवेक्षक
प्राचार्य शिक्षा संकाय
महाराज विनायक ग्लोबल
वि.वि. दण्ड, आमेर, जयपुर



बृजेश कुमारी शर्मा
शोधार्थी
महाराज विनायक ग्लोबल
वि.वि. दण्ड, आमेर, जयपुर



प्रियंका यादव
शोधार्थी
महाराज विनायक ग्लोबल
वि.वि. दण्ड, आमेर, जयपुर

सार

उन्नीसवीं शताब्दी का भारत सामाजिक एवं धार्मिक और शैक्षिक दृष्टि से संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के प्रभाव से भारतीय संस्कृति और परंपराएं चुनौति का सामना कर रहीं थीं। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक आदर्शो पर आधारित शिक्षा का प्रतिपादन किया। उनके शैक्षिक विचारों का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास तथा राष्ट्रीय चेतना का जागरण था प्रस्तुत शोध–पत्र में महर्षि दयानन्द के शैक्षिक विचारो का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन किया गया हैं कि उनके सिद्धान्त किस प्रकार राष्ट्रीयता की भावना के विकास में प्रभावी सिद्ध हुए ।

1 प्रस्तावना

भारत में आधुनिक शिक्षा का आरंभ औपनिवेशक शासन के दौरान हुआ । अंग्रेजी शिक्षा ने जहां एक ओर वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किया वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति और परंपराओ से दूरी भी उत्पन्न की। इस सांस्कृतिक संकट के समय महर्शि दयानन्द सरस्वती ने भारतीय समाज को वैदिक मूल्यों की ओर लौटने का आह्वान किया ।

1824 में जन्में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की । उनका प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हैं जिसमें उन्होने सामाजिक एवं धार्मिक और शैक्षिक सुधारों का विस्तृत प्रतिपादन किया । उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र के नैतिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से जुडा होना चाहिए।

2 अध्ययन की आश्यकता और महत्व

वर्तमान समय में राष्ट्रीय मूल्यों एवं नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना में कमी देखी जा रही है। शिक्षा का व्यापारीकरण भी चिंता का विषय है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन प्रासंगिक है क्योंकि –

– दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा को राश्ट्रनिर्माण का साधन माना ।

– दयानन्द सरस्वती ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बताया ।

– दयानन्द सरस्वती ने स्वदेषी और सांस्कृतिक आत्मगौरव पर बल दिया ।

3 अध्ययन के उद्देश्य

– महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन एवं तात्कालिक परिस्थितियों का अध्ययन करना।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरूकुल शिक्षा प्रणाली संबंधी विचारों का अध्ययन करना।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीयता

की भावना के विकास में प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

4 अनुसंधान विधि

शोधकर्ता ने अपने सम्बन्धित अध्ययन "महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीयता की भावना के विकास में प्रभावशीलता का अध्ययन करना" हेतु दार्शनिक अनुसंधान विधि को स्वीकार किया है।

5 महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचार

5.1 शिक्षा का उद्देश्य

महर्षि दयानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है :

– सत्य का ज्ञान
– चरित्र निर्माण
– आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास
– समाज एवं राष्ट्र की सेवा व शिक्षा को व्यक्ति और राष्ट्र के उत्थान का माध्यम मानना ।

5.2 वैदिक शिक्षा का समर्थन

– उन्होने वेदों को सर्वोच्च ज्ञान का स्त्रोत माना । उनका विश्वास था कि वैदिक शिक्षा व्यक्ति में नैतिकता एवं अनुशासन और कर्तव्य भावना विकसित करती है ।

5.3 चरित्र निर्माण पर बल

– शिक्षा का मूल लक्ष्य सदाचार है
– सत्य एवं ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम आवश्यक है
– राष्ट्रीयता का आधार सुदृढ चरित्र है।

5.4 स्त्री शिक्षा का सर्मथन

उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा का समान अधिकार दिया । यह विचार उस समय अत्यंत प्रगतिशील था। शिक्षित महिला राष्ट्र की प्रगति का आधार है।

5.5 गुरूकुल प्रणाली

उन्होंने गुरूकुल व्यवस्था का समर्थन किया जहाँ शिक्षक और छात्र का संबन्ध घनिष्ठ हो तथा शिक्षा जीवनोपयोगी हो ।

6 राष्ट्रीयता की भावना के विकास में प्रभावशीलता

6.1 सांस्कृतिक राष्ट्रीयता : वैदिक परम्पराओं के पुनरूत्थान से भारतीयों में आत्मगौरव जागृत हुआ । इससे राष्ट्रीय चेतना को बल मिला।

6.2 भाषाई राष्ट्रीयता

उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में समर्थन दिया। भाषा राष्ट्रीय एकता का महत्वपूर्ण साधन हैं।

6.3 सामाजिक सुधार

– जाति प्रथा का विरोध
– मूर्ति पूजा का विराध
– सामाजिक समानता
– सामाजिक एकता राष्ट्रीयता का आधार है।

6.4 स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव

आर्य समाज ने राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इनके अनेक अनुयायी स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहे ।

7 समालोचनात्मक विश्लेषण

सकारात्मक पक्ष

– शिक्षा को राष्ट्र निर्माण से जोडना
– चरित्र निर्माण पर बल
– स्त्री शिक्षा का समर्थन
– सामाजिक सुधार

सीमाएँ

– अत्यधिक वैदिक केंन्द्रित दृष्टिकोण
– आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के साथ समन्वय की चुनौती

8 आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

– आज की शिक्षा प्रणाली में –
– मूल्य शिक्षा की आवश्यकता
– सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण
– नैतिक शिक्षा का समावेश

9 निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचार राष्ट्रीयता की भावना के विकास में अत्यन्त प्रभावी रहे। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण का साधन माना और वैदिक मूल्यों के माध्यम से भारतीय समाज में आत्मगौरव एवं नैतिकता और सामाजिक एकता का विकास किया। उनके विचार आधुनिक षिक्षा के लिए भी प्रेरणादायक हैं।

संदर्भ सूची

– सत्यार्थ प्रकाश
– आर्य समाज का साहित्य
– भारतीय शिक्षा दर्शन संबंधी ग्रंथ
– शोध पत्र एवं पत्रिकाएँ

फंतासी जाल में आज का युवा : दशा एवं दिशा



डॉ. नरेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्रिया शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान सीकर
मो. 9460604117, 9460628020

बेरोजगारी की मार कहे या फिर महंगे होटलों में खाना खाने का शौक अच्छे ब्राडेंड कपड़े पहनने की लालसा कहे या फिर चाहत पूरी करने की जिद इन सभी कारणों से युवा वर्ग में बढ़ रही अपराध की प्रवृत्ति निःसंदेह चिंताजनक है। युवाओं की बेलगाम हरकतें यथा लूट, डकैती, नकबजनी, चोरी, बलात्कार, हत्या जैसे अपराध ग्लैमर्स की चकाचौंध में अपना भविष्य बर्बाद कर रहे है। नशा भी युवाओं को अपराध के दलदल में धकेल रहा है। भले–बुरे की समझ के अभाव में मासूम युवा बड़े आपराधिक बदमाश के चंगूल में फंसते जा रहे है ऐसे आपराधिक प्रवृत्ति के लोग उनकी मासुमियत का फायदा उठा रहे हैं और कम समय में बहुत कुछ पाने की लालसा दिखाकर उनसे अपराध करवा रहे है परिणामस्वरूप मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। युवा वर्ग अति महत्वाकांक्षी एवं अग्रेसिव होते जा रहे है। वर्तमान युवा इनपटस कंट्रोल भी नहीं हिचक रहे है जिससे वे अपराध करने से भी नहीं चुकते यही वजह है कि उनकी आपराधिक गतिविधि में संलिप्तता ज्यादा हो रही है। जहां एक ओर प्रत्येक माता–पिता अपनी संतान से उम्मीद लगाए बैठे है कि उनका बेटा एक दिन पढ़–लिखकर अफसर बनेगा और घर की मुसीबतें दूर करेगा तथा बुढ़ापे का सहारा बनेगा। इस आस में अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए अपने जीवन भर की मेहनत की कमाई उन पर लगा रहे हैं वहीं दूसरी ओर उनके बच्चे पाश्चात्य एवं भौतिकवादी संस्कृति के फंतासी जाल में फंसकर अपराध करने लग गया है जिससे माता–पिता के सपने चकनाचूर हो रहे हैं। युवा की अतृप्त महत्वाकांक्षाएं अराजक लोगों की संगति में डालकर उसे अपराध के लिए बाध्य करती है। लड़कियों एवं महिलाओं से छेड़खानी, बलात्कार, लूटपाट, चोरी आदि से युवा के कुंठित मन से एकबारगी नकारात्मक सुख महसूस कराता है और एक स्टार की भाँति माहौल बनाने में लगा रहता है यथा वह अपने साथियों के साथ एक डॉन की माफिक गैंग बनाना, मारपीट करना, युवतियों को प्रभावित करना आदि। सवाल यह है कि किस प्रकार इन आक्रामक एवं बुरी प्रवृत्ति से युवाओं को छुटकारा दिलाया जाए?

आवश्यकता है युवा के सही परवरिश एवं संस्कारों की। इस हेतु सर्वप्रथम हम अपने ही घर में झांककर देखे कि हम अपने बच्चों को अच्छा साहित्य पढ़ने हेतु प्रेरित कर रहे है? क्या हमारे घर–परिवार में शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियां गूंजती है? क्या हमने अपने बच्चों को किसी सामाजिक भलाई के कार्य से जोड़ा है? क्या हम अपने बच्चों को धर्म, संस्कृति एवं संस्कार की गूढ़ मानवीय विचारधाराएं सिखायी है? क्या हमने इस बात का पता लगाया है कि हमारे घर का एवं बाहर का वातावरण कैसा है? हमारे बच्चे के संगी–साथी कौन है? हमारा बच्चा किनके साथ घूल–मिल रहा है? इन सबको समझते हुए हमें अपने बच्चों के लिए ऐसी संवेदनशील व्यवस्था का निर्माण करना होगा जो सर्वप्रथम हमारे अपने घर से प्रारम्भ होती है। यदि हम अपने बच्चे की अच्छी परवरिश कर उन्हें अच्छे संस्कार देंगे साथ ही उन्हें गलत और सही की पहचान का ज्ञान करायेंगे तो निश्चित रूप से हमारा वह अपना सपना साकार हो जायेगा जो सपना हमने अपने बच्चे के लिए संजोया है।

अभिभावक को चाहिए कि वे समस्त दोष केवल वातावरण एवं परिस्थिति को हीं नहीं देवे क्योंकि यदि केवल वातावरण और परिस्थिति में ही दोष होता तो समाज का हर युवा अपराधी और भटका हुआ होता। अभिभावक समाज में व्याप्त उसे नकारात्मक माहौल से युवा को बचाए जो उसके विकास में बाधक है। इस हेतु हमें हम सकारात्मक सोच निर्मित करनी होगी। युवा की ऊर्जा को सही दिशा देनी होगी। चमकती–दमकती भौतिकवादी सुविधाओं से हम युवा को दूर रखे। घर, परिवार एवं समाज की जिम्मेदारी है कि वह युवाओं को समझाएं और अपराध से दूर रखे। उन कारणों को तलाशने का प्रयास करे जो उन्हें गलत व्यवहार करने के लिए उकसाते है। युवाओं के महाविद्यालय से जुड़ी गतिविधियों पर भी नजर रखे क्योंकि सहपाठियों से ईर्ष्या, उपेक्षा, अपेक्षा और प्रतिस्पर्द्धा भी युवा के दिमाग पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। माता–पिता को अपने बच्चों के साथ दूसरों की तुलना नहीं करनी चाहिए उससे बच्चे में हीनभावना उत्पन्न होती है अपितु उसके साथ प्रोत्साहन भरी बातें करनी चाहिए। यथा– तुम बहुत अच्छे हो। तुममें यह प्रतिभा छुपी है। तुम अच्छा कर सकते हो, आदि। प्रोत्साहन भरी बातें बच्चे को सरल एवं सहज बनाती है। बच्चे के साथ संवाद करते रहे, उन्हें अकेला नहीं छोड़े इससे बच्चे का आपके साथ जुड़ाव बना रहेगा और वह आपके साथ हर बात साझा करेगा। बच्चे अपने तरीके से जिंदगी जीना चाहते है अतः बेवजह उनके साथ रोक–टोक नहीं करे अपितु उन्हें पर्याप्त स्पेस देवे।

युवा बच्चे की जिंदगी संवारता है – माता–पिता का प्यार, सबल और दिशा–निर्देश। चूंकि युवा अधिक अग्रेसिव होते है अतः अभिभावक युवाओं की अग्रेसिवता को सकारात्मकता की तरफ मोड़कर उसे प्रोत्साहित करे, इससे युवा बच्चे का व्यवहार सहज एवं संतुलित होता चला जायेगा। युवाओं की अनियमित दिनचर्या भी उसके व्यक्तित्व को कुप्रभावित करती है जैसे – रात को देर तक जगाना, सुबह देर से उठना, इंटरनेट मोबाइल पर उत्तेजक सामग्री देखना, अश्लील साहित्य पढ़ना, फास्टफूड का अधिक सेवन करना, नशा करना, गाली–गलौच करना, झूठ बोलना, चोरी करना आदि जैसी लाइफ स्टाइल उसे नकारात्मक की ओर धकेलती है अतः अभिभावकों को चाहिए कि युवा की इस नकारात्मक जीवन शैली को सकारात्मकता की ओर ले जाए। युवा को नकारात्मकता के रास्तों पर नहीं जाने देवे। इस हेतु उन्हें भरपूर प्यार देवे, उन्हें धैर्यरूपी संबंल प्रदान करे। छल–कपट से पाए गए लक्ष्यों के लिए उन्हें उत्साहित नहीं करे अपितु सही मार्गदर्शन एवं दिशा–निर्देश तथा परामर्श देवे। उसे अच्छा साहित्य पढ़ने की सलाह देवे। संगीत, कला, संस्कृति एवं संस्कार से अवगत कराएं। अभिभावक द्वारा अपने बच्चों के लिए इस प्रकार का किया गया प्रयास निश्चित रूप से उसे अपराधों से एवं फंतासी जाल से दूर रखेगा तथा उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगा।

शिक्षा की गुणवत्ता : दशा एवं दिशा



प्रो.(डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रोफेसर, शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर(राज.)
मो. 9414742973
Google Scholar Profile : http://Scholar.google.com/citations?use-KNXju_8AAAAJ&hi-en
Social Science Research Network : ID 4556183
ई मेल shrimalidrrajendra@gmail.com

प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के आत्मविकास को जागृत कर उसे आत्म–निर्भर बनाकर जीविकोपार्जन हेतु सक्षम बनाना है। इस हेतु हमारी सरकार सलाना शिक्षा पर हजारों करोड़ रूपये का बजट बनाकर निवेश करती है फिर भी वैश्विक स्तर पर हमारी शिक्षा व्यवस्था निचले पायदान पर खड़ी है क्योंकि साल दर साल शिक्षा का बजट तो बढ़ रहा है लेकिन इसके उपयोग को लेकर सकारात्मक ठोस योजनाओं का अभाव भी देखने को मिल रहा है अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम प्राथमिक स्तर से ही इसके सुधार की शुरुआत करे। देश में शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागु है जिसके तहत वंचित वर्ग के बच्चों को सरकारी के साथ–साथ निजी विद्यालयों में भी निश्चित संख्या में प्रवेश कर दिए जाने का नियम है जहां शिक्षा के अधिकार अधिनियम के दुरुपयोग को देखा जा रहा है। यहां इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि शिक्षा के अधिकार अधिनियम में प्रवेश संबंधी दुरूपयोग पर रोक या लगाम लगाकर पात्र को प्रवेश दिलाने के प्रयास किए जाए। वर्तमान में कोरोना महामारी के चलते देश के लोगों में राजकीय विद्यालय एवं महाविद्यालय में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के प्रति रूझान बढ़ा है। कोरोना वायरस ने आम आदमी की आर्थिक स्थिति को बुरी तरह प्रभावित किया है ऐसे में शासकीय विद्यालय में उपलबध निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क गणवेश, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, मिड डे मील योजना ने लोगों को आकर्षित किया है क्योंकि निजी विद्यालय एवं महाविद्यालय में प्रतिवर्ष सत्र की शुरुआत में संचालकों द्वारा मनमाने ढंग से फीस बढ़ोतरी की जाती है ऐसे में अभिभावक द्वारा अपने बच्चों को निजी संस्थानों में कोरोना के चलते दाखिला दिलाना कठिन हो गया है। अभिभावक द्वारा सरकारी शिक्षण संस्थानों के प्रति बढ़ते रूझान को देखते हुए सरकार को चाहिए कि वह विद्यालय में मूलभत सुविधाओं की कमीपूर्ति के साथ विद्यालयों में शिक्षकों की कमीपूर्ति भी करे।

शिक्षकों की कमी उच्च शिक्षण संस्थानों में भी देखने को मिल रही है देश में विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय तथा विद्यार्थी की संख्या इस प्रकार है–

देश	**राज्य**
विद्यालय = 14 लाख	महाविद्यालय = 1304
महाविद्यालय = 50 हजार	बी.एड. कॉलेज = 1024
राज्य विश्वविद्यालय = 399	इंजीनियरिंग कॉलेज = 970
मानद विश्वविद्यालय = 126	प्रबंध महाविद्यालय = 555
केन्द्रीय विश्वविद्यालय = 48	फार्मेसी संस्थान = 301
निजी विश्वविद्यालय = 334	लॉ कॉलेज = 80
विद्यार्थी = 14 करोड़	मेडीकल कॉलेज = 113
	आर्किटेक्चर = 65

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एम्स, आई.आई.टी. और आई.आई.एम. जैसे संस्थानों को छोड़कर अधिकांश महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में भी शिक्षा की तरह मूलभूत साधनों की कमी के साथ सहायक आचार्य, सह आचार्य एवं आचार्य के करीब एक तिहाई पद रिक्त पड़े है। टॉप 200 विश्व रैकिंग में भी हमारे भारतीय संस्थान को नाम मात्र की ही जगह मिल पायी है।

हमें इस बात की खुशी है कि नई शिक्षा नीति

2021 में सरकार द्वारा विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की उपलब्धता पर एक एजेंडा तैयार किया है जिससे मूलभूत साधनों की कमी पूर्ति के साथ शिक्षकों की कमी पूर्ति पर ध्यान दिया जा रहा है साथ ही पूरे देश में समान पाठ्यक्रम एवं समान फीस निर्धारण हेतु भी एक नियामक बोर्ड गठित किया गया है। निश्चित रूप से सरकार द्वारा शिक्षा हेतु उठाए गए यह ठोस कदम शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करेंगे। गुणवत्ता हेतु हमें निम्नलिखित बिन्दू पर ध्यान देना होगा।

इन 5 बिन्दुओं पर आधारित है गुणवत्ता

1. शिक्षण, प्रशिक्षण एवं संसाधन : छात्रों की संख्या, डॉक्टोरल अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या, अध्यापक–छात्र अनुपात, पीएचडी धारक, अनुभवी अध्यापक, वित्तीय संसाधन, उनका समुचित उपयोग करना।
2. शोध एवं व्यावसायिक अभ्यास : प्रकाशन एवं उनकी गुणवत्ता, आइपीआर व पेटेंट, आर एंड डी प्रोजेक्ट और व्यावसायिक अभ्यास पर फोकस करना।
3. स्नातक उपलब्धि : छात्रों का प्लेसमेंट और प्रगति, विश्वविद्यालय परीक्षा और स्नातक करने वाले पीएचडी छात्र आदि पर फोकस रखना।
4. पहुंच और भागीदारी : विविध छात्र, महिला छात्र, आर्थिक, सामाजिक एवं शारीरिक रूप से पिछड़े छात्र सभी का समावेशी ध्यान रखना।
5. अवधारणा : उच्च वर्ग और नियोक्ता की अवधारणा विकसित करना।

उक्त बिन्दुओं पर फोकस करने से मात्रात्मक के साथ हम गुणात्मक विकास कर सकते हैं।

सारांश

इस प्रकार हम कह सकते है कि देश में समानता, समता, आपसी भाईचारा व खुशहाली शिक्षा के कंधों पर ही सवार होकर आयेगी। लोकतंत्र को पोषित करने के लिए शिक्षा अहम साधन है अतः लोकतंत्र में केवल गरीबी, किसान, जाति, धर्म की ही बात न हो वरन् शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाए। इस हेतु राजनैतिक दलों को भी चाहिए कि वे अपने चुनावी मुद्दों में शिक्षा की भी पैरवी करे। लोकतंत्र के आयामों को शिक्षा द्वारा विकसित करे। जॉन ड्युवी की यह उक्ति आज के संदर्भ में अहम है कि शिक्षा के अभाव में लोकतंत्र लंगड़ा एवं निर्जीव है और लोकतंत्र के अभाव में शिक्षा नीरस तथा मृत प्राय है। शिक्षा की लोकतंत्र के नागरिकों को जागरूक बनाती है अतः इस ओर ध्यान देना ही होगा तभी हम शिक्षा में गुणवत्ता स्थापित कर सकते है।

वैवाहिक संक्रमण



डॉ. (श्रीमती) प्रियंका श्रीमाली
व्याख्याता, हिंदी
स्वामी विवेकानंद कॉलेज फॉर प्रोफेशनल स्टडीज,
सींथल, नापासर,बीकानेर मो.9413471252
Google Scholar Profile : https://scholar.google.com/citations? user=RnW6Nh8AAAAJ&hl=en
Social Science Research Network : ID 4569272
ई मेल : dpshrimali1982@gmail-com

विवाह एक पवित्र बंधन है, एक संस्कार है, विवाह केवल पति–पत्नी का शारीरिक मिलन नहीं है अपितु दो आत्माओं, दो परिवार, दो समाज एवं दो प्रथाओं का मिलन है। हमारे समाज में विवाह से पहले वर–वधु को एक–दूसरे को देखने की परम्परा नहीं थी। जीवन साथी दिखने में कैसा है? कितना कमाता है? यह माता–पिता ही देखा करते थे। माता–पिता ने जो कह दिया अथवा जो कर दिया वही अंतिम निर्णय होता था। लड़का और लड़की कुछ नहीं जानते थे कि उनका भावी पति अथवा भावी पत्नी कैसे है? विवाह पहले होता था और प्रेम बाद में। इसके बावजूद भी दोनों विवाह के इस पवित्र बंधन का आदर करते हुए एक–दूसरे को समझते हुए जीवन में आगे बढ़ते थे और अपने वैवाहिक जीवन को खुशहाल बनाते थे और यह अरेंज मैरिज भी सफल हो जाया करती थी परन्तु अब जमाना बदल गया है। वर्तमान में लड़का और लड़की शादी से पहले एक–दूसरे को जानते है, समझते है, प्रेम करते है और फिर विवाह करते है फिर भी इस प्रकार के हो रहे प्रेम विवाह सफल नहीं हो रहे है और तलाक तक की नौबत आ जाती है। ऐसा क्यों हो रहा है? इसके पीछे क्या कारण है? इन सब को जानना एवं समझना अति आवश्यक है।

विवाह से पूर्व सफल प्रेम एवं विवाह के पश्चात प्रेम में कटुता इस बात का संकेत है कि लड़का–लड़की के मध्य प्रेम नहीं वरन् शारीरिक आकर्षण था क्योंकि प्रेम में तो त्याग, बलिदान, विश्वास और एक–दूसरे के प्रति समर्पण का भाव होता है फिर शादी के बाद यह समर्पण कहा चला गया और क्रोध, लालसा कैसे पनप गयी। केवल शारीरिक आकर्षण से होने वाले प्रेम विवाह में दायित्व बोध का अभाव पाया जाता है। हमारे देश में ऐसे अनेक मामले दृष्टिगोचर होते है कि प्रेम विवाह होने के पश्चात जीवन खुशहाल नहीं हो रहे है और लोग घातक कदम उठा लेते है। असफल विवाह से पति अथवा पत्नी द्वारा आत्महत्या कर लेना, पति अथवा पत्नी द्वारा किसी तीसरे की सहायता से एक–दूसरे को मार देना जैसी घटनाएं अब आम होने लगी है। इन सभी के पीछे हमारा अतीत भी हो सकता है क्योंकि अतीत में कुछ घटनाएं ऐसी हो चुकी होती है जो हमें जीवन भर कचोटती रहती है अथवा वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती जिसका खामियाजा हमारे विवाह संबंधों पर पड़ता है। यह घटनाएं हमारे पढ़ाई करने और कैरियर बनाने के दौरान जाने–अनजाने में हो जाती है।

विद्यालय एवं महाविद्यालय में पढ़ने वाले बालक एवं बालिकाओं का आपस में अधिक घुलने–मिलने से अनेक बार सीमा को लांघ जाना आजकल आम बात हो गयी है क्योंकि इस समय लड़के एवं लड़की दोनों किशोरावस्था में होते है जिसमें लैंगिक सहवास की इच्छा अपनी चरम सीमा पर होती है। विषमलिंगी आकर्षण के कारण इस अवस्था में किशोर एवं किशोरी का एक–दूसरे के प्रति सम्मोहन बढ़ जाता है और खेल–खेल में बिना किसी परिणाम को जाने सम्भोग कर बैठते हैं। आधुनिक जीवन शैली कहे या फिर समय की नजाकत अथवा टेलीविजन, सिनेमा, मोबाइल, इन्टरनेट का दुरुपयोग के साथ संगी–साथी का अधकचरा ज्ञान ने हमारे बच्चों को पाश्चात्य संस्कृति की ओर धकेल दिया है जिसका प्रभाव

आगे जाकर विवाह संबंधों पर पड़ता है।

इसी प्रकार पढ़ाई के पश्चात जब हम अपने कैरियर को बनाने के लिए नौकरी करना प्रारम्भ करते है और शादी करने में विलम्ब करते है वह भी अनेक बार समस्या का कारण बन जाता है। हम सब जानते है कि सेक्स हमारे जीवन की शारीरिक एवं प्राकृतिक आवश्यकता है। पहले कैरियर बनाने एवं फिर विवाह में देरी करने के कारण हम अपनी इस प्राकृतिक–शारीरिक आवश्यकता को समाप्त नहीं कर सकते परिणामस्वरूप युवावस्था में कैरियर बनाने एवं नौकरी करने के दौरान युवक एवं युवती का विपरित लिंग के प्रति आकर्षण एवं फिर सहमति से हुए शारीरिक संबंध भी आगे के जीवन को चौपट कर देता है जिसका प्रभाव हमारे विवाह संबंधों पर पड़ता है।

उक्त दोनों कारणों से हमारे जीवन में हुए जाने–अनजाने में इस प्रकार की घटना हमें जीवन भर कचौटती रहती है और हम अपने जीवन साथी को वह प्यार नहीं दे पाते, जो हमें देना चाहिए अतः आवश्यकता इस बात की है कि, बीती गए बिसारिए, आगे की सुद ले। अर्थात् भूतकाल में हुई घटना को हम भूलकर आगे बढ़कर अपने जीवनसाथी के साथ एक–दूसरे के हिस्से की खुशियां एक–दूसरे की झोली में भर दे। भूतकाल की घटना से उबरना दूसरा जीवन मिलने जैसा होता है और इस दूसरे जीवन की शुरुआत हमेशा एक–दूसरे को खुश रखने के वादे के साथ निभाएं क्योंकि विवाह में जीवन भर का साथ होता है। भूतकाल की घटना को भूलकर वैवाहिक जीवन की खूबसूरती बढ़ाए और अपने जीवन को तबाह होने से बचाए। अगर हमने ऐसा नहीं किया तो हम अपने वैवाहिक जीवन को खुशहाल नहीं बना पायेंगे और वापस वहीं पहुंच जायेंगे, जहां से हमने प्रारम्भ किया था बस उसका नाम बदल जायेगा। पहले शादी से पूर्व यौन संबंध और अब शादी के इतर यौन संबंध। क्योंकि वैवाहिक जीवन में खुशहाली नहीं होने से पति–पत्नी को एक–दूसरे में कई कमियां दिखने लग जाती है जो शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक हो सकती है। पति–पत्नी के आपसी यौन संतुष्टि में कमी, आपसी विचारों के तालमेल में कमी, घर–परिवार में धन का अभाव और घर–परिवार में सास एवं ननद के झगड़े आदि के चलते पति–पत्नी में दूरियां एवं तनाव बढ़ने लगता है जिससे निजात पाने के लिए दोनों ही घर के बाहर संतुष्टी खोजने का प्रयास करते है और पुनः वही दोहराव प्रारम्भ हो जाता है जो पहले भी नहीं होना चाहिए था और अब भी नहीं होना चाहिए। भारतीय समाज पिछले कुछ दशकों से एक सामाजिक–सांस्कृतिक संक्रमण से गुजर रहा है। टी.वी., सीरियल, सिनेमा, सोशल मीडिया, इन्टरनेट आदि का दुरुपयोग एकल परिवार, पश्चिमीकरण, कामकाजी महिलाओं का पब्लिक एक्सपोजर बढ़ना और उनके द्वारा अपने सहकर्मियों से अंतरंग मेलजोल बढ़ना और सबकुछ त्वरित पाने की चाह गैर कानुनी रिश्तों को बढ़ाने में अपनी भूमिका निभा रहे है परिणामस्वरूप वैवाहिक संबंध इतने घातक मोड पर पहुंच जाते है कि दंपति एक–दूसरे की हत्या करने या करवाने से भी नहीं हिचकते। प्रेम अब दैहिक आकर्षण का पर्याय बन चुका है। अवैध प्रेम संबंधों में होने वाली हत्याओं का आंकड़ा तो ओर भी भयावह है। विवाह में टूटते विश्वास और खंडित प्रेम के पीछे कारणों की चिंता यकीनन किसी को भी नहीं है क्योंकि समाज का यंत्रीकरण हो चुका है जहाँ अब रिश्ते भावनाओं से नहीं वरन् मस्तिष्क से चल रहे है, रिश्ते दिल से नहीं अपितु दिमाग से चल रहे है। इस प्रकार के रिश्ते अब गंभीर अपराधों का आधार बनते जा रहे है और व्यक्ति दुस्साहसी बनता जा रही है। आंकड़े बताते है कि पहले जहां सर्वाधिक हत्याएं निजी शत्रुता एवं जमीन–जायदाद के विवाद के चलते होती थी वहीं अब ज्यादातार हत्याएं कथित प्रेम संबंधों अथवा अवैध रिश्तों के कारण होने लगी है।

विवाह या प्रेम अब जीवन भर साथ रहने की आकांक्षा के बीच फलीभूत नहीं होते बल्कि वे सत्ता की लड़ाई बन जाते है। त्याग, सामंजस्य, सहनशीलता, यह वैवाहिक शब्दावली से विस्मृत हो जाने वाले शब्द बन चुके है। पति–पत्नी दोनों एकाधिकार एवं अहम के केन्द्र के

बीच खड़े है। जहां स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की जिद में एक–दूसरे को किसी भी सीमा तक आहत करने से भी परहेज नहीं होता परिणामतः पति–पत्नी दोनो अन्यत्र प्रेम खोजने लगते है इस दौरान जब दोनों को अथवा किसी एक को यह लगता है उनका जीवनसाथी व्यवधान उत्पन्न कर रहा है तो वह उसे अपने रास्ते से हटाने से भी नहीं डरता। न जाने कहां जा रहे है और क्या कर रहे है हम जिससे समाज की नींव पर अपराध की दीमक अपना पैर पसार रही है।

हम पति–पत्नी को चाहिए कि वे अपने बीच एक सकारात्मक संवाद स्थापित करे और उनके मध्य व्याप्त एकांत को भेदने का प्रयास करे और इससे भी कहीं अधिक इनके बीच एक ऐसे वातावरण को निर्मित करे जहां दोनों के मध्य वर्चस्व का बोध अथवा लालसा न हो अपितु प्रेम की एक ऐसी साझेदारी हो कि दोनों उस जन्म में, इस जन्म में और हर जन्म के लिए एक–दूसरे के लिए बने हो।

आवश्यकता इस बात की है कि बिखरी हुई जिंदगी को फिर से समेट कर नये जीवन की शुरुआत करे और विवाह जैसे पवित्र बंधन का आदर करते हुए दोनों एक–दूसरे को समझने की कोशिश कर जीवन में सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़े और जीवनसाथी के सही मायने को समझे। जीवनसाथी की कमियों को दूर करने का भरकस प्रयास करे और जीवनसाथी की अच्छाई और खुबियों को देखते हुए जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ाए साथ ही एक–दूसरे को एक–दूसरे के हिसाब से थोड़ा बहुत बदलने का प्रयास करे ताकि गृहस्थी खुशहाली से चल सके। पति–पत्नी दोनों को इस बात को समझना चाहिए कि उनके रिश्ते के साथ कई रिश्ते जुड़े हुए है इसलिए अपने रिश्ते को तबाह होने से बचाए और भूतकाल की गलती को भविष्य में नहीं होने देवे। भूले को बिसार दे और आगे बढ़कर सकारात्मक नजरिए के साथ जीए।

आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक सामंजस्य एवं अन्तर्वैव्यक्तिक संबंधों (मिलनसारिता) का अध्ययन

डॉ. शिखा सर्वा
निर्देशिका
सहआचाय (शिक्षा विभाग)
डॉ. के. एन. मोदी विश्वविद्यालय, निवाई,
टोंक (राज.)



रमेश चन्द मीना
शोधार्थी
डॉ. के. एन. मोदी विश्वविद्यालय,
निवाई, टोंक (राज.)

1. प्रस्तावना –

आवासीय विद्यालय एक शैक्षणिक संगठन है जिसका संचालन केन्द्र एवं राज्य सरकार मिलकर करती है। आवासीय विद्यालय में विद्यार्थी अपने परिवार से दूर रहकर आत्म निर्भरता के गुण विकसित करता है। आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी स्व विवेक पूर्ण कार्य करने में सक्षम होते है। आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी दैनिक कार्य प्रणाली के अनुसार कार्य करते हुए शिक्षा प्राप्त करते हुए अपने को समर्थ बनाते हैं। मिलनसारिता वह तरल नेटवर्क (Fluid-Network) है, जो डिजिटल और भौतिक सीमाओं को पार करता है। यह आवासीय विद्यार्थियों को बाहरी दुनिया के व्यावहारिक अनुभव और गैर–आवासीय विद्यार्थियों को संस्था या मूल्यों से समृद्ध करती है। आवासीय विद्यालय कैंपस में इंगेजमेंट के नवीन मॉडल पर जोर दिया जाता है। जिसमें ''सामाजिक और शैक्षणिक सहजीवन'' (Social And Academic Symbiosis) की वह प्रक्रिया है, जो विद्यार्थियों के बीच की भौगोलिक दूरी को मिटाकर उन्हें एक वैश्विक शिक्षण समुदाय में बदल देती है। आवासीय विद्यालयों में सहयोग एवं सौहार्द की भावना का विकास किया जाता है। जो विद्यार्थियों की रूचियों, आदतों अभिवृतियों को विकसित करने में सहयोग प्रदान करते हैं। सामाजिक सामंजस्य के द्वारा बालकों में विभिन्न दृष्टिकोण, परम्पराओं, रीति–रिवाजों, जीवन–शैली, कार्यशैली के बारे में जानने समझने और उनकी सराहना करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक सामंजस्य एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों (मिलनसारिता) का अध्ययन किया गया है –

2. शोध के उद्देश्य –

(1) विभिन्न आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर ''सामाजिक जुड़ाव'' के स्तर का अध्ययन

(2) विभिन्न आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में संकाय के आधार पर ''सामाजिक जुड़ाव के स्तर का अध्ययन।

3. शोध की परिकल्पना –

(1) विभिन्न आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में 'सामाजिक जुड़ाव' में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) विभिन्न आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में 'सामाजिक जुड़ाव' में संकाय के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. जनसंख्या एवं न्यादर्श –

जनसंख्या तथा समष्टि से एक ही अर्थ निकलता है, समष्टि के अन्तर्गत विस्तृत रूप से समव्यक्तियों के वे समूह, वस्तुएँ अथवा प्रक्रियाएँ सम्मिलित रहती है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने राजस्थान राज्य के टोंक जिले को जनसंख्या के रूप में लिया है। जिसमें उच्च मा० स्तर की शिक्षा प्राप्त कर रहे आवासीय एवं गैर आवासीय 320 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

5. उपकरण –

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रश्नावली विधि एवं साक्षात्कार का उपयोग किया गया है।

6. अध्ययन के चर –

प्रस्तुत शोध पत्र में दो चरों का उपयोग किया गया है जो निम्नानुसार है।

(1) आश्रित चर – मिलनसारिता, सामाजिक सामंजस्य

(2) स्वतंत्र चर – विद्यालय, लिंग भेद, संकाय, ब्लॉक

7. परिणाम एवं विवेचना –

आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मिलनसार व्यवहार से सामाजिक सामंजस्यकी भावना विकसित होती है जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन, जीवन प्रबंधन, सामूहिकता, नेतृत्वशीलता तथा प्रतिस्पर्धात्मकता के गुणों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी मूल्य का उपयोग किया गया जिससे स्पष्ट है कि मिलनसारिता सामाजिक समायोजन में परिवर्तित हो जाती है। आवासीय विद्यालय में विद्यार्थियों को अनेक समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। जैसे निजता की कमी, अकेलापन, कुंठा, साथी, समूहों का दबाव, प्रतियोगिता, धन की कमी, छात्रावास में सुविधाओं की कमी, समायोजन की समस्या, व्यक्तिगत समस्या, पारिवारिक तनाव, आवासीय विद्यालय के वातावरण में कुछ नकारात्मक प्रभाव भी शोध कार्यों में चिन्हित हुए है। आवासीय विद्यालय में रहने वाले विद्यार्थियों में सामाजिकता भी कम होती है। आवासीय विद्यालय में रहने वाले विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता भी परिवार के साथ रहने वाले विद्यार्थियों से भिन्न होती है। आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी अपने परिवार के प्रेमपूर्ण और आत्मीय व्यवहार से दूर हो जाते हैं।

8. शैक्षिक निहितार्थ –

प्रस्तुत शोध द्वारा विद्यार्थियों के आवासीय वातावरण को उनके अनुरूप बनाये जाने में सफलता प्राप्त हो सकेंगी उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा संस्थानों में विभिन्न कार्यक्रमों तथा N.S.S. व NCC का संचालन कर विद्यार्थियों को उत्तरदायित्वों का निर्धारण कर उनमें मिलनसार गुणों का विकास किया जा सकेगा, विद्यार्थियों को भविष्य में रोजगार व शिक्षा के अवसरों से अवगत कराते हुए उनमें प्रतियोगिताओं में भाग लेने और उनमें सफलता हासिल करके समाज के सामने मिसाल पेश करना है। आवासीय विद्यालय में रहकर अपने जीवन को कुशलता पूर्वक प्रबंधित करने में समर्थ बनाया जा सकेगा। विद्यार्थियों के लिए सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करने से उनमें समूह के रूप में कार्य करने का सहकारिता की समझ विकसित करके उनके स्वभाव, सामाजिक विचारों और अभिवृत्ति को प्रभावित करके उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. जनजातीय क्षेत्री विकास विभाग (TAD)- (2022). एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (EMRS) की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट एवं सामाजिक प्रभाव विश्लेषण. उदयपुर : राजस्थान सरकार

2. जायसवाल, अर्चना. (2011). उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के सामाजिक , आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलबिध तथा मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन. इलाहाबाद : अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, शिक्षा संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ.सं.–71

3. नीति आयोग. (2022). राजस्थान के आकांक्षी जिलों में आवासीय शिक्षा की स्थिति और प्रशासनिक सुधार. नई दिल्ली : भारत सरकार

4. पाण्डेय, दीपेन्द्र कुमार. (2012). छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. छत्तीसगढ़ : शैक्षिक लघुशोध संकलन, SCERT

5. पाण्डेय, रामशकल. (2003). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ : आर लाल बुक डिपो

6. भार्गव, एस. (2018). Tribal education in Rajasthan : challenges in residential setup. नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स

7. मिश्रा, एम. (2013). शैक्षिक, उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम. शैलियाँ जनर्ल्स ऑफ एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च, पृ.सं.–143–147

8. राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद. (2021). सामाजिक समरसता एवं जीवन कौशल प्रशिक्षण मॉडयूल. जयपुर :

परिषद प्रकाशन, शिक्षा संकुल
9. राठौड़, ए. एवं नताकिया, पी. (2019). विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय के विद्यार्थियों द्वारा अधिकाम शैलियों को दी जाने वाली प्राथमिकताएँ. नई दिल्ली : संकल्प पब्लिकेशन
10. वर्मा, बी.पी. एवं शर्मा, आर. (2018). राजस्थान के आवासीय विद्यालयों में छात्रों की सामाजिक सहभागिता. जयपुर : राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
11. शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश. (2012). सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियाँ. जयपुर : पंचशील प्रकाशन
12. सिंह, आर. (2020). किशोर मनोविज्ञान और शैक्षिक परिवेश. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स
13. स्वामी, शिल्पा. (2015). ''उच्च प्राथमिक स्तर पर डे–बोर्डिंग व सामान्य विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक सांवेगिक तथा सामाजिक समायोजन का अध्ययन''. अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, शिक्षा संस्थान वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
14. त्रिपाठी, विनीता. (2011). आवासीय बच्चों की सामाजिक मिलनसारिता, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का उनके शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन. कानपुर : अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, शिक्षा संकाय, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, पृ.सं.–122
15. NUEPA. (2020). आवासीय विद्यालय प्रबंधन और छात्र मनोविज्ञान पर विशेष थीमेटिक पेपर्स. नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स

जर्नल्स –

1. कार्डिनिली, एल. (2004), कनविनिंग ऑफ कॉनसेप्ट मैप्स टू फोस्टर मिनीगफुल लर्निंग, एन इन्टर व्यूह विथ जे. डी. नॉवाक'' जनर्ल्स ऑफ केमिकल, 81 (9) 1303–1307
2. कालीन, ए. (2008) ए स्टेडी ऑफ इफैक्टिवनैस ऑफ कॉन्सेप्ट अटाइन्मेंट मॉडल ऑवर कन्वेशनल मैथड ऑफ टीचिंग साइंस इन रिलेशन टू एचीवमेंट एण्ड रैशनल, इन्टरनेशनल रिसर्च जनर्ल्स 2(5) 0947–832
3. गुप्ता, एस. (2019). A study of pee support systems Navodaya Vidyalaya of Rajasthan. Journal of India education (NCERT), Vol.-45, Issue-2
4. सिंह, बलवान (2018). ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन'' इन्टरनेशनल एजूकेशन एण्ड रिसर्च जर्नल, ISSN-2424-9916, Vol-04, Issue-09, Sept.2018.
5. सिंह, नीलू (2016). 'विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन इन्टरनेशनल जनर्ल्स ऑफ मल्टी डिसीप्लेनटरी एजूकेशन एण्ड रिसर्च ISSN-2235-4588, Vol.-01, Issue-02, April-2016, PP-31-34
6. IJRAR 19D2258/International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR). 2017 IJRAR June, 2017, Vol.-4, Issue-2 (E-ISSN-2348-1269, P-ISSN-2349-5138)
7. Journal of Advances and scholarly Research in Allied Education, Vol.-16, Issue-09, June-2019. ISSN-2230-7540
8. Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/Peer Review Research Journal) RNI No.-MPHIN/2013/60638, ISSN-2320-8767, E-ISSN-2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)-7.671 January to March 2024, E-Journal, Vol.-I, Issue-XLV
9. NCF (National Curriculum Farmework), Habitat and learning, 2nd edition, New Delhi : Tata Mc Graw Hill education, Rawat publishing house.
10. Rao, P. Madhava (2013) A comparative study of residential school students with non-residential school students with reference to achievement and intelligence, Paripex-Indian journal of research.

पत्र–पत्रिकाएँ –

1. सिंह, इन्द्र प्रकाश एवं दुबे, अजय कुमार (2024). उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन। आर्यावत शोध संस्थान पत्रिका
2. राठौड़, एम. एस. (2022). सामाजिक समयोजन : आवासीय बनाम गैर– आवासीय माध्यमिक विद्यालय'', भारतीय आधुनिक शिक्षा, NCERT, नई दिल्ली।
3. वर्मा, बी.पी. एवं शर्मा, आर. (2018). राजस्थान के आवासीय विद्यालयों में छात्रों की सामाजिक सहभागिता, राजस्थान बोर्ड जनर्ल्स ऑफ एजुकेशन, मा. शि. बोर्ड, अजमेर।

Impact of Academic Stress on the Personlity at Senior Secondary School Students



Dr. Shailja Dubey
M.Ed. Supervisor,
Assistant Professor,
Suresh Gyan Vihar University
Jaipur



Hitesh Kumar Rathore
M.Ed. (Scholar)
Suresh Gyan Vihar
University
Jaipur

ABSTRACT

Secondary education represents a pivotal phase in an individual's academic journey, laden with transformative experiences and critical educational milestones. However, the specter of stress casts a shadow over the academic landscape of many secondary school students, potentially jeopardizing their scholastic achievements and overall well-being. In an era characterized by escalating academic and social pressures, the consequences of stress are increasingly evident, affecting secondary school students in multifaceted ways, including their academic performance, cognitive abilities, and emotional equilibrium. The years spent in secondary school students into a domain of intricate learning, where they confront a complex blend of academic challenges, social dynamics, and personal growth. Amidst the demands of a challenging curriculum, standardized assessments, college aspirations and extracurricular pursuits secondary school students find themselves walking a tightrope between success and the lurking anxieties and stressors. a common mental health condition characterized by excessive apprehension and stress, the physiological response to external pressures that intertwine in intricate ways, undermining the scholastic pursuits of secondary students. Stress impair the cognitive functioning of secondary students, one of the primary avenues through which they impact academic achievement. Chronic stress and anxiety can disrupt concentration, impair memory and impede effective problem-solving skills that are essential components of the learning process. The net effect is a decline in test scores, lower academic grades, and an overarching underperformance academically.

Keywords: Senior secondary school, Academic Stress and Personlity

INTRODUCTION -

As the weight of pressure intensifies, students might become disinterested or demotivated, diluting their commitment to academic endeavors. The consequence is evident through heightened procrastination, increased absenteeism, and reduced participation in classroom activities. A noteworthy facet is the influence of stress on the social and emotional well-being of secondary school students. These emotional strains can lay the foundation for mental health issues, such as depression and social isolation, which further compound the challenges faced in the academic sphere. Students experiencing heightened stress may encounter difficulties in establishing and nurturing positive peer relationships, potentially resorting to risky behaviors or substance abuse - all factors contributing to a tangled web of academic hurdles. In this context, it is paramount to recognize the unique vulnerabilities of secondary students. This developmental phase is characterized by significant

neurobiological changes and evolving emotional regulation, leaving adolescents ill-equipped to manage their anxieties and stress effectively, making them even more susceptible to the academic perils that ensue. While the detrimental impacts of stress on secondary students' academic achievement are evident, it is similarly important to acknowledge that these challenges are not insurmountable. Collaborative efforts among schools, parents, and the broader community can pave the way for the implementation of strategies and interventions that address these issues, promoting the mental health and overall well-being of secondary school students. In conclusion, the intersection of stress with secondary students' Personlity is a prominent concern in the educational landscape. By appreciating the complexity of these interwoven factors, we can strive to create an environment that empowers secondary students to excel both academically and emotionally, laying the foundation for their future success and well-being.

The present study is an attempt to study Impact of Stress of Secondary School Students on their Personlity in Jaipur district in the context of gender, rural-urban settings and board. In this age when the adolescents are exposed to large amount of information and are bound by high sense of achievement and parental expectations, this becomes imperative to study their effect on students well-being. A high degree of stress which is developed in this backdrop and leave students emotionally weak suspectable to developing bad habits. This study is an attempt to explore this effect and suggests ways to cope with this scenario.

Academic Stress is the prime contributor to depression and psychological problems among students. Depression is significantly correlated with Academic Stress among

students. Sharma (2014) in his study found that groups of adolescents with high

Academic Stress exhibited more depression as compared to group of adolescents with low Academic Stress. Stress related psychological problems have been interest of doctors, researchers and academicians for long. Arun and Chavan (2009), from their research on school students, found that half the students studied by them had some sort of psychological problem. The psychological problems related to academic activities (their role as students), their Academic Performance (marks in examinations) or other problems related to studies. Students with academic problems and unsupportive environment at home perceived life as a burden and had higher rates of suicidal ideations. Depression and psychological problems, when present, creates a hindrance in learning environment and reduces Academic Performances.

Research has shown that Academic Stress is directly linked with the social status of students and atmosphere of their school. Students with the same level of cognitive and intellectual capacities perform differently due to differences in social, financial and residential status. The urban students have more academic resources like libraries, book stalls, career counseling centers, modern communication facilities, better educators to assist them etc. within their easy reach as compared to the rural students. Studies by Emmanuel, Adom and Solomon (2014) showed a significant difference in the level of Academic Performance of students based on locality of schools with schools in the urban areas performing better than schools in the rural areas. Pariat et. al. (2014) showed that there was a high correlation among social status, financial status, Academic Stress and Academic achievement of students. Their findings suggested that if students had high Academic Stress, they were unable to socialize. If students

had problems in socializing, their Academic Performance was affected.

Personality development of Student is a continuous, multidimensional and a two-way process. Every student is endowed with a unique combination of traits.

Their personality changes as she starts investing in different social roles across her life. Social investment theory also explains the transformational and stochastic factor that might contribute to personality development and does not preclude the existence or effect of genes on development, or the existence of moderate levels of continuity over time. The social investment principle states that investing in social institutions, such as age-graded social roles, is one of the driving mechanisms of personality development. According to Roberts, Wood, & Smith, (2004) three assumptions underlie this principle.

First, that people build identities by making psychological commitments to social institutions in the form of social roles, such as work, marriage, family, and community (Roberts, Wood, & Smith, 2004). These roles can be seen as parallel to the expectations of a social clock (Helson, Mitchell, & Moane, Personality and patterns of adherence and non adherence to social clock, 1984) Such social roles are viewed as societal expectations at a given age. In India, from childhood women are trained to fulfill the social expectations of a social clock. If they are only home makers they have psychological commitments for their family and community; and if they are also employed then they have additional commitment for their work.

Introduction Their investment in different social roles and different level of commitment to social institutions explain the pattern of individual differences in personality.

Secondly, these social roles come with their own set of expectations and contingencies that promote a reward structure that calls for becoming more socially dominant, agreeable, conscientious, and less neurotic (Roberts, Wood, & Smith, 2004). Employed women's exposure, interaction and experiences provide interface for learning and change. Reward in terms of income (Khan & Fehmina, 2013a;

Fehmina & Khan, 2013b), life satisfaction (Hudson, Roberts, & Lodi-Smith, 2012) and well being (Marzuki, 2013) are gained by them. It also helps to improve their self-esteem and self-perception. Even, change within family environment is observed (Khan & Fehmina, 2013a).

Third, that the dominant pattern of role investments seen in quasi-universal tasks of social living (Roberts, Wood, & Smith, 2004), such as developing a career and career identity (Helson, Kwan, John, & Jones, 2002) helps to explain the normative patterns of personality change that result from role investments (Roberts, Wood, & Smith, 2004). Further, social roles play a significant role in correlated changes between personality traits (Klimstra, Bleidorn, Asendorpf, Aken, & Denissen, 2013; Hudson, Roberts, & Lodi-Smith, 2012; Hudson, Roberts, & LodiSmith, 2012) of employed women. The extent of investment in their social roles is positively correlated to the five factor traits (Lodi & Roberts, 2007) of employed women. Even changes across their life span are malleable and associated with social investment at work (Hudson, Roberts, & Lodi-Smith, 2012). Specifically, with respect to women employment, change in family income and expenditure pattern,

Introduction attitude towards market and non-market work, autonomy and child development (Fehmina & Khan, 2013b) affects personality traits of women.

According to Allport (1937): "Personality is the dynamic organization within the individual of those

psychophysical systems that determine his unique personlity to his environment." Eysenck (1970) defined personality as: "Personality is the relatively stable organization of a person's motivational dispositions arising from the interaction between biological drives and social and physical environment."

Statement of the Problem

"Impact of Academic Stress on the Personlity at Senior Secondary School Students."

Population and sample

Population or universe means, the entire mass of observations, which is the present group in which a sample is to be formed. The sample observations provide only an estimate of the population characteristics. In the present study, All the secondary level students, i.e. Government, and private schools existing in the district Jaipur in Rajasthan constituted the population of the present study.

A sample is a small portion of a population selected for observation and analysis. It has been accepted to ensure reliability, validity and accurate conclusion of the investigation should be based on the study of an adequate sample. sample of the study: - In the present study, sample consisted of 200 secondary school students. These students are taken from various areas of Rural (100) and Urban (100) schools of secondary level in Jaipur, Rajasthan.

Research Method

Descriptive research serves to capture information about the current state of phenomena, aiming to answer the question, "What exists?" in terms of variables or conditions within a given situation. This type of research employs various methods, including surveys to portray the status quo, comparative studies to explore relationships between variables, and developmental studies to track changes over time.

Descriptive research, also known as statistical research, furnishes data about the population or universe under examination. However, its scope is limited to describing the "who, what, when, where, and how" of a situation, without delving into the causative factors behind it. Therefore, descriptive research is favored when the goal is to provide a systematic and factually accurate depiction of a phenomenon. It yields insights into the frequency of occurrences, enabling statistical analyses such as determining average occurrences or central tendencies.

Objectives of the study

1. To study the impact of Stress on personlity in students studying in rural and urban schools at secondary level.

Hypotheses of the study

1. There is no significant difference the impact of Stress on their personlity between rural and urban Students studying at secondary level.

Tools

1. Depression and Stress Scale developed by Pallavi Bhatnagar.

2. Personlity Inventory (2017) A.K.P. Sinha & R.P. Singh

Data Analyses

Sample analysis of Stress and Personlity

Table 1

Variables	N	Mean	SD	SED	z value	df	Significance	Interpretation
stress	460	39.52	4.43	0.696	9.56	458	0.05 = 1.962	Hypothesis Rejected
Personlity	460	32.86	1.636	0.01 =2.581				

Interpretation: From the above table (4.8), the following aspects have been observed:

The total quantity of secondary school students is 460. The mean value of Anxiety and stress is 39.52 and personlity is 32.86 The standard deviation

value is 4.43 of Anxiety and Stress and Personlity is 1.636, SED is 0.696. z-value is 9.56.

Result- As per table (4.8), df is 458. z-value is larger than table value at 0.05 significance level, the result indicates that all secondary level school students fall under the above-average level in their school personlity. Hence the hypothesis is rejected.

FINDING

1. Interestingly, academic stress was found to have both positive and negative effects on performance, depending on its intensity. While it can sometimes enhance performance, excessive stress levels may hinder it.

3. In terms of personlity, academic stress significantly impacted the overall personlity of female students but not male students. Moreover, components such as social, educational and emotional personlity were notably influenced by anxiety and stress. Regarding emotional personlity among females, although the F value was high, it was not statistically significant, indicating a nuanced relationship between academic stress and emotional well-being.

References

1. Adoula and Kamble (2009). A study focusing on the predictors of adjustment among high school students, including academic stress, achievement motivation, and academic achievement. Asian Journal of Psychology and Education, Volume 42 (7-8), 25-32.

2. Akeela, P., & Ashok, H.S. (2018). A Comparative Study on Academic Stress among Government and Private Higher Secondary Students. Journal of Advanced and Scholarly Researches in Allied Education (JASRAE), 14(2), 53-56.

3. Alam, K., & Haider, U. K. (2018). Academic stress and academic performance among higher secondary students: A gender Analysis. International Journal of Creative Research Thoughts, 6(1), 687-692.

4. Alam, M. (2016). "Social Adjustment and Social Maturity as Predictors of Academic Achievement among Adolescents" International Journal of Informative and Futuristic

Research, 3 (12), 4495-4507.

5. Andrew, B., & Wilding, J. M. (2004). Relation of depression and anxiety to life Stress and achievement in students. British Journal of Psychology, 95: 509-521.

6. Archer, J. A. (1986). Stress management: Evaluating a preventive approach for college students. Journal of American College Health, 34, 157-160.

Personality Traits as Predictors of Altruistic Tendencies among College Learners



Dr. Bhawna Kulshrestha
M.Ed. Supervisor, Assistant Professor, Gyan Vihar School of Education, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur



Arvind Sharma
M.Ed. Scholar, Gyan Vihar School of Education, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur, India

Abstract

Altruistic behaviour represents voluntary actions performed to benefit others without expecting personal gain, and it forms an essential part of healthy social functioning among youth. Personality traits play a central role in shaping such prosocial tendencies, especially within academic environments where students frequently engage in interpersonal interactions. The present study examines the level of altruistic behaviour among college students of Jaipur district and explores its association with selected dimensions of personality. A total sample of 100 students was drawn through stratified sampling, consisting of 50 students from government colleges and 50 from private colleges, equally divided into boys and girls. Self-constructed altruism scale and standardized personality inventory were used to collect data. Statistical analysis was carried out using mean, standard deviation, and correlation technique. The findings indicate moderate altruistic tendencies among the students, with minor variations based on institutional type and gender, although these differences were statistically insignificant. Furthermore, the study reveals a weak but positive relationship between altruism and personality traits, suggesting that students with more stable, socially oriented personalities tend to exhibit higher prosocial behaviours. The results highlight the importance of developing personality-based interventions in educational settings to promote empathy, cooperation, and social responsibility. The study contributes to the field by offering empirical evidence from an Indian metropolitan context and provides directions for future research involving larger samples and additional psychological variables.

Keywords: Altruism, Personality Development, Prosocial Traits and Youth Psychology.

Introduction

Altruism, which refers to voluntary acts intended to benefit others without expecting rewards, has long been recognized as a fundamental component of social and moral development. In higher education institutions, altruistic behavior is considered essential for fostering mutual support, academic collaboration, and emotional understanding among young adults. College students regularly engage in activities that involve cooperation, peer learning, conflict resolution, and social service, providing a suitable environment for observing altruistic tendencies.

Personality plays a central role in determining how individuals interpret social situations and respond to the needs of others. Traits such as empathy, agreeableness, openness, emotional regulation, and interpersonal sensitivity influence whether students demonstrate compassionate behavior or remain indifferent in social settings. In the developmental stage of late adolescence and early adulthood, personality becomes more stable, and altruistic tendencies become more predictable through psychological traits.

Jaipur District, a blend of urban and semi-urban educational environments, consists of government and private colleges with diverse academic environments, socio-economic compositions, and cultural practices. Students from rural and urban backgrounds often interact in these institutions, leading to a mixture of value systems and social expectations. These varied contexts may influence both personality development and altruistic behavior differently.

Studies in social psychology emphasize that students with strong emotional stability and a healthy self-concept tend to engage more actively in prosocial activities such as volunteering, mentoring peers, participating in cleanliness campaigns, and contributing to community welfare. On the contrary, low emotional adjustment or poor interpersonal skills are often associated with reduced helping behavior.

Given these theoretical assumptions, it becomes meaningful to examine whether a measurable association exists between personality traits and altruistic tendencies among college students of Jaipur District. Understanding this relationship may help educational institutions design personality enrichment programs, counseling interventions, and value-oriented activities that encourage positive social behavior among youth.

This research paper explores whether personality traits serve as significant predictors of altruism among college learners in Jaipur District. It adopts a quantitative approach to analyze the nature of association between the two constructs and highlights their implications for youth development.

Review of Literature

Indian Studies

1. Dixit (2017) investigated motivational factors behind altruistic actions among university students and found that personality traits strongly shaped prosocial decision-making.

2. Mishra & Gupta (2019) observed that interpersonal sensitivity positively predicted helping behavior among students pursuing higher education.

3. Saxena (2020) concluded that students with higher self-confidence and emotional balancing tendencies exhibited stronger altruistic attitudes.

4. Jain (2021) found that assertiveness and social adaptability were significant determinants of altruistic volunteering among college youth.

5. Pillai (2022) noted that personality development programs enhanced compassionate and supportive behavior among learners in metropolitan colleges.

International Studies

6. Roberts (2018) reported that emotional stability was directly linked with altruistic behavior in American undergraduate students.

7. Hughes (2019) found that young adults in Australia with high empathy scores demonstrated consistent prosocial actions.

8. Kim & Park (2020) revealed that personality structure significantly influenced peer-support behaviors among Korean university students.

9. O'Connor (2021) documented a positive relationship between social responsibility traits and helping tendencies among British students.

10. Nicholas (2023) concluded that personality-based interventions significantly promoted prosocial behavior in European college populations.

Objective of the Study

1. To determine whether personality traits significantly influence altruistic tendencies among college students in Jaipur District.

Hypothesis of the Study

H_1: There is no significant influence of personality traits on altruistic tendencies among college students.

Methodology :

Population

College students enrolled in Jaipur District.

Sample

100 students:

- 50 from government colleges

- 50 from private colleges

- Balanced by gender and location

Tools Used

- Altruistic Behavior Scale

- Personality Trait Assessment Scale

Statistical Technique

- Pearson's Correlation

- Mean & SD

Data Analysis

Table 1:

Correlation Between Personality Traits and Altruistic Tendencies

Interpretation

o The correlation coefficient of 0.38 shows a moderate positive association.

o The p-value is statistically significant.

o The null hypothesis is rejected.

o Personality influences altruistic tendencies among college students.

Graph:1

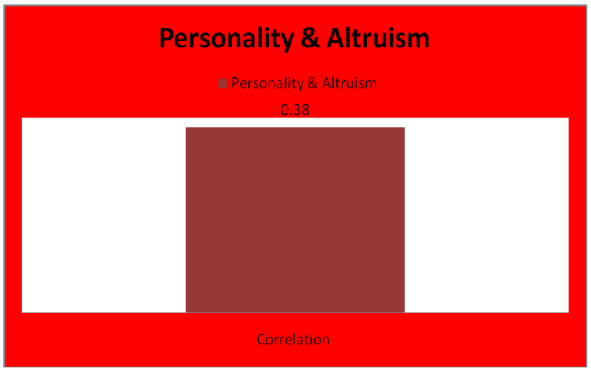
Showing Correlation Between Personality & Altruism

Variables	N	Correlation (r)	Significance (p)
Personality & Altruism	100	0.38	0.001**

Graph Interpretation

o The bar height represents the strength of the relationship.

o The positive value shows that students with better



4. Personality assessment can help predict prosocial involvement among youth.

Conclusion

This research demonstrates that personality traits significantly contribute to altruistic behavior among college students of Jaipur District. Individuals with stable emotional profiles, healthy self-concept, and strong interpersonal skills display higher prosocial motivation and cooperative behavior. The findings highlight the importance of integrating personality development workshops, peer-support initiatives, and value-based programs in higher education settings to strengthen altruism among emerging adults.

References

o Dixit, R. (2017). Personality Determinants of Prosocial Behavior.

o Saxena, P. (2020). Youth Personality and Altruism.

o Roberts, J. (2018). Prosocial Behavior in American College Students.

o Kim, S. (2020). Personality Factors and Peer Support Among Youth.

o Nicholas, G. (2023). Predictors of Prosocial Engagement in Europe.

Difficulties in Understanding Accounting Concepts among Senior Secondary Commerce Students

Dr. Shruti Tiwari
M.Ed. Supervisor, Pricipal, Gyan Vihar School of Education, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur

Dr. Beena Sharma
M.Ed. Co-Supervisor, Assistant Professor, Gyan Vihar School of Education, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur

Priyanka Jhalani
M.Ed. Scholar, Gyan Vihar School of Education, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur, India

Abstract

Commerce education at the senior secondary level aims to provide students with knowledge related to business activities, financial management, and accounting practices. Among the different subjects included in the commerce curriculum, accountancy is considered one of the most essential components. However, a considerable number of students encounter difficulties while studying accounting concepts. The present research paper focuses on identifying the difficulties faced by senior secondary commerce students in understanding accounting concepts. The study was conducted on a sample of 100 students studying in the commerce stream. A questionnaire was used as the primary tool for data collection. The responses obtained from students were analyzed using percentage analysis. The findings reveal that many students experience conceptual problems in accountancy due to insufficient practice, lack of clarity in basic principles, and limited engagement during classroom instruction. The study emphasizes the importance of adopting effective teaching approaches and improving students' learning strategies.

Keywords: Accountancy learning, commerce education, conceptual difficulty, academic performance, senior secondary students.

1. Introduction

Commerce education plays an important role in preparing students for careers related to trade, finance, banking, and management. At the senior secondary level, commerce subjects provide fundamental knowledge about economic activities and business practices. Accountancy is one of the major subjects taught in the commerce stream and is considered the backbone of financial studies.

The study of accountancy enables students to understand the systematic process of recording, classifying, and summarizing financial transactions. It also helps them learn how financial statements are prepared and interpreted. These skills are essential for students who intend to pursue higher education in commerce, management, or finance.

Despite its academic importance, many students find accountancy difficult to comprehend. The subject involves various rules, procedures, and calculations that require careful understanding and consistent practice. Students who lack clarity about accounting principles may struggle while solving numerical problems or preparing financial statements.

Learning difficulties in accountancy may arise from different sources. Some students experience confusion regarding accounting terminology, while others face problems in applying accounting rules correctly. In certain cases, teaching methods and classroom environment may also influence students' understanding of the subject.

Another factor that affects students' learning is their

study approach. Students who regularly revise concepts and practice accounting exercises generally perform better than those who rely only on classroom explanations.

Considering these aspects, it becomes necessary to examine the difficulties experienced by students while understanding accounting concepts. The present study attempts to explore this issue among senior secondary commerce students.

2. Objective of the Study

1. To examine whether senior secondary commerce students experience difficulty in understanding accounting concepts.

3. Hypothesis of the Study

1. H?: Senior secondary commerce students face difficulty in understanding basic accounting concepts.

4. Methodology of the Study

4.1 Research Method

The survey method was used for conducting the present research. This method is useful for collecting information regarding students' perceptions and experiences related to a particular subject.

4.2 Sample

The study was conducted on 100 senior secondary commerce students selected from Jaipur. These students were studying accountancy as a compulsory subject in the commerce stream.

4.3 Research Tool

A questionnaire was prepared to collect responses from students. The questionnaire contained statements related to conceptual understanding of accountancy.

Students were asked to indicate their responses on the following scale:

- Strongly Agree
- Agree
- Neutral
- Disagree
- Strongly Disagree

4.4 Data Analysis

The responses collected from the students were analyzed using percentage analysis. The results were also represented with the help of a bar graph to provide a clear visual understanding.

5. Data Analysis and Interpretation

The responses of students regarding difficulty in understanding accounting concepts are presented in the following table.

Table 1

Students' responses regarding difficulty in understanding accounting concepts

Response Category	Number of Students	Percentage
Strongly Agree	32	32%
Agree	29	29%
Neutral	18	18%
Disagree	13	13%
Strongly Disagree	8	8%
Total	**100**	**100%**

The data presented in the table shows that a majority of students encounter difficulty in understanding accounting concepts. Thirty-two percent of the students strongly agreed that accounting concepts are difficult to understand, while twenty-nine percent agreed with the statement.

This indicates that 61 percent of the respondents believe that accounting concepts are difficult. Eighteen percent of the students expressed neutral opinions, suggesting that they sometimes experience confusion but do not always find the subject difficult.

A relatively smaller proportion of students reported that they do not experience difficulty in understanding accounting concepts. Thirteen

percent disagreed with the statement, while eight percent strongly disagreed.

These findings suggest that conceptual understanding remains a challenge for many students studying accountancy at the senior secondary level.

6. Discussion

The findings of the study indicate that many senior secondary commerce students face conceptual difficulties while studying accountancy. This situation may arise due to several academic and instructional factors.

One important reason is the abstract nature of accounting principles. Concepts such as journal entries, ledger posting, and financial statement preparation require logical understanding and careful application. Students who do not fully grasp these principles may struggle when solving accounting problems.

Another factor influencing learning is the lack of consistent practice. Accountancy requires repeated practice in order to master accounting procedures. Without adequate exercises, students may forget important steps involved in solving problems.

Teaching strategies also play a significant role in facilitating effective learning. When teachers explain accounting concepts using real-life examples, illustrations, and step-by-step explanations, students tend to understand the subject more easily.

The learning environment of the classroom also affects students' engagement with the subject. Active participation, discussion, and practical demonstrations can improve students' comprehension.

The results of the present study highlight the need for better instructional support and effective study habits in order to reduce learning difficulties in accountancy.

7. Conclusion

The present research paper examined the difficulties faced by senior secondary commerce students in understanding accounting concepts. The analysis of data collected from 100 students indicates that a majority of them experience conceptual challenges while studying accountancy.

More than sixty percent of the respondents reported that accounting concepts are difficult to understand. This finding supports the research hypothesis and suggests that conceptual clarity remains an important issue in commerce education.

Teachers should adopt teaching methods that focus on conceptual explanation and practical application. Providing students with additional practice exercises and encouraging regular revision can also improve their understanding.

Students should develop systematic study habits and devote sufficient time to practicing accounting problems. With appropriate teaching strategies and consistent effort, the conceptual difficulties experienced by students can be minimized.

References

1. Aggarwal, J. C. (2010). Essentials of Educational Psychology. New Delhi: Vikas Publishing House.

2. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2006). Research in Education. New Delhi: Prentice Hall of India.

3. Kothari, C. R. (2004). Research Methodology: Methods and Techniques. New Delhi: New Age International Publishers.

4. Maheshwari, S. N. (2012). Financial Accounting. New Delhi: Vikas Publishing House.

5. Sharma, R. A. (2011). Educational Research and Statistics. Meerut: Surya Publications.

हिंदी उपन्यासों में आदिवासी



डॉ ललित कुमार श्रीमाली
(शोध निर्देशक) हिन्दी विभाग
जनार्दन राय नागर
राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)
उदयपुर (राज.)



सतीश चंद्र जोशी
(शोधार्थी) हिन्दी विभाग
जनार्दन राय नागर
राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)
उदयपुर (राज.)

शोध सारांश :

'आदिवासी सहित्य' या 'हिंदी साहित्य में आदिवासी' के संदर्भ में हमें नवें दशक के अंत में हिंदी साहित्य में जो परिवर्तन आया कि साहित्य का नामकरण और विभाजन भाषा, समय और प्रवृत्तियों की केन्द्रीय महत्ता के आधार पर न होकर साहित्य वर्णगत विशेषण के रूप में वर्ग विशेषण के विभ्रम के साथ आया। जैसे दलित साहित्य। इस शब्द में पीड़ित, वंचित, शोषित, मजदूर आदि के अतिरिक्त जातिगत अस्मिता अधिक है। जिस प्रकार दलित साहित्य नामकरण हुआ उसी प्रकार आज आदिवासी साहित्य की चर्चा है। जो समाज वर्षों से उपेक्षित रहा, उसका साहित्य उपेक्षित रहा, उस समाज का परम्परागत ज्ञान जो उसकी अपनी भाषा में हैं, उस समाज के जीवन संघर्ष, जीवनानुभव और सहज अभिव्यक्ति जिस साहित्य में मौजूद है। वह आदिवासी साहित्य है। इस साहित्य का अध्ययन उनके समग्र अस्मिता शास्त्र का अध्ययन हैं हिंदी साहित्य में आदिवासी लेखकों का अभाव या उनकी उपस्थिति भले ही नगण्य हो लेकिन हिंदी कथा साहित्य में इनकी उपस्थिति हमेशा रही है।

पारिभाषिक शब्दावली :– आदिवासी,अस्मिता,साहित्य,

हिंदी उपन्यासों में भी आदिवासी, आदिवासियों से जुड़े महत्त्वपूर्ण मुद्दे, ग्लॉबलाइजेशन के कारण हुए उदारीकरण से इन पर पड़े प्रभावों, भारतीय समाज में इनकी उपस्थिति व योगदान जैसे उपाजीव्य लेकर उपन्यासों की रचना हिंदी साहित्य में भी हुई है। इन उपन्यासों में राजस्थान, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर के क्षेत्र सभी का जीवन्त वर्णन हमें मिलता है। हमारे यहाँ परिस्थितियों में परिवर्तन जितनी तेजी से विगत दो दशकों में हुआ है। उतना परिवर्तन विगत हजारों वर्षों में भी नहीं हुआ था। इसकी कारण औद्योगीकरण ठेठ जंगलों तक पहुँच गया है, और वहाँ रहने वाले आदिवासी भी इससे प्रभावित होने लगे है। इस औद्योगीकरण से आदिवासियों की अस्मिता खतरे में पड़ गई है और वे अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत है। कथाकार 'रणेन्द्र' का उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' वस्तुतः आदिवासियों–वनवासियों के जीवन का संक्षिप्त सारांश है। शताब्दियों सें संस्कृति और सभ्यता का पता नहीं किस छन्नी से छन कर अवशिष्ट के रूप में जीवित रहने वाले असुर समुदाय की गाथा पूरी प्रामाणिकता व संवेदनशीलता के साथ रणेन्द्र ने लिखी है। आग और धातु की खोज करने वाली, धातु पिघलाकर उसे आकार देने वाली कारीगर असुर जाति को सभ्यता, संस्कृति, मिथक और मनुष्यता सबने मारा है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' असुर समुदाय के अनवरत जीवन संघर्ष का दस्तावेज है। पुष्पपाल सिंह लिखते है– ''बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने खनन क्षेत्रों का दोहन कर समृद्धि और विकास का जो नया मॉडल रचा है जन–सामान्य के लिए जो नरक बनाया है उसकी वास्तविकताओं से परिचित कराता है यह उपन्यास। उपन्यास में वेदांग और शिंडल्को जैसी कम्पनियों ने जिस प्रकार एक आदिवासी क्षेत्र की मूल 'असुर संस्कृति' को विस्थापित किया है, उसे 'राहों से कुराहों' पर डाला है, उन सबका चित्रण इस उपन्यास में अत्यंत कुशलता से किया गया है।''(नया सुर–असुर संग्राम, इंडिया टुडे, (नई दिल्ली), 24

मार्च 2010, पृ. 71)सुर–असुर संग्राम की जो लड़ाई वैदिक युग में शुरू हुई थी, हजार–हजार इंद्र जिसे अंजाम नहीं दे सकते थे, ग्लोबल गाँव के देवताओं ने यह मुकाम पा लिया था। इन कंपनियों ने वहाँ नई 'सिल्वर सिटी ऑफ इंडिया' सृजित कर डाली है, जो किसी भी प्रकार धरती पर स्वर्ग के स्वप्न संसार–सी है। दूसरी ओर बंद खदानों के विशाल गड्ढों का पोखरों में तब्दील होना और उनमें सूअर की तरह कीचड़ में लौटते हमारे बच्चे, कम्पनियों के गेस्ट हाउसों में छत्तीस प्रकार के व्यंजन और यहाँ के मूल निवासियों के लिए मकई का घट्टा खाने की विवशता। यह इक्कीसवीं सदी का भयावह सच है कि वैश्वीकरण ने किस प्रकार वहाँ की समस्त प्राकृतिक सम्पदाओं पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर असुर जनजातियों को नारकीय स्थितियों में डाल दिया है। इन सभी स्थितियों का ऐतिहासिक और मिथकीय परिप्रेक्ष्य में चित्रण उपन्यास में हुआ है। यह उपन्यास झारखंड के लोक जीवन से जुड़े चित्रों को भी गहरे रंग के साथ चित्रित करता है। पुष्पपाल सिंह लिखते हैं– ''किस प्रकार सन 1607 में अमेरिका के वर्जीनिया प्रांत में अंग्रेजों ने जेम्सटाउन नामक पहली बस्ती बसा कर वहाँ के मूल निवासी रेड इंडियन्स को धकेल कर जिस प्रकार सफाया कर दिया, उसका वर्णन प्रथम बार प्रस्तुत कर उपन्यास अपने इस आधार को दृढ़ बनाता है कि इसी प्रकार यहाँ कोयला बीघा के भौंरापाट में जनजातीय संस्कृति और जीवन शैली को समाप्त कर उन्हें भूमंडलीकरण का दानव पूरी तरह लील रहा है। इस क्षेत्र में बॉक्साइट की खानों को अपने सोने के रूप में तब्दील करती कंपनियाँ यहाँ की धरती और इंसान दोनों को ही पूरा खोखला बना रही हैं। अपने हितों के लिए इन कंपनियों ने इस क्षेत्र को अपराध भ्रष्टाचार, कदाचार का अड्डा बना दिया है।''(नया सुर–असुर संग्राम, इंडिया टुडे, (नई दिल्ली), 24 मार्च 2010, पृ. 71) राजनीतिज्ञों और अफसरशाही की मिलीभगत ने यहाँ बाहुबलियों की एक अलग फौज ही खड़ी कर दी है। यहाँ की बहू–बेटियों को अफसरों के बंगलों पर काम करने के बहाने कंपनियों के गेस्ट हाउसों में नेताओं और अफसरों के बिस्तर गर्म करने के लिए धकेला जा रहा है। ताकि खनन कार्य अवैध रूप से निरन्तर चलता रहे। सरकारी संस्थानों के लोग चाँदी काटते रहे। पुष्पपाल सिंह आगे लिखते हैं– ''वहाँ हो रहे अत्याचारों के खिलाफ वहाँ का युवा वर्ग लामबंद होने की कोशिश करता है जिसका नेतृत्व कथानायक स्कूल मास्टर, लालचन दा, ललिता दी, रुमझुम, बालचन चाचा जैसे लोग कर रहे हैं। पास के गाँव कनारी के नवयुवक संघ के साथी भी इस लड़ाई में उनका साथ देते है। किंतु कंपनियाँ किस प्रकार इस लड़ाई को निर्दयतापूर्वक कुचल डालती हैं, इसका भयावह यथार्थ पाठक को भीतर तक दहला देता है।''(नया सुर–असुर संग्राम, इंडिया टुडे, (नई दिल्ली), 24 मार्च 2010, पृ. 71)इस उपन्यास में झारखंड के 'असुर' नामक आदिवासी समुदाय की अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई है। मैनेजर पांडेय लिखते हैं– ''ग्लोबल गाँव के देवता' एक ऐसा उपन्यास है जिसमें भारत के, विशेष रूप से झारखंड के एक आदिवासी समुदाय का अस्तित्व, आत्मसम्मान और अस्मिता की रक्षा के लिए लंबे संघर्ष और लगातार मिटते जाने की प्रक्रिया का संवेदनशील चित्रण है।''(यथार्थ से मिथक बनते एक समुदाय की व्यथा कथा, नया ज्ञानोदय (नई दिल्ली), मार्च 2010, पृ. 13) इस उपन्यास के माध्यम से अपने जंगल, जमीन, और जीवन को आक्रमणकारियों से बचाने के लिए आदिवासियों के हजारों वर्षों का संघर्ष हमारे सामने आता है। जो कि एक इतिहास है। वैदिक साहित्य से शुरू होकर पुराणों तक निर्मित असुरों की छवि प्रभुत्वशाली सत्ताओं के कारनामों का परिणाम है। सत्ता में बैठे लोग जिनका विनाश करना चाहते है उन्हें इसी भाँति असुरों की तरह प्रचारित करते है फिर उनकी जमीन तथा जीवन को अपने कब्जे में ले लेते है। भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में यही प्रक्रिया अपनाई जाती है। भारत में यह प्रक्रिया वैदिक काल से आज तक चल रही है तो अमेरिका में कोलम्बस के समय से ओबामा तक। यह प्रक्रिया बौद्धिक साम्राज्यवाद का एक हिस्सा है जो भौतिक साम्राज्यवाद के आगे–आगे चलता है। भारत में भी जब–जब शक्तिशाली सम्राटों और साम्राज्यों का उदय हुआ है। तब–तब आदिवासियों के जंगल, जमीन और जीवन पर

सांघातिक आक्रमण हुए है। और इतिहास में ऐसे संघर्ष का आरम्भ वैदिक काल में तब से माना जाता है जब इंद्र ने वृत्रासुर का वध किया था। अतः आदिवासियों का सभ्य माने जाने वाले शासकों से संघर्ष वैदिक काल से चला आ रहा है। इस उपन्यास में जिक्र आता है कि असुरों ने आग की खोज की, उन्होंने धरती से कच्चा लोहा निकाला और उसे पिघलाकर उससे तरह–तरह के हथियार और औजार बनाने में कुशलता विकसित की इसलिए उन्हें आर्यों ने मायावी तथा राक्षस कहना शुरू किया। उपन्यास में यह भी बताया गया है कि सप्तसिंधु से खदेड़े जाने के बाद असुर लम्बे समय तक इस देश के मैदानी भागों में रहे ही नहीं बल्कि राज भी किया। आर्यों का संघर्ष केवल वैदिक काल तक ही या महाकाव्यकाल तक ही सीमित न था। महान सम्राट अशोक के समय में भी जंगल के निवासियों पर आक्रमण की जानकारी हमें प्राप्त होती है। मैनेजर पांडेय लिखते है, ''राज्य का जंगलों पर कब्जा, उससे आदिवासियों की तबाही और उस सबका आदिवासियों द्वारा प्रतिरोध ब्रिटिश उपनिवेशवाद के परिवेश में भी जारी था। उपनिवेशवादी सत्ता लोभ और लूट के इरादों से जंगलों को हथियाने और उसका विरोध करने वाले आदिवासियों को बदमाश, हिंसक, अर्द्ध बर्बर, अधार्मिक और असभ्य कहते थे। उन्होंने लूट की प्रक्रिया को अधिक व्यापक बनाने के लिए मैदानी भागों से लोगों को लाकर जंगलों के आस–पास बसाना शुरू किया ताकि उनके सहयोग और समर्थन से जंगल के संसाधनों का शोषण और आदिवासियो का दमन संभव हो। इन सबके परिणामस्वरूप अनेक आदिवासी विद्रोह हुए। प्रायः पराजित व्यक्ति, समुदाय, समाज और विजेताओं की घृणा का पात्र होता है, इसलिए सन् 1857 के महाविद्रोह के दमन के बाद अंग्रेजों ने आदिवासियों के दमन की प्रक्रिया पहले से अधिक उग्ररूप में तीव्र की। सन् 1871 में अपराधी जनजाति कानून बना जिसके अनुसार सैकड़ों जनजातियाँ जन्म से अपराधी मान ली गई और उनके खिलाफ दमन का काम ब्रिटिश सत्ता का कर्त्तव्य बन गया। आजादी के बाद भारत की केंद्रीय सरकारों ने अंग्रेजों से केवल सत्ता ही नही पायी, उसके साथ शासन करने का ढंग भी सीखा, इसलिए आदिवासियों का शोषण और दमन पहले की तरह आज भी चल रहा है।''(यथार्थ से मिथक बनते एक समुदाय की व्यथा कथा, नया ज्ञानोदय (नई दिल्ली), मार्च 2010, पृ. 14) पिछले दो दशकों से भूमंडलीकरण के साथ भारत में भी ग्लोबल विलेज या ग्लोबल गाँव की धारणा आई, इस धारणा के अनुसार यह माना जा रहा है कि सारा विश्व एक गाँव बन गया है। ग्लोबल गाँव के रूप में देशी–विदेशी का कॉकटेल विचारों का विलक्षण नशा पैदा कर रहा है। एक वैश्विक संस्कृति का जन्म हो रहा है। व्यक्ति और समाज के जीवन के हर प्रसंग में देशी–विदेशी का फर्क मिट गया हैं लोभ और लूट से संचालित पूँजीवाद को ग्लॉबलाइजेशन के समय में भारत की प्रकृति और सम्पत्ति को लूटने के लिए खुली छूट मिली हुई है। प्रायः प्राकृतिक खनिज पदार्थ सबसे अधिक उन्हीं जंगलों में या वहाँ पर ही है, जहाँ आदिवासी रहते है। इसी कारण से आदिवासियों की सबसे बड़ी चिन्ता उनकी अस्मिता की चिंता है क्योंकि उनकी जमीन और जिन्दगी खतरे में है। उनकी बेटियाँ उनसे छीनी जा रही हैं इस उपन्यास में ग्लोबल गाँव के दो देवताओं का उल्लेख हैं पहला विदेशी कंपनी 'वेदांग', ग्लोबल गाँव का बड़ा देवता जिसका नाम देशी है। दूसरा देवता 'टाटा', जिसे असुर समुदाय के लोहा गलाने और औजार बनाने के हुनर का अंत कर दिया है। इसीलिए असुर यह मानते है कि टाटा कम्पनी ने उसका जो विनाश किया है वह असुर जाति के पूरी इतिहास की सबसे बड़ी हार है। तभी उपन्यासकार ने लिखा है कि जो लड़ाई वैदिक युग से चली आ रही है उसे इन्द्र जैसे हजारों सम्राट अंजाम नहीं दे सके थे। ग्लोबल गाँव के देवताओं ने उस मुकाम को पा लिया है। ऐसा आज की पूँजीवादी व्यवस्था के कारण ही संभव हो पाया है। जो अपने प्रमुख केंद्र अमेरीका से संचालित होती है। प्राचीन समय में आर्य देवता असुरों की हत्या को धर्म मानते थे, लेकिन ग्लोबल गाँव के देवता असुरों व अन्य आदिवासियों को अपने विस्तार के रास्ते की प्रमुख बाधा मानते है।

उपन्यास की कथा का केंद्र भले ही उपन्यासकार ने

झारखंड के कीकट क्षेत्र के असुर समुदाय के जीवन को रखा है, लेकिन वह जानता है कि जब से भारत में पूँजीवाद का भूमंडलीकरण आया है तब से पूरे देश के आदिवासियों की अस्मिता खतरे में है। इसलिए वे सभी आत्मरक्षा के लिए लड़ रहे है। अतः उपन्यास में छत्तीसगढ़, मणिपुर, केरल, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के आदिवासियों के संघर्ष के संकेत है। मैनेजर पाण्डेय लिखते है– ''आज आदिवासी जिस विकराल संकट का सामना कर रहे है उसका मूल कारण है राष्ट्र–राज्य की अपार ताकत और आतंककारी हिंसक प्रवृत्ति। यद्यपि भूमंडलीकरण की विचारधारा के रूप में जो उत्तर आधुनिकतावाद आया उसने यह घोषणा की थी कि राष्ट्र–राज्य का अन्त हो गया है, लेकिन वास्तविकता यह है कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को सफल बनाने और उसका विरोध करने वाली हर कोशिश को कुचलने के लिए राष्ट्र–राज्य कटिबद्ध है, भारत में और सारी दुनिया में।''(यथार्थ से मिथक बनते एक समुदाय की व्यथा कथा, नया ज्ञानोदय (नई दिल्ली), मार्च 2010, पृ. 14–15) तभी उपन्यासकार, उपन्यास के एक पात्र के माध्यम से सोचता है कि राज्य–राष्ट्र की हिंसा का कोई जवाब नहीं हो सकता। राज्य की नींव में ही केवल हिंसा की ईंटे नहीं लगी है बल्कि उसके महल में भी हिंसा की ईंटों से ही चिनाई हुई है। यही एक मात्र संस्था है जिसने हिंसा को भी सांस्थानिक रूप दिया है। उसकी सेना, सशस्त्रबल, पुलिस सब, सैद्धान्तिक तौर पर हिंसा के लिए प्रशिक्षित हैं। राज्य–राष्ट्र अपने को सुरक्षित रखने के लिए इंसानों–का–इंसानों के द्वारा ही नाश करवाता है। जब सरकार (राष्ट्र–राज्य) का ग्लोबल गाँव के देवताओं (बहुराष्ट्रीय कंपनियों) से गठजोड़ होता है तब से दोनों जितने अधिक लालची होते हैं उतने ही अधिक खतरनाक भी। और तकनीक उनकी मदद करती है। इस प्रक्रिया के साथ ही आदिवासियों के अस्तित्व के अन्त का आरम्भ होने लगता है क्योंकि कम्पनियों और सरकारों को लगने लगता है कि राज्यों की खनिज सम्पदा, जंगल और अन्य संसाधन उनके हैं इन सभी पर पहला हक तो उनका (सरकार व कम्पनियों) है। पूँजीवादी के फलस्वरूप जबसे पूँजी की सत्ता और सत्ता की शक्ति ने मिलकर आदिवासी क्षेत्रों के जंगल और जमीन पर हमला शुरू किया है तो विभिन्न क्षेत्रों के आदिवासियों ने अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए प्रतिरोध करना प्रारम्भ किया है तो सरकारें उस प्रतिरोध को दबाने के लिए जनसंचार माध्यमों का सहारा ले रही हैं। जैसे पहले आदिवासियों को जमीन से बेदखल करने के लिए दानव कहा जाता था अब उनको माओवादी कहा जाता है। आदिवासियों का शोषण, दमन और विनाश केवल भारत में ही नहीं हुआ है। ऐसा दुनिया के अन्य देशों में भी हुआ है। पूरी दुनिया में छलबल, धोखाधड़ी अत्याचार और सामूहिक संहार के सहारे इनको समाप्त करने के प्रयास किए गए हैं मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं– ''वर्तमान समय में भारत के आदिवासी समुदायों के सामने एक खतरा उन्मूलन का है और दूसरा अनुकूलन का। उन्मूलन का अर्थ है अस्तित्व का अन्त तो अनुकूलन का अर्थ है अपनी अस्मिता को खोकर दूसरे धर्मों, संस्कृतियों और समाजों में विलय। उन्मूलन का खतरा सत्ता की ओर से है तो अनुकूलन का धर्मों की ओर से।''(यथार्थ से मिथक बनते एक समुदाय की व्यथा कथा, नया ज्ञानोदय (नई दिल्ली), मार्च 2010, पृ. 15) इस उपन्यास में 'असुर' समुदाय की अस्मिता के विभिन्न पक्षों का चित्रण है जो इस समुदाय के प्रति संवेदनशीलता जगाता है। यह समुदाय प्रकृति की पूजा करता है। वह अपने आसपास की प्रकृति के विभिन्न रूपों से गहरी अनतरंगता अनुभव करता है और उनके गुणों को भी अपने जीवन में उतारता है। यह समाज समतावादी और भेदभाव मुक्त है। असुरजनों के व्यक्तित्व में चट्टान की दृढ़ता, नदी की तरलता और हवा की गति की एकता मिलती है। रणेन्द्र का मानना है कि इस समुदाय में स्त्री अपना सहज–जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हैं महिलाएँ वहाँ सियानी कहलाती है जनानी नहीं। जो महिलाओं के समझदारी व सयानेपन को इंगित करता है।

भारतीय समाज और संस्कृति के इतिहास लेखन में भारत के आदिवासी समाजों और उनकी संस्कृतियों के लिए

कोई जगह नहीं है और न उनके होने का उल्लेख मिलता है न उनके विनाश का इतिहास। लेकिन इस उपन्यास में उनका जीवन और संस्कृति तथा इतिहास दोनों ही मौजूद है। जो लोग समाज में पराधीनता और दमन के शिकार होते हैं उनकी आवाज इतिहास में नही सुनाई देती है। ऐसे लोगों के समाज और संस्कृति का इतिहास उपन्यास में लिखा जाता है। जो कि 'ग्लोबल गाँव के देवता' में हमें मिलता है।आर्थिक उदारीकरण के कारण विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हितों में नियमों को कमजोर करने वाले कानूनों का निर्माण होने से खनन के क्षेत्र से जुड़ी कंपनियाँ आज जंगलों के निवासियों को वहाँ से खदेड़ रही है। ये निवासी जो आदिवासी कहलाते हैं। इनके सामने अपनी अस्मिता का संकट खड़ा हो गया है। हिंदी के कुछ उपन्यासकारों ने अपना ध्यान इनकी समस्याओं पर भी केंद्रित किया है। आदिवासियों से जब इनका जंगल इनकी जमीन ही छीनी जा रही है तो इनकी अस्मिता पर संकट आ गया हैं उपन्यासों में यह बात सामने आ रही है कि इन पर यह संकट दो रूपों में सामने आ रहा है। एक तो बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ सत्ता से गठजोड़ करके इन्हें समाप्त कर देना चाहती है। दूसरा यह कि विभिन्न धर्मों के प्रचारक इनका विलय अपने धर्म में कर लेना चाहते है। इन दोनों संकटों से आदिवासियों को उबरना होगा अन्यथा इनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों का उपजीव्य अब आदिवासियों की जीवन शैली और उनकी परिस्थितियाँ बन रही हैं अभी तक हिंदी में आदिवासी रचनाकारों का अभाव है लेकिन आदिवासी क्षेत्रों से जुड़े हुए हिंदी कथाकार उनसे जुड़े हुए मुद्दे कथा साहित्य के माध्यम से उठा रहे है। आज की परिस्थतियों में आदिवासियों की अस्मिता को पूँजीवादी शासन व्यवस्था से खतरा उत्पन्न हो गया है। उनके पारम्परिक संसाधनों पर बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना कब्जा करने को तैयार खड़ी है। यही सब कुछ हिंदी उपन्यासों में आ रहा है।

Reading Literature in the Age of Artificial Intelligence: Challenges and Opportunities for Indian Academia



Dr. Suman Dahiya
Lecturer(English)
Humanities Department
C.R.R.I.T. Kanjhawala, Delhi
Email : drsumandahiya2020@gmail.com
M. 8447243931

Abstract

The integration of Artificial Intelligence (AI) into erudite studies presents both unknown openings and complex challenges for Indian academia. This composition examines how AI- powered tools are reshaping the reading, analysis, and interpretation of literature within Indian universities and exploration institutions. Drawing on the unique socio- verbal, postcolonial, and pedagogical surrounds of India, the paper explores how AI can enhance engagement with multilingual erudite traditions while contemporaneously raising enterprises about epistemic equity, verbal bias, and the devaluation of humanistic modes of inquiry. The composition argues that Indian academia must develop a critically informed, culturally sensitive approach to AI relinquishment in erudite education - one that harnesses technological eventuality without surrendering the illuminative depth that defines the humanities

Keywords: Artificial Intelligence, Indian Academia, Literary Studies, Digital Humanities, AI-assisted Reading, Higher Education, Postcolonial Literature, Machine Learning, Text Analysis, Pedagogy

1. Introduction

The twenty-first century has witnessed a seismic metamorphosis in the way human beings interact with textbooks. From algorithmic recommendation machines on digital reading platforms to large language models able of generating critical literary commentary, Artificial Intelligence has percolated nearly every dimension of the literary ecosystem. For academics in the Global South - and India in particular - these developments arrive at a moment of heightened concession between inherited social educational structures, imperative digital architectures, and the rich diversity of indigenous literary traditions.

India's literary geography is singular in its complexity. With twenty- two naturally honoured languages, hundreds of cants, and literary traditions that span millennia - from Sanskrit epics to contemporary Dalit fabrication, from Urdu ghazals to Bengali euphemism - Indian literature defies easy categorization. Against this background, the question of how AI can responsibly serve the reading and tutoring of literature becomes not simply a technological question but a deeply political and ethical one.

This composition addresses three core confines of the AI- literature interface in the Indian academic environment (a) the current state of AI integration in Indian universities and literary classes; (b) the top challenges posed by AI to humanistic reading practices; and (c) the genuine openings that AI offers for expanding access, perfecting pedagogy, and advancing literary education. The discussion concludes with recommendations for a balanced, critically engaged relinquishment of AI tools in

Indian literary education.

2. AI and Literary Studies: A Global Overview

The crossroad of computational methods and literary studies is n't new. The field of digital humanities, which gained institutional instigation in the 1990s and early 2000s, employed computational tools for tasks similar as stylometric analysis, corpus linguistics, and distant reading. Franco Moretti's conception of" distant reading" the analysis of large corpora of textbooks through quantitative methods rather than near, individual reading - represents an early and influential case of algorithmic thinking applied to literary questions (Moretti, 2000).

More lately, the emergence of motor- grounded large language models (LLMs) similar as OpenAI's GPT series, Google's Gemini, and Anthropic's Claude has dramatically expanded what AI can do with literary textbooks. These models can epitomize narratives, induce thematic analyses, identify rhetorical patterns, and indeed produce original creative writing that mimics established literary methods. Scholars similar as Matthew Jockers (2013) and Katherine Hayles (2012) have explored how machine reading complements rather than supplants human interpretation, though debates remain vigorous about the epistemic legality of AI- generated literary review.

Within this global environment, Indian academia occupies a distinctive position. Indian universities have historically operated within an Anglo- centric literary canon - a heritage of British social education while contemporaneously nurturing robust indigenous literary traditions. The preface of AI into this formerly queried space raises questions that scholars in Europe or North America may not encounter in quite the same form.

3. Challenges for Indian Academia

3.1 Linguistic and Cultural Bias in AI Models

The most immediate challenge is the systemic verbal bias bedded in dominant AI models. Current LLMs are overwhelmingly trained on English-language datasets, with significant representation from Western literary and artistic surrounds. Indian languages particularly those with lower digital vestiges similar as Odia, Maithili, Konkani, or Bodo are oppressively underrepresented in training corpora. This creates a situation in which AI tools are far more able of assaying a puritanical novel than a work of contemporary Marathi fabrication or classical Tamil Sangam poetry.

This verbal asymmetry has direct pedagogical consequences. However, they may unconsciously honour textbooks and illuminative fabrics for which AI performs reliably - largely Western, English-language canons - at the expenditure of indigenous and conversational traditions, If scholars in Indian universities decreasingly calculate on AI tools for literary analysis. The result could be an algorithmically corroborated neocolonialism within the literary classroom (Chakraborty, 2022).

3.2 Threats to Close Reading and Humanistic Pedagogy

Literary education has long been presumed on the practice of close reading - the careful, attentive engagement with a textbook's language, form, imagery, and meaning. This practice is not simply a skill but a disposition it trains scholars to tolerate nebulosity, to attend to the particular, and to repel reductive summarization. AI tools, by discrepancy, are optimized for effective information reclamation and summary generation. When scholars outsource illuminative labour to AI systems, the slow, delicate work of reading which is also the educationally generative work pitfalls being bypassed.

In India, where large class sizes and resource constraints formerly make deep engagement with

textbooks delicate, AI lanes may complicate being tendencies toward rote literacy and face- position appreciation. Faculty at Indian universities have expressed concern that AI- generated essays and analyses submitted by scholars warrant the particular voice, artistic positioning, and illuminative threat- taking that characterize genuine literary education (Sharma & Reddy, 2023).

3.3 Digital Divide and Infrastructural Inequity

Access to AI tools is not slightly distributed across Indian academic institutions. Prestigious central universities and IITs may have the digital structure and faculty moxie to critically engage with AI platforms, but the vast maturity of India's advanced education institutions particularly state universities and pastoral sodalities - warrant dependable internet connectivity, digital knowledge programs, and institutional support for technology integration. This infrastructural inequity means that AI's benefits may accrue primarily to formerly- advantaged institutions, widening being difference in literary education (Ministry of Education, 2023).

3.4 Academic Integrity and Assessment

The ease with which AI can induce presumptive literary analyses creates acute assessment challenges. Traditional modes of evaluation - essays, term papers, and critical narrative are vulnerable to AI- generated cessions that may be delicate to descry and insolvable to reliably attribute. Indian universities, numerous of which are only beginning to develop programs on plagiarism and academic misconduct, are largely unrehearsed for the scale of dislocation that generative AI poses to being assessment fabrics (UGC, 2023).

4. Opportunities for Indian Academia

4.1 Expanding Access to Multilingual Literary Archives

One of the most promising operations of AI in the Indian environment is in digitizing, rephrasing, and making accessible the vast libraries of Indian conversational literature. systems similar as the Digital Library of India and AI- powered restatement enterprise including those employing Neural Machine restatement (NMT) models have begun to make textbooks in Sanskrit, Persian, Tamil, Telugu, and other languages more extensively accessible to experimenters who warrant proficiency in these languages. AI-supported restatement, while amiss, can open up preliminarily inapproachable literary traditions to relative and cross-cultural study (Rao & Malhotra, 2021).

4.2 Distant Reading and Computational Literary Studies

AI-powered textbook analysis tools enable a form of scholarly inquiry that would be insolvable through traditional reading alone. Experimenters can now dissect patterns across thousands of textbooks contemporaneously - tracking thematic shifts in postcolonial Indian fabrication over decades, mapping the spatial imagination of Bengali literary euphemism, or tracing the influence of oral traditions on contemporary Dalit autobiography. Tools similar as NLTK, spaCy, and specialized literary analysis platforms enable Indian scholars to engage in computationally sophisticated exploration without taking expansive programming moxie (Jockers, 2013).

4.3 Enhancing Pedagogical Accessibility

For scholars who are first- generation learners of English literature, AI tools can serve as accessible entry points furnishing vocabulary backing, contextual background, literal information, and original appreciation support. Rather than replacing the schoolteacher, AI can serve as a supplementary resource that lowers the threshold of entry for scholars from non-English-medium educational backgrounds. This standardizing

eventuality is particularly applicable in a country where the maturity of literature scholars engages with canonical textbooks in a language that is not their mother tongue.

4.4 Supporting Interdisciplinary Research

AI facilitates the integration of literary studies with disciplines similar as history, sociology, linguistics, and artistic studies. Sentiment analysis, named reality recognition, and network analysis tools allow experimenters to approach literary textbooks as artistic data - mapping social connections in fabrication, tracing ideological conformations across stripes, and sticking literary product within broader literal and political surrounds. similar interdisciplinary possibilities align well with the objects of the National Education Policy 2020, which explicitly encourages cross-disciplinary exploration and tutoring in Indian advanced education (Government of India, 2020).

5. The Way Forward: Toward a Critically Engaged AI Pedagogy

The relationship between AI and literary studies in Indian academia cannot be resolved through either non-commercial relinquishment or mask rejection. What's needed is a critically engaged, contextually sensitive pedagogical frame - one that acknowledges AI as a tool with significant affordances and significant limitations.

First, Indian universities must invest in developing AI knowledge as a element of literary education not to train scholars as programmers, but to equip them with the critical vocabulary to interrogate AI labours. scholars should understand how LLMs work, what impulses they carry, and what kinds of illuminative claims they can and cannot legitimately make. Critically reading an AI-generated analysis should come a standard exercise in literary methodology courses.

Alternate, there's a critical need for Indian-specific literary AI enterprise datasets, models, and tools erected from and for India's multilingual literary heritage. Collaborations between departments of literature, computer wisdom, and linguistics could yield tools that serve indigenous language literary exploration, potentially generating a new generation of AI- enabled education embedded in Indian intellectual traditions.

Third, assessment practices must be redesigned to focus the illuminative processes that AI cannot replicate oral defences, process portfolios, reading journals, and cooperative hermeneutic exercises. The thing is not to" AI- evidence" assessment but to direct evaluation on the distinctively human confines of literary experience - empathy, embodied reading, particular response, and ethical reflection.

Eventually, Indian academic institutions must engage laboriously with the ethical confines of AI relinquishment - questions of data sovereignty, algorithmic responsibility, and the epistemic authority of human versus machine interpretation. The University subventions Commission and public exploration bodies should develop clear, exploration- informed guidelines on AI use in humanities education, icing that technological change is governed by pedagogical values rather than marketable imperatives.

6. Conclusion

Artificial Intelligence is neither the rescuer nor the destroyer of literary education. It's a important, profoundly equivocal tool that carries within it the impulses, limitations, and possibilities of the societies that have erected it. For Indian academia, engaging with AI in literary studies means navigating the pressures between availability and depth, effectiveness and alertness, global connectivity and original rootedness.

The challenge for Indian scholars and preceptors is not simply to acclimatize to AI but to laboriously shape its development and operation in ways that

recognize the extraordinary uproariousness of India's literary heritage. In doing so, Indian academia can make a distinctive donation to the global discussion about what it means to read literature - humanly, critically, and responsibly - by an age of intelligent machines.

References

Chakraborty, S. (2022). Algorithmic colonialism and the Indian literary classroom. Journal of Postcolonial Writing, 58(4), 412-427. https://doi.org/10.1080/17449855.2022.2078341

Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

Hayles, N. K. (2012). How We Think: Digital Media and Contemporary Technogenesis. University of Chicago Press.

Jockers, M. L. (2013). Macroanalysis: Digital Methods and Literary History. University of Illinois Press.

Ministry of Education. (2023). All India Survey on Higher Education 2021-22. Government of India. https://aishe.gov.in

Moretti, F. (2000). Conjectures on world literature. New Left Review, 1, 54-68.

Rao, P., & Malhotra, R. (2021). Neural machine translation and the multilingual literary archive: Prospects for South Asian textual heritage. Digital Scholarship in the Humanities, 36(3), 789-805.

Sharma, A., & Reddy, V. (2023). AI-generated writing in Indian university humanities classrooms: A faculty perspective. Indian Journal of Higher Education, 14(2), 88-104.

UGC. (2023). Guidelines on the use of Artificial Intelligence in higher education institutions. University Grants Commission of India.

Widdowson, H. G. (1975). Stylistics and the Teaching of Literature. Longman.

Zuboff, S. (2019). The Age of Surveillance Capitalism: The Fight for a Human Future at the New Frontier of Power. PublicAffairs.

आर.एस.सी.आई.टी. (RS-CIT) का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान एवं इसके प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन



डॉ. सुरजमल शर्मा
शोध निर्देशक
शिक्षा विभाग
महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर



मुक्ता शर्मा
पी–एच.डी. (शोधार्थी)
महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध आलेख सार –

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नये परिवर्तन आ रहे हैं। जहाँ किसी समय शिक्षा प्रक्रिया एकमुखी थी जिसमें अध्यापक मुख्य वक्ता होता था तथा विद्यार्थी मूल श्रोता। किसी समय शिक्षा का तात्पर्य बालक के ज्ञानात्मक पक्ष के विकास से था। वहीं आज के इस युग में शिक्षा के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। बालकेन्द्रित शिक्षा तथा शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रयोग इसी के परिणाम है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल बालक के स्मृति स्तर का विकास का ही नही बल्कि बालक के सर्वांगींण विकास का उच्चतर उद्देश्य रखती है जिसमें बालक के शारीरिक, चारित्रिक, बौद्धिक, नैतिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पक्षों के समुचित विकास पर बल दिया जाता है।

मूल शब्द – आरएससीआईटी एवं अभिवृत्ति।

प्रस्तावना –

शिक्षा शास्त्रियों ने तकनीकी विकास के फलस्वरूप आविष्कृत हुए प्रत्येक यंत्र को शिक्षा के क्षेत्र में उतार कर उसका उपयोग किया है। इसी क्रम में कम्प्यूटर का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग करना शिक्षा शास्त्रियों की पुरानी एवं स्वाभाविक इच्छा थी। परन्तु इसका सही उपयोग हो सका है पिछले दशक में जब कम्प्यूटर गणना करने वाले यंत्र से बहुत आगे मल्टीमीडिया के प्रयोग से प्रभावी बना। शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में हो रहा कम्प्यूटर का उपयोग इन चरणों के बाद सामने आया है :–

1. पहले विज्ञान के क्षेत्र में सूक्ष्म गणनाओं में कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया।
2. शिक्षा के क्षेत्र में केवल अनुसंधान आंकड़ों की सही व सटीक गणना में प्रयुक्त किया जाने लगा।
3. अभिक्रमित अनुदेशन के लिये केवल लिखित कार्य के रूप में प्रयोग हेतु सामने आया जब 1961 में कम्प्यूटर के आधार पर अभिक्रमित सामग्री की रचना की गयी। इसी क्रम में 1966 में प्राइमरी स्कूलों के बच्चों के लिये भाषा व गणित की सामग्री को अभिक्रमित अधिगम हेतु व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया गया।
4. मल्टीमीडिया के उपयोग से चलचित्रों द्वारा आकर्षक, सरल व उत्तम ढंग से सामग्री के प्रस्तुतीकरण का साधन बना।
5. इन्टरनेट के द्वारा तत्काल सूचना पहुंचाने वाला साधन बना। शिक्षा के क्षेत्र में बेवसाइट का प्रयोग शिक्षार्थी की विशाल लाइब्रेरी की आवश्यकता की पूर्ति करता दिखाई दिया।
6. टी0 वी0, रेड़ियो, वी0 सी0 आर, प्रोजेक्टर आदि के रूप में कम्प्यूटर के काम में आने से कम्प्यूटर ने इलेक्ट्रोनिक मीडिया के अन्तर्गत एकमात्र पूर्ण दृश्य श्रव्य सामग्री का स्थान लेने में सफलता प्राप्त की।

आर.एस.सी.आई.टी. का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगः–

वर्तमान में कम्प्यूटर के शिक्षा में उपयोग के महत्त्व को समझ कर विभिन्न कदम उठाये गये हैं। जिनके अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य कर ही दिया है। साथ ही सेवारत अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण

कार्यक्रमों की व्यवस्था करके प्रशिक्षित किया जा रहा है। कम्प्यूटर इंजिनियरिंग तो अलग शाखा के रूप में पहले से ही प्रचलित हैं।

आर.एस.सी.आई.टी. का शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयों में तीन प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है –

1. प्रशासनिक सहयोगी के रूप में
2. शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में
3. कम्प्यूटर आधारित अधिगम द्वारा शिक्षक के रूप में

प्रशासनिक सहयोगी के रूप में (Computer as Administrative Role):–

जहां आजकल विभिन्न प्रशासनिक क्षेत्रों में कम्प्यूटर ने भ्रष्टाचार में रोक लगाने सहित प्रत्येक कार्य में समानता, सरलता एवं पारदर्शिता लाने के लिये भरपूर सहयोग किया है वहीं विद्यालयों में प्रशासनिक कार्य में उल्लेखनीय सहयोग कर सकता है। जिससे विद्यालय के प्रशासन संबंधी कार्य को उत्तम ढंग से चलाया जा सके। शिक्षण में सहायक सामग्री के महत्त्व को सभी शिक्षाविदों ने स्वीकारा है। ऐसे में आवश्यक होती है उत्तम सहायक सामग्रियों के चयन की। अनेक सहायक सामग्रियों का प्रयोग करने के लिए समय भी अधिक चाहिए तथा साधन भी अधिक चाहिए। ऐसे में कम्प्यूटर का प्रयोग बहुउपयोगी व प्रभावी सहायक सामग्री के रूप में किया जा सकता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के अन्तर्गत आने वाली सभी सहायक सामग्रियों के गुणों को अपने में समेटे कम्प्यूटर का उचित प्रयोग शिक्षार्थियों पर उत्तम प्रभाव डाल सकता है।

सहायक सामग्री के रूप में (Computer as Teaching Aid) :–

शिक्षण में सहायक सामग्री के महत्त्व को सभी शिक्षाविदों ने स्वीकारा है। ऐसे में आवश्यकता होती है उत्तम सहायक सामगियों के चयन की। अनेक सहायक सामग्रियों का प्रयोग करने के लिये समय भी अधिक चाहिए तथा साधन की अधिक चाहिए। ऐसे में कम्प्यूटर का प्रयोग बहुउपयोगी व प्रभावी सहायक सामग्री के रूप में किया जा सकता है। इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया के अन्तर्गत आने वाली सभी सहायक सामग्रियो के गुणों को अपने में समेटे कम्प्यूटर का उचित प्रयोग शिक्षार्थियों पर उत्तम प्रभाव डाल सकता है।

इस प्रकार कम्प्यूटर की बहुउपयोगिता व बढ़ते हुए क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए आर.एस.सी.आई.टी. की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

अध्ययन का महत्व :–

समस्या का शैक्षिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि शिक्षा का क्या महत्व है? विभिन्न दार्शनिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा के महत्व को इस प्रकार उल्लेखित किया है। शिक्षा हमें अपने सम्पूर्ण परिवेश के प्रति सजग बनाती है। आज सम्पूर्ण विश्व तथा विशेष रूप से हमारे देश में विविध संस्कृति, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आर्थिक मूल्यों में क्रान्ति हो रही है। इस भीषण संक्रमण काल में बालक को सांस्कृतिक, राष्ट्रीय संकल्पनाओं के अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप व्यक्तित्व सम्पन्न बन सके, यही शिक्षक का लक्ष्य है। शिक्षा से शारीरिक, मानसिक, स्वाभाविक, समायोजन शक्तियों का समन्वित विकास होता है। इनके समन्वय के अभाव में शिक्षा अधूरी व अपंग रहती है।

शिक्षकों की बहुमुखी प्रतिभा उनकी योग्यता, क्षमता, रूचियों और ज्ञान के आधार पर बनती है। आने वाले समय की क्या आवश्यकताएं होगी? बच्चे उनका समाना कैसे कर सकेंगे? उनके लिये इस समय क्या चीजें उपलब्ध करवानी आवश्यक है तथा कैसे उपलब्ध हो सकेंगे? इन बातों के बारे में शिक्षक को लगातार जागरूक रहना पड़ता है। इन्हीं को ध्यान में रखकर शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। यदि शिक्षक को आर.एस.सी.आई.टी. का ज्ञान है तो वह विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को इस संबंध में जागरूक कर सकता है तथा इसकी महती आवश्यकता के बारे में अधिक अच्छे ढंग से स्पष्ट कर सकता है।

देश के किसी भी प्रांत के पाठ्यक्रम को देखें तो

कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य या वैकल्पिक विषय के रूप में अवश्य स्थान दिया गया है। विभिन्न अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि कम्प्यूटर शिक्षा के शिक्षकों में आत्मविश्वास जागृत होता है। यह व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने मे सहायक होता है। साथ ही विभिन्न क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से समाधान निकालने की प्रवृत्ति बनती है।

अभिवृत्ति एक मनोसामाजिक सम्प्रत्यय है। अपने चारों ओर फैले हुए वातावरण में अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों, धारणाओं, विचारधाराओं, नारों आदि से हमारा सम्बन्ध होता है और इन सम्बन्धों में सामान्यतया हमारे मनोभाव कुछ ऐसे होते हैं कि इनमें से हम किसी को पसंद नहीं करते हैं। किसी को पसंद करते हैं या इनमें से किसी विषय में तटस्थ रहते हैं। सामान्यतया हम विष्वविद्यालयों, व्यक्तियों, संस्थानों, परिस्थितियों आदि के प्रति अलग–अलग व्यवहार करते हैं। इन्हीं व्यवहारों के द्वारा प्राप्त अनुभवों के आधार पर हम इन वस्तुओं के विषय में अपनी रुचि/अभिरुचि को प्रकट करते हैं। यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अभिवृत्तियाँ व्यक्ति के द्वारा अनुभवों के आधार पर अर्जित की जाती हैं और ये कोई जन्मजात, विशेषता, कारक या क्षमता नहीं है। अतः इसके निर्माण में परिवार, समाज, विद्यालय व शिक्षकों का बहुत बड़ा हाथ होता है।

इस प्रकार अनुसंधानकर्त्री को यह ज्ञान करने की आवश्यकता अनुभव हुई कि आर.एस.सी.आई.टी. (RS-CIT) के प्रति अध्यापकों की अभिवृति कैसी है? अतः अनुसंधानकर्त्री ने इस विषय को अनुसंधान के रूप में चुनने का निर्णय किया।

अध्ययन का औचित्य :–

अनुसंधानकर्त्री ने वर्तमान में आर.एस.सी.आई.टी. के औचित्य को इस प्रकार स्पष्ट किया है–

1. शिक्षार्थियों के लिये –

अ. शिक्षार्थियों का आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।

ब. आर.एस.सी.आई.टी. के विभिन्न पहलुओं को सरलता से जान सकेंगे।

ग. शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा हो सकेगा।

2. शिक्षकों के लिये –

अ. शिक्षकों में आर.एस.सी.आई.टी. के महत्व से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

ब. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।

स. शिक्षकों में लिंग संबंधी अन्तर को नजरअंदाज करने की भावना का उदय होगा।

द. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति ग्रामीण व शहरी का भेदभाव दूर करने के कारणों की जानकारी होगी।

3. शिक्षा नीति निर्धारकों के लिये –

अ. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रसार में सहायता प्राप्त होगी।

ब. प्रसारित किये गये संसाधनों के उपयोग की सुनिश्चितता होगी।

स. विभिन्न प्रकार की योजनाओं में आर.एस.सी.आई.टी. की सहायता ले सकेंगे।

अनुसंधानकर्त्री की नजर में यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालयोपयोगी, समाजोपयोगी एवं अध्यापकों के लिए फलदायी होगा, जिससे हम RS-CIT के प्रति सरकारी एवं निजी अध्यापकों की अभिवृत्ति को जान सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन :–

"आर.एस.सी.आई.टी. (RS-CIT) का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान एवं इसके प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन :–

1. शोध में राजस्थान राज्य के चूरू जिले को सम्मिलित किया गया है।

2. शोधार्थी द्वारा चूरू जिले के 50 सरकारी व 50 निजी कुल 100 अध्यापकों का चयन किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

अभिवृत्ति मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति के मापन के लिए स्वनिर्मित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात मान की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – T.IV.1

सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

अध्यापक	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
सरकारी	50	24.52	6.34	2.67		सार्थक अन्तर है।
निजी	50	19.64	4.57			

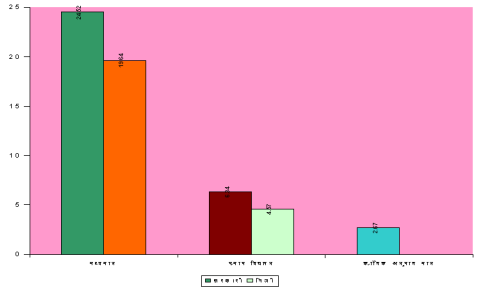
(df=N1+N2 &2=50+50&2=98)

विश्लेषण :–

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

आरेख संख्या – 1

सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमानों का दण्डारेखीय प्रदर्शन



निष्कर्ष निरूपण –

1. सरकारी एवं निजी अध्यापकों की टैब्ज के प्रति अभिवृत्ति में 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005) : ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326–327

2. कपिल, एच के. (1979) : अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या–23

3. कोठारी, सी.आर. (2008) : ''अनुसंधान विधिशास्त्र विधि ियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या–2

4. जायसवाल, सीताराम (1994) : 'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली पेज 221

5. ढोढियाल, एस. पाठक (1990) : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या–51

6. पाठक,पी.डी. (2007) :''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पृ.सं. 245, 552,450

शैक्षणिक पुस्तकालयों में इलेक्ट्रानिक प्रकाशन



डॉ. योगेन्द्र सिंह
शोध निर्देशक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़



सुनील महर्षि
पी–एच.डी. (शोधार्थी)
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़

शोध आलेख सार –
सूचना तथा अनेक प्रकार के विवरण मुद्रित सामग्री के अतिरिक्त निम्न स्वरूपों में उपलब्ध होते है। महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में विशेष रूप से इनका संकलन किया जाता है। विषय विशेषज्ञों की सूचना आवश्यकता को पूरा करने के लिए इनका अधिग्रहण करना आवश्यक है। अधिग्रहण एवं संकलन की दृष्टि से यह सामग्री अत्यन्त समस्यामूलक है। अपुस्तकीय सामग्री जैसे – फिल्म, फिल्म स्ट्रिप, माइक्रोफिश, माइक्रोकार्ड, ग्रामोफोनरिकार्ड, मेगनेटिक टेप, मेगनेटिक डिस्क, डेटाबेस, स्लाइड, मैग्नेटिक चिप्स, सीडी रोम।

मूल शब्द – सूचना एवं इलेक्ट्रनिक माध्यम।

भूमिका –

सूचना के इलैक्ट्रानिक माध्यम – ज्ञान विकास के क्षेत्र में मुद्रित माध्यम अत्यधिक प्रभावशाली एवं उपयोगी साबित हुआ है। स्थानभाव और सीमित वित्तीय साधनों के फलस्वरूप समस्त ज्ञान का संग्रहण और व्यवस्थापन अत्यन्त कठिन है। इलेक्ट्रानिक माध्यम की सहायता से सूचना का स्थान्तरण सुलभतापूर्वक, अतिशीघ्र समय में सर्वाधिक लोकप्रिय, उपयोगी और सशक्त इलैक्ट्रानिक माध्यम है। इलैक्ट्रानिक माध्यम से बढ़ते उपयोग के फलस्वरूप हम शैनः–शैनः कागजविहीन समाज की ओर उन्मुख हो रहे है।

अब पुस्तकालयों में सभी काम इंटरनेट, लाइब्रेरी सॉटवेयर के माध्यम से किये जाते हैं। सूचना सेवाओं में इन्टरनेट का प्रयोग जैसे अधिग्रहण में इंटरनेट का प्रयोग–

पुस्तकालय प्रबंधन अधिग्रहण प्रक्रिया के संचालन में कई तरह की क्रियाएँ करनी होती है जिनके निम्न प्रकार स्पष्ट किया गया है –

1. बलों का भुगतान
2. अधिग्रहण के लिए ग्रंथ प्रक्रिया
3. ग्रंथ आदेश पत्रावली का कम्प्यूटर पर निर्माण
4. ग्रंथ विवरणों का सत्यापन
5. ग्रंथ आदेश
6. वर्गीकरण तथा प्रसूचीकरण के लिए ग्रंथो का तकनीक प्रक्रिया विभाग में प्रवेश
7. पुस्तकालयों के लिए आबंटित धन का प्रचलन
8. विभिन्न विभागाध्यक्षों द्वारा अनुमोदनों की प्राप्ति
9. पुस्तक एवं अन्य प्रकार की सामग्रियों का चयन

उपरोक्त वर्णित विभिन्न कार्यो में इंटरनेट सामर्थ्य प्रदान कर सकता है वे सामर्थ्य निम्न प्रकार स्पष्ट किये गये है –

1. पुस्तक आदेश से पहले ऑनलाइन प्रसूचियों का प्रयोग द्विरावृति जॉच के लिए किया जा सकता है।
2. पुस्तक ग्रंथ आदेश वेब पर आधारित हो सकते है।
3. वेब पर उपलब्ध ग्रंथ विक्रेताओं की सूची, प्रकाशकों तथा पुस्तक वितरकों की अनुक्रमणिकाएं, पुस्तकालय सूचियों, पुस्तक समीक्षाएं तथा पुस्तक मेंलों के बारे में सूचनाएँ प्राप्त कर पुस्तक चयन में सहायता मिलती है।
4. संपूर्ण पुस्तक आदेश इलेक्ट्रानिक माध्यम से संप्रेषित किए जा सकते है।
5. उपयोगकर्ता किसी अभिष्ट पुस्तक के संदर्भ में ऑनलाइन

के द्वारा पुस्तकालय में प्राप्त होने की संभावित तिथि मालूम कर सकता है।

6. पुस्तक आदेश तथा पुस्तक प्रस्तुतीकरण कर पत्रावलियां वेब पर अभिगम के लिए रखी जा सकती हैं।

7. अगर कोई भी समस्या अधिग्रहण से संबंधि है तो उसका समाधान विचारों के आदान–प्रदान तथा उस पर उपलब्ध सूचनाओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

8. पुस्तक आदेश के अनुरोध सक्षम अधिकारी तथा प्रयोक्ता द्वारा वेब साइट पर प्रेषित किए जा सकते है।

पत्र–पत्रिका विभाग में इंटरनेट का प्रयोग –

इस विभाग में निम्नलिखित कार्य किऐ जाते है –

1. प्राप्त पत्रिकाओं की अधिग्रहण

2. पत्रिकाओं के शीर्षक वर्ण क्रमानुसार तथा विषयानुसार साप्ताहिक रूप से प्रदर्शित करना

3. अपूर्ण तथा गुम अंकों के बारे में नियमित रूप से स्मरण पत्र प्रदर्शित करना।

4. पुस्तकायल हेतु वार्षिक रूप से मंगाए जाने वाले पत्र–पत्रिकाओं के सूची का अनुमोदन तथा अवश्यकतानुसार नवीन पत्रिकाओं को सूची में सम्मिलित करना।

5. पत्र–पत्रिकाओं के लिए स्वीकृत बजट का आबंटन।

6. क्रय किये जाने योग्य पत्र–पत्रिकाओं का चयन।

7. पुस्तकालय समिति तथा विभागाध्यक्षों से प्राप्त अनुमोदनों पर कार्यवाही।

8. आदेश प्रक्रिया।

9. पुस्तकालय के ओपेक पर पत्रिकाओं के विवरण उपलब्ध कराना।

इंटरनेट उपर्युक्त वर्णित सभी कार्यो में सामर्थ्य प्रदान कर सकता है जो निम्नलिखित है –

1. प्रयोक्ताओं द्वारा पत्रिकाओं का वेब द्वारा अभिगम।

2. वेब पर उपलब्ध प्रकाशकों की सूचियां व अनुक्रमणिकाओं के द्वारा पत्रिकाओं का चयन।

3. इंटरनेट पर उपलब्ध महत्वपूर्ण पुस्तकालयों द्वारा मंगाए जा रहे पत्रिकाओं की संघ प्रसूचियों से संसाधन से संहभागिता।

4. प्राप्त पत्रिकाओं की सूचियों का वेब के अभिगम द्वार निर्माण।

5. पत्रिकाओं के प्रस्तुतीकरण में वेब पर उपलब्ध सूचनाओं का उपयोग तथा आवश्यकतानुसार विचारों का आदान–प्रदान संभव।

6. वेब पर आधारित आदेश प्रक्रिया।

7. इंटरनेट पर उपलब्ध इलेक्ट्रानिक पत्रिकाओं के पूर्ण पाठ्यांश का अवलोकन संभव।

8. विभागाध्यक्षों तथा प्रयोक्ताओं के अनुमोदनों को वेब के द्वारा संप्रेषण।

पुस्तकालय प्रबंधन मे इंटरनेट का उपयोग –

पुस्तकालय प्रबंधन में इंटरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके द्वारा निम्नलिखित कार्य किये जाते है –

1. पुस्तकालय स्वचालन, स्थानीय नेटवर्क तथा सीडी रोम, ऑनलाइन, इंटरनेट आदि सेवाओं को सामर्थ्य प्रदान करना।

2. पुस्तकाय कर्मचारी के लिए कार्य विवरण।

3. व्यय से संबंधित विवरणों का अंकेक्षण।

4. पुस्तकालय के प्रकाशन का विवरण।

5. पुस्तकालय कर्मचारियों के प्रशिक्षण तथा व्यवसायिक योग्यता वृद्धि हेतु सतत् प्रयास।

6. पुस्तकालय के सभी विभागों के बीच संमन्वय स्थापित करना।

7. प्रयोक्ताओं के लिए सर्वोत्तम एवं प्रभावशाली पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने हेतु मानको का प्रसारण।

8. पुस्तकालय सेवा के लिए नीति निर्धारण।

संदर्भ एवं सूचना सेवा में इंटरनेट का प्रयोग –

इंटरनेट के माध्यम से जिससे विभिन्न प्रकार के सवालों के उत्तर भी प्राप्त किये जा सकते है। यह सुविधाजनक सरल और सामायिक सूचनाएं शीघ्रता से प्रदान करने में समर्थ है। शासकीय व्यावसायिक, सामान्य समाचार तथा सामयिक घटनाओं के बारे में इंटरनेट के संग्रहित वेब पृष्ठों से सूचना प्राप्त किये जा सकते हैं।

इनमें दैनिक समाचार पत्र–पत्रिकाएं शासकीय संस्थाएं आदि सम्मिलित है।

ऑनलाइन सेवाएँ –

ऑनलाइन वह प्रक्रिया या उपकरण है जो सूचना खोजकर्ता तथा उसके सूचना डेटाबेस के बीच संबंध स्थापित करता है। सूचना के ऑनलाइन अभिगम की सुविधा दूरसंचार नेटवर्क के माध्यम से आज अत्यंत लोकप्रिय हो चूकी है आज सूचना सेवा के क्षेत्र में अनेकों प्रणालियों प्रचलित है। इन सेवाओं में ऑनलाइन अभिगम के द्वारा पर्याप्त संख्या में डेटाबेसों को ऑनलाइन अभिगम के द्वारा पर्याप्त संख्या में डेटाबेसों को उपलब्ध कराया जाता है। इसमें सामान्य टेलीफोन के माध्यम से अल्पतम व्यय के टर्मीनलों के सभी डेटा केन्द्रों का अभिगम प्राप्त हो जाता है।

सारांश –

विश्वविद्यालय पुस्तकालय तथा महाविद्यालय पुस्तकालयों के कार्यों की समानता होते हुए भी दोनों में उतना ही अंतर हे जितना कि विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय में। विश्वविद्यालय पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य शोध की प्रवृत्ति विकसित करना तथा शोध के लिये आवश्यक साधन जुटाना तथा महाविद्यालय पुस्तकालय का प्रमुख कार्य शैक्षणिक कार्य को पूर्णता प्रदान करना है।

यह सत्य है कि महाविद्यालय पुस्तकालय भी विश्वविद्यालय पुस्तकालय की भांति महाविद्यालय की समस्त शैक्षणिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र होता है। लायल के अनुसार महाविद्यालय पुस्तकालय का कार्य संदर्भ सेवा द्वारा शैक्षणिक कार्यों में सहायता प्रदान करना उनके विकास में योगदान देना तथा शैक्षणिक स्तर को उन्नत करने के उद्देश्य से विभागीय सदस्यों को पुस्तकालय सेवा उपलब्ध कराना एवं छात्रों को उपयोगी तथा अधिक पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना है। अमेरिका के महाविद्यालय तथा शोध पुस्तकालयों के संघ द्वारा महाविद्यालय का कार्य विद्यार्थियों में सत्साहित्य के अध्ययन तथा शोध के प्रति इस प्रकार रूचि जागृत करना है जो जीवनभर बनी रहे। इसके अतिरिक्त उन्हें शैक्षणिक समुदायों के लिये सिद्धांत तथा व्यवहार में बौद्धिक सामग्री के प्रमुख केन्द्र के रूप में कार्य करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कालभोर, गोपीनाथ (1997) : भारतीय शिक्षा प्रणाली और ग्रंथालय, पृष्ठ 123.

सिंह, आर.सी. (1990) : पुस्तकालय प्रशासन : सिद्धांत एवं व्यवहार, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 86.

कालभोर, गोपीनाथ (1997) : भारतीय शिक्षा प्रणाली और ग्रंथालय, पृष्ठ 7–9.

कालभोर, गोपीनाथ (1997) : भारतीय शिक्षा प्रणाली और ग्रंथालय, पृष्ठ 1–2.

कालभोर, गोपीनाथ(1997) : भारतीय शिक्षा प्रणाली और ग्रंथालय, पृष्ठ 75, 136, 133–134, 141–142,

कालभोर, गोपीनाथ (1997) : भारतीय शिक्षा प्रणाली और ग्रंथालय, पृष्ठ, 59–60.

नवभारत मंगलवार 6.11.2013, पृष्ठ 3.

व्यास, एस.डी. (2004) : पुस्तकालय संगठन एवं प्रबंध, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, ISBN No. : 81.7056.135.3, पृष्ठ 47,61.

व्यास, एस.डी. (2004) : पुस्तकालय संगठन एवं प्रबंध, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, ISBN No. : 81.7056.135.3, पृष्ठ 34.

व्यास, एस.डी. (2004) : पुस्तकालय संगठन एवं प्रबंध, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, ISBN No. : 81-7056-135-3, पृष्ठ 1.

नई शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शिक्षण–अभ्यास के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन



डॉ. सुरजमल शर्मा
शोध निर्देशक
शिक्षा विभाग
महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर



प्रियंका शर्मा
पी–एच.डी. (शोधार्थी)
महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध आलेख सार –

नई शिक्षा नीति 2020 में इस तथ्य की भी संस्तुतियां की गई है कि शिक्षकों के लिए सार्थक एवं आवश्यकता आधारित कौशलों के विकास हेतु नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाए, ताकि अध्यापकों की प्रभावशीलता, शिक्षण व्यवहार एवं कार्यदबाव का स्तर अधिकतम हो सके। नई शिक्षा नीति 2020 में इसी तथ्य को दोहराते हुये कहा गया है कि ''शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों की सार्थकता उसकी विषयवस्तु तथा ज्ञान के सतत् विकास पर निर्भर करेगी।''

मूल शब्द – शिक्षा नीति, शिक्षण अभ्यास, शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण प्रभावशीलता।

प्रस्तावना –

परिवर्तित ज्ञान की अवधारणा सम्पूर्ण विश्व में बलवती होती जा रही है। यह सर्वसिद्ध तथ्य है कि ज्ञान एक विकासात्मक अवधारणा है। सत्य व शुद्ध तथ्यों के मापदण्ड में दिन–प्रतिदिन बदलाव आ रहे हैं। इस दृष्टि से किसी भी क्षेत्र के ज्ञान में पूर्णता के सम्बन्ध में अन्तिम सीमा रेखा नहीं खीची जा सकती उसके विकास का छोर सदैव खुला रहता है। उपर्युक्त चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में आज शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षण कार्यक्रमों में भी गत्यात्मकता, अद्यनता एवं विकासात्मकता जैसी धारणाओं का समावेश व बदलते वैश्वीकरण परिवेश के कारण यह एक आवश्यकता आधारित कार्यक्रम बन गया है। समय–समय पर बदलती हुई परिस्थितियों के आधार पर अध्यापन वृत्ति के कार्यक्रमों में भी नई शैक्षिक मांगों का उदय हुआ है। अतः आज के अध्यापक की प्रमुख समस्या वर्तमान गतिशील समाज की आकांक्षाओं व मापदण्डों के अनुकूल स्वयं की वृत्ति को निर्धारित करना है। इसलिए नई शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से सिफारिश की गई है कि ''अध्यापक शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है जो सेवा से पूर्व व सेवा के उपरान्त अनवरत आवश्यक तथा प्रेरणादायी होनी चाहिए। अपने प्रथम कदम में सम्पूर्ण अध्यापक शिक्षा तन्त्र एवं शिक्षण प्रक्रिया सदैव समाज की व्यापक व नवीन आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए।''

अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षा महाविद्यालयों में प्रवेश हेतु विभिन्न आधार हैं। राजस्थान राज्य में सन् 1987 से पूर्व शिक्षा महाविद्यालयों में प्रवेश स्नातक स्तर पर प्राप्त अंकों के आधार पर वरीयता निर्धारण कर दी जाता था। लेकिन सन् 1987 के पश्चात प्रवेश का आधार ''प्री–टीचर एज्यूकेशन टेस्ट (पी.टी.ई.टी) बना दिया गया। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश पाने हेतु विद्यार्थी को बी. एड. प्रवेश परीक्षा (पी.टी.ई.टी.) उत्तीर्ण करना अति आवश्यक है। बी.एड. प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को प्रशिक्षण हेतु शिक्षा महाविद्यालयों मे प्रवेश दिया जाता है। जहाँ उन्हें अध्यापन का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण का अभ्यास करवाया जाता है जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता में बढ़ोतरी होती है तथा उनका शिक्षण व्यवहार भी प्रभावित होता है।

शिक्षक को समाज व देश का नियामक माना जा सकता हैं क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में जो भी साधारण और असाधारण

प्रतिभा वाले लोग काम करते है उन सबको तैयार करने का काम शिक्षक ही करता है। ऐसे में अगर शिक्षक के द्वारा अपनी भूमिका का सही निर्वहन नहीं किया जायेगा तो उस स्थिति में देश को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा क्योंकि ऐसे में जब देश को अच्छे कर्णधार नहीं मिलेंगे तो देश की शासन व्यवस्था सुचारू व अच्छे ढ़ंग से नहीं चल पायेगी। इसको अच्छे ढ़ंग से चलाने का काम सुयोग्य नागरिक ही कर सकते हैं और ये सुयोग्य नागरिक शिक्षक ही तैयार करते हैं। बदलते परिवेश को ध्यान में रखते हुए आज शिक्षक की भूमिका और भी ज्यादा बढ़ गई है। तकनीकी एवं विज्ञान के इस युग में भी शिक्षक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाना कि शिक्षण एक भरण पोषण आजीविका नहीं है, बल्कि समाज के प्रति दायित्वों से भरी वृत्ति है। समाज के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी शिक्षकों की है, अतः उनके सन्दर्भ में कोई भी घोषणा महत्त्वहीन हो ही नहीं सकती क्योंकि इसका सम्बन्ध शिक्षा एवं शिक्षकों से है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों के स्तर से उपर नहीं उठ सकती।

अध्ययन का महत्व :–

हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाई गई जिसे सभी के परामर्श से तैयार किया गया है। इसे लाने के साथ ही देश में शिक्षा पर व्यापक चर्चा प्रारम्भ हो गई है। शिक्षा के संबंध में गांधीजी का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द जी का कहना था कि मनुष्य की अंर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। इन्हीं सब चर्चाओं के मध्य हम देखेंगे कि पहले की शिक्षा नीति में ऐसी क्या कमियाँ रह गई थी जिन्हें दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लाने की आवश्यकता पड़ी। साथ ही क्या यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होगी जिसका स्वप्न महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानन्द ने देखा था?

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है सीखने एवं सिखाने की किया। मगर केन्द्र सरकार द्वारा 1986 की शिक्षा नीति के अंदर ना तो कोई सीखने को मिला और ना ही कोई सिखाने वाली वस्तु केवल उस नीति के अंदर बच्चे में रहने का ज्ञान लिया और कक्षा उतीर्ण करने के डर लगा रहता था। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ को सार्थक करते हुए और बच्चे के सर्वांगीण विकास वाली नई शिक्षा नीति 2020 को केन्द्र सरकार ने मंजूरी दी है। पहले की शिक्षा नीति 1986 मूल रूप में परिणाम देने पर ही केन्द्रित थी, मतलब कि विद्यार्थियों का आंकलन उनके द्वारा अर्जित अंकों के आध ाार पर किया जाता था जो कि एक एकल दिशा दृष्टिकोण है। नई शिक्षा नीति 2020 ठीक इसके विपरीत है यानि बहुत दिशा दृष्टिकोण पर केन्द्रित है जिसके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा और यही इस नीति का उद्देश्य है।

''शिक्षक प्रभावशीलता'' अवधारणा का सम्बन्ध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है, अर्थात् एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से अपने शिष्यों को किस प्रकार संतुष्ट कर पाता है? वह स्तर शिक्षक की प्रभावशीलता का द्योतक है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का मापक उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त विद्यार्थी संतुष्टि स्तर, शिक्षार्थियों की सफलता का स्तर एवं विशिष्ट एवं शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर होते हैं। इस प्रकार अध्यापक प्रभावशीलता का सम्बन्ध उसकी शिक्षण निष्पादन क्षमता से है जिसे वह अपने शिक्षण कौशलों व अर्जित ज्ञान के माध्यम से शिष्यों को कक्षा में पढ़ाते हुए अर्जित करता है।

उपर्युक्त शोध में इन्हीं विचारों व भावों पर आधारित शिक्षण प्रभावशीलता को स्वीकारा गया है। अतः किसी शिक्षक के शिक्षण प्रक्रिया निर्धारित मानक, आवश्यक कौशल एवं आवश्यक पर्यावरण से समन्वित होकर जो शिक्षण उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं। यदि वे निर्धारित मानकों तथा आन्तरिक एवं बाह्य संदर्भों के अनुकूल है तो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली तथा उस शिक्षक को प्रभावशील

शिक्षक कहा जाएगा। समन्वित व संज्ञा स्वरूप अध्यापक प्रभावशीलता के नाम से जाना जाएगा।

समस्या कथन :–

''नई शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शिक्षण–अभ्यास के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में पारस्परिक सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में कोई पारस्परिक सहसम्बन्ध नहीं है।

2. शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में कोई पारस्परिक सहसम्बन्ध नहीं है।

परिसीमन :–

1. प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के चूरू जिले को सम्मिलित किया गया है।

2. अध्ययन के लिये चूरू जिले में संचालित बी.एड. महाविद्यालयों के कुल 800 प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

3. शोध अध्ययन में चूरू जिले के 20 बी.एड. महाविद्यालयों के 400 शहरी (200 छात्र + 200 छात्राएँ) एवं 400 ग्रामीण (200 छात्र + 200 छात्राएँ) प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

अध्यापक प्रभावशीलता मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा डॉ. (श्रीमती) उम्मे कुलसूम द्वारा निर्मित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं सहसम्बन्ध की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

तालिका संख्या . 1

ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर सहसम्बन्ध की गणना।

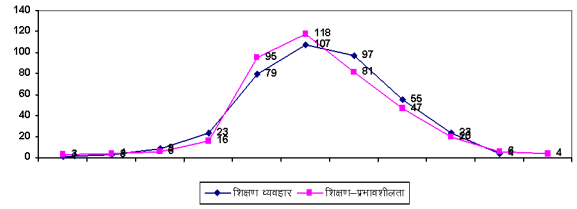
शिक्षण व्यवहार		शिक्षण–प्रभावशीलता		
वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	
100-109	1	400-419	3	
110-119	3	420-439	4	
120-129	8	440-459	6	
130-139	23	460-479	16	
140-149	79	480-499	95	
150-159	107	500-519	118	
160-169	97	520-539	81	
170-179	55	540-559	47	
180-189	23	560-579	20	
190-199	4	580-599	6	(r)= -0.056
		600-619	4	
योग	400	योग	400	

(df=N-2=400-2=398)

विश्लेषण : उपर्युक्त तालिका में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का प्रदर्शन किया है। कार्ल–पियर्सन के घुणन–आघुन सह–सम्बन्ध गुणांक विधि से सह–सम्बन्ध ज्ञात करने पर सहसम्बन्ध (r)= -0.056 प्राप्त हुआ। 398 (df) स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता का मान 0.113 तथा .01 स्तर पर सार्थकता का मान 0.148 सहसम्बन्ध की सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त सहसम्बन्ध का मान इन दोनों सार्थकता स्तर के मान से कम है। अतः यहाँ निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र

के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

आरेख संख्या – 1



तालिका संख्या . 2

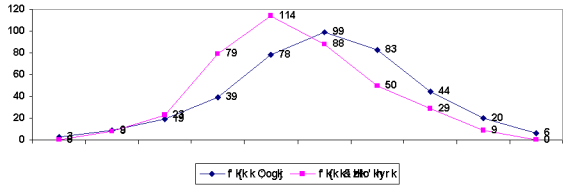
शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर सहसम्बन्ध की गणना।

शिक्षण व्यवहार		शिक्षण–प्रभावशीलता		
वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	
100-109	3	451-464	0	
110-119	9	465-479	8	
120-129	19	480-494	23	
130-139	39	495-509	79	
140-149	78	510-524	114	
150-159	99	525-539	88	
160-169	83	540-554	50	
170-179	44	555-569	29	
180-189	20	570-584	9	(r)= 0.054
190-199	6	585-599	0	
योग	400	योग	400	

(df=N-2=400-2=398)

विश्लेषण : उपर्युक्त तालिका में शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का प्रदर्शन किया है। कार्ल–पियर्सन के घुणन–आघुन सह–सम्बन्ध गुणांक विधि से सह–सम्बन्ध ज्ञात करने पर सहसम्बन्ध (r)= 0.054 प्राप्त हुआ। 398 ;कद्धि स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता का मान 0.113 तथा .01 स्तर पर सार्थकता का मान 0.148 सहसम्बन्ध की सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त सहसम्बन्ध का मान इन दोनों सार्थकता स्तर के मान से कम है। अतः यहाँ निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

आरेख संख्या – 2



निष्कर्ष निरूपण –

1. ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

2. शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में परस्पर सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

माथुर, एस.एस. (2008) :''शिक्षा मनोविज्ञान'' अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ संख्या–55,76,421.425

मित्तल, एम. एन. (2005): ''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'', इन्टरनेशल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृ. स.– 293–296

मेहता, वी.आर (2006) : ''उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा'' बी.ई. प्रथम कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा पृष्ठ संख्या–71

मेहता, वी.आर.(2006) : ''अध्ययन पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति'' मूल्यपरक शिक्षा, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृष्ठ संख्या–70

मोहन्ती जगन्नाथ (2006) : ''अध्यापक, शिक्षा दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–229

राय, पी.एन.(1981) : ''अनुसंधान परिचय'' चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या–63

शर्मा, आर.एस.(2004) : शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुक डिपो मेरठ पे. 145–213

शर्मा, वन्दना एवं राजकुमारी (2006):''शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन'' राधा प्रकाशन आगरा पृष्ठ संख्या–92

Culinary Adaptation in Mewar: A Study of Traditional Cooking Techniques, Ingredients, and Climate-Based Food Practices



Ranjana Vaishnava
Research scholar
Pacific academy of higher education and research university. Udaipur Rajasthan.
Mob. 9460279647
Email : rvaishnava20@gmail.com

Abstract

The cuisine of the Mewar region in Rajasthan reflects a deep connection between food practices, environmental conditions, and cultural traditions. This article examines the traditional cooking techniques, locally sourced ingredients, and their adaptation to the arid and semi-arid climate of Mewar. It highlights how scarcity of water, extreme temperatures, and seasonal availability of resources have shaped a sustainable and resilient food system. The study emphasizes the relevance of these practices in modern times and the need for their preservation.

Keywords

Mewar cuisine, cooking techniques, traditional ingredients, climate adaptation, Rajasthan, culinary heritage

1. Introduction

Food practices in any region are strongly influenced by geographical and climatic conditions. The Mewar region of Rajasthan, known for its dry climate and limited water resources, has developed a distinctive culinary tradition. The local cuisine demonstrates a remarkable ability to adapt to environmental constraints while maintaining nutritional balance and rich flavors. Traditional knowledge systems have played a key role in shaping these practices, making them sustainable and resource-efficient.

2. Traditional Cooking Techniques in Mewar

Cooking techniques in Mewar are designed to conserve resources and enhance food longevity. Some of the most prominent methods include:

2.1 Slow Cooking (Dum Method)

Slow cooking allows food to retain its natural flavors and nutrients. This method is widely used in dishes like dals and curries, where ingredients are cooked over low heat for extended periods.

2.2 Use of Earthenware (Clay Pots)

Clay utensils are traditionally used for cooking as they distribute heat evenly and enhance taste. They also help in retaining moisture, reducing the need for excess water.

2.3 Sun-Drying and Preservation

Due to extreme climatic conditions, sun-drying is a common technique for preserving vegetables and spices. Ingredients like ker and sangri are dried and stored for long periods.

2.4 Minimal Water Cooking Techniques

Given the scarcity of water, many dishes are prepared using very little water. Steaming and roasting are preferred over boiling.

3. Traditional Ingredients of Mewar

The ingredients used in Mewari cuisine are locally sourced and climate-resilient.

3.1 Millets and Grains

Bajra and jowar are staple grains due to their ability to grow in dry conditions. They are highly nutritious and form the basis of daily meals.

3.2 Pulses and Legumes

Moong, chana, and urad are commonly used, providing essential proteins in a predominantly vegetarian diet.

3.3 Dairy Products

Ghee and buttermilk are integral to the cuisine, offering both flavor and nutrition while also aiding digestion in hot climates.

3.4 Indigenous Vegetables and Spices

Dried vegetables such as ker and sangri, along with spices like asafoetida, turmeric, and red chili, add distinct flavors and have medicinal properties.

4. Adaptation to Climate Conditions

The harsh climate of Mewar has significantly influenced its food practices.

4.1 Water Scarcity Adaptation

Cooking methods minimize water usage, and foods are designed to require less hydration during preparation.

4.2 Heat Resistance and Energy Needs

Foods rich in ghee and carbohydrates provide energy and help the body cope with extreme temperatures.

4.3 Preservation for Long Shelf Life

Sun-dried foods and pickles ensure availability during off-seasons and drought conditions.

4.4 Seasonal Food Practices

Seasonal ingredients are prioritized, ensuring freshness and nutritional balance throughout the year.

5. Discussion

The study reveals that Mewari cuisine is not only culturally rich but also environmentally sustainable. The integration of traditional cooking techniques and climate-appropriate ingredients reflects a deep understanding of ecological balance. However, modern lifestyles and the increasing popularity of processed foods pose a threat to these practices. There is a growing need to document and promote this knowledge for future generations.

6. Conclusion

The culinary practices of Mewar demonstrate a harmonious relationship between food, culture, and environment. Traditional cooking techniques, ingredients, and climate-based adaptations form a sustainable food system that is highly relevant in today's context of environmental challenges. Preserving these practices is essential for maintaining cultural identity and promoting sustainable living.

7. References

Sharma, R. (2018). Traditional food culture of Rajasthan. Jaipur: Heritage Publishers.

Singh, A. (2020). Climate-based dietary practices in arid regions. Journal of Food and Culture, 12(2), 45-52.

Joshi, P. (2019). Indigenous cooking methods and sustainability. Indian Culinary Review, 8(1), 22-30.

Problems of District Level Weightlifting Players and Their Significance

Dr. Bhupendra Singh Chouhan
Dean, Faculty of Physical Education,
B.N. University, Udaipur



Rakesh Paliwal
Research Scholar,
B.N. University, Udaipur



Abstract

There are different problems that are faced in every game. Weightlifting is not an exception. It is not popular sport like football, basketball or cricket in India. Players are not provided with required motivation and facilities especially at the initial level i.e. district level. It is very important that players learn a lot related to all aspects of sports from the beginning so that their journey of sports will be hassle free and pleasant. In this research work it has been strived to find out the significance of different problems being faced by weightlifting players at district level. This study was executed in 6 districts of Udaipur division and the primary data that was collected from the weightlifters was assessed, analyzed and tested statistically. It was found that lack of professional coaching, academic pressure and inadequate equipments are the significant problems while other problems are not significant. There is wide difference among level of problems. Weightlifting player consider lack of professional coaching is the major problem that poses big hurdle in growth and must be addressed quickly.

Keywords: Weightlifting, coaching, academic pressure, equipments

Introduction

Weightlifting is a sport that requires robust and strong body with agility to lift the weights absorbs the jerks. It is a sport that requires strength as well as strategy. With proper training, diet and supportive environment players could gradually increase their power agility and keep themselves fit and away from injuries.

Sedentary lifestyle is quite dangerous for the adolescents and youth. They need to do lot of exercise and hard work in order to be physically active. There are many cases that shows strength training is extremely beneficial for physical fitness of the youth and adults. It does not have any harm, if it is done under the supervision of experts. Strength training is also helpful for developing the weightlifting and power lifting players.1

Resistance training is helpful for developing muscular strength and power among athletes. It can help them in prevention of injury while playing sports. It improves the performance of athlete at the initial stage and helps him to sustain the performance later on.2

Weightlifting is a dynamic strength and power sport in which two, multi joint, whole-body lifts are performed in competition; the snatch and clean and jerk. During the performance of these lifts, weightlifters have achieved some of the highest absolute and relative peak power outputs.3

Intensive research has been done to identify the obstacles faced by junior level weightlifting players from the perspective of coaches in Egypt. On ten different aspects containing 51 items, opinion of 31 coaches was collected successfully and was

analyzed. It showed that funding and budgeting is the biggest obstacle in development of healthy training program at educational institutions for weightlifting players. It was followed by the socio economic situation and community culture. Without addressing these problems it would not be possible to develop good athletes; proper planning is required for solution of these problems.4

Common perception and notion among masses that weightlifting is not suitable for adolescents as it may cause severe injury. Though the facts reveal different aspect that when effective training related to weightlifting is provided to the adolescents considering their age group and physical variables, it actually enhances strength, endurance, mental fitness, competitiveness and do not harm them in any way. Training has to be provided by the expert and required precautions need to be taken.5

Research Hypothesis:

Null Hypothesis (H?): There is no significant problem for district level weightlifting players.

Alternative Hypothesis (H?): There is significant problem for district level weightlifting players.

Research Methodology

This was a primary data based research in which the required information was directly collected from the weightlifting players who have at least played in one district level tournament. These were all below 18 years of age and were living in 6 districts of Udaipur division namely Udaipur, Rajsamand, Dungarpur, Banswara, Chittorgarh and Pratapgarh. Five boys and five girls from each district have been chosen for this research. In total opinion of 30 girls and 30 boys were collected with the help of structured questionnaire that was framed on 10 point scale. Players were asked to rate the level of problem they faces on 10 point scale i.e. from 1 to 10 one means list lowest level of problem while 10 means highest level of problem (extremely severe problem).

Data Analysis

Data collected from 60 district level weightlifting players has been tabulated ahead which shows average level of problem being faced by weightlifting players. T value shows that where it is below 1.96, the problem is not significant. The P value indicates that where the value is less than 0.05, it is significant problem.

Gender bias and social stigma problem is just 22.40%. Parental support related issues and problems are quite low at 32.60% while the injuries and their recovery related problem is 43.10%. Inadequacy of nutrition related knowledge is 54.40%. All these problems are not significant statistically.

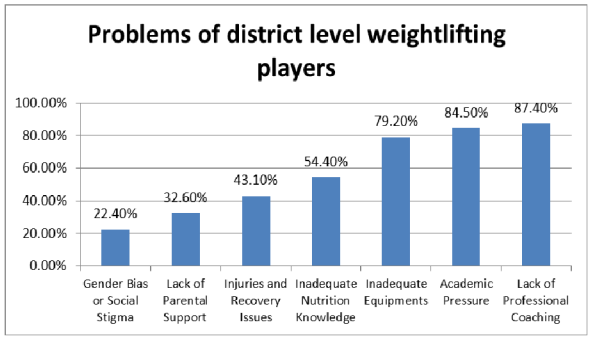
In adequate equipments related problem is 79.20%. Problem of academic pressure being faced by the players as they are student too is 84.50%. Lack of professional coaching facilities at this junior level is 87.40% which is the biggest problem.

So the null hypothesis is rejected and the alternate hypothesis is accepted. There is significant problem for district level weightlifting players.

Table 1: Problems of weightlifting players

Problem	Avg. Score	T Value	P Value
Inadequate Nutrition Knowledge	5.44	1.78	0.14
Inadequate Equipments	7.92	2.85	0.00
Lack of Professional Coaching	8.74	3.28	0.00
Injuries and Recovery Issues	4.31	1.26	0.32
Academic Pressure	8.45	3.06	0.00
Lack of Parental Support	3.26	1.13	0.43
Gender Bias or Social Stigma	2.24	0.82	0.61

Chart 1



Conclusion and Suggestions

Gender issues that girls are not fit for strength sports and parents' apprehension related to sports have reduced now, and are not a big problem. It seems that a big change has come in the society towards the sports and athletics. People have started giving respect to the players and appreciate their efforts and achievements.

Junior athlete should also be provided a chance to get training from the experienced coaches and senior player so that they could learn proper advanced training techniques and strategies to perform well in the tournaments. Special additional classes must be arranged by the schools so that proper balance could be maintained between academics and sports. This will not lead to the stress among junior players and they would be able to see more acceptance and support from the family. The gymnasiums which are available to the district level players are under equipped and lack proper barrels, plates and platforms. That needs to be provided on priority basis considering it as essential.

References:

1. Faigenbaum, A. D. (2000). Strength training for children and adolescents. Clinics in sports medicine, 19(4), 593-619.

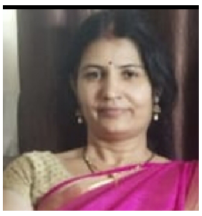
2. Kraemer, W. J., & Fleck, S. J. (2005). Strength training for young athletes. Human Kinetics.

3. Storey, A., & Smith, H. K. (2012). Unique aspects of competitive weightlifting: performance, training and physiology. Sports medicine, 42, 769-790.

4. Abdelhamid Elemiri, A., & Hassan Mohamed, M. (2015). Obstacles influencing the educational-training environment of the junior weightlifters according to elite coaches' perceptions (Evaluative study with strategic approach). Journal of Applied Sports Science, 5(3), 104-118.

5. Pierce, K. C., Hornsby, W. G., & Stone, M. H. (2022). Weightlifting for children and adolescents: a narrative review. Sports health, 14(1), 45-56.

महात्मा गांधी की भाषा नीति : भाषा विकास के संबंध में



डॉ. अर्चना कुमारी
सहायक आचार्या (हिंदी)
मेहता कॉलेज एंड इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी ग्रैंड
सीकर रोड जयपुर राजस्थान

सारांश

प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा होती है। भारत विभिन्न संस्कृतियों व बोलियों वाला देश है। सभी प्रांतों की अपनी संस्कृति है ,अपनी भाषा है ,अपनी एक अलग पहचान है। फिर भी भारत को विविधता में एकता स्थापित करने वाला राष्ट्र माना जाता है। इस धारणा के पीछे कहीं ना कहीं भाषा का विशेष योगदान रहा है वह भाषा जो संपूर्ण राष्ट्र में समझी व बोली जाती है। इस भाषा के विकास के लिए अनेक महापुरुषों व संस्थाओ ने कार्य किया महात्मा गांधी का नाम इनमें से एक है। उन्हें अपने आप में एक भाषाई संस्था कहा जा सकता है।

मुख्य शब्द– भाषा नीति, संकीर्ण, तानाशाही, समुदाय, हिन्दुस्तानी, राष्ट्रभाषा

प्रस्तावना –

जब से मानव ने समूह में रहना सीखा है तभी से उसे अपने विचारों के आदान–प्रदान के लिए भाषा की जरूरत पड़ी। जैसे–जैसे उसका मस्तिष्क परिपक्व होता गया और उसने ध्वनियों को पहचानना शुरू किया तभी से ही भाषा की उत्पत्ति हुई। प्रारंभ में मुख से निकली प्रत्येक ध्वनि भाषा के रूप में ग्रहण की गई जैसे हैईसा३.. हा– हा है–है ,ऊंऊं आदि । और आज वह अनेक रूपों में हमारे सामने उपस्थित हैं तथा अनेक नामों से हम इसकी पहचान भी करते हैं जैसे हिंदी, अंग्रेजी ,संस्कृत, उर्दू ,अरबी, फ्रेंच,जापानी आदि। हिंदी हमारी सांस्कृतिक भाषा है हमारी राष्ट्रीय चेतना की भाषा है और यदि सभी भारतीय इसका व्यवहार में प्रयोग नहीं करेंगे तो बेबल की मीनार बनाने वालों जैसे ही दुर्दशा निश्चित है राष्ट्रीय भाषा से ही राष्ट्रीय भावना सुदृढ़ होती हैं अंग्रेजी पढ़ना बुरा नहीं है किंतु अपनी भाषा को ही हीन भावना से देखना बुरा है हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसमें उस भाषा के क्षेत्र के बाहर के साहित्यकारों ने भी पर्याप्त मात्रा में साहित्यिक रचनाएं की सन 1956 ईस्वी में भाषावार प्रांतों की स्थापना के साथ ही यह भाषा एकता फीकी पड़ गई हर प्रांत को अपने संकीर्ण प्रदेश के साथ–साथ प्रादेशिक भाषा की भी चिंता होने लगी अपनी–अपनी भाषा के विकास की चिंता सबको होती तो उससे हिंदी का लाभ ही लाभ था परंतु कुछ लोगों को अंग्रेजी की चिंता होने लगी और हम गांधी जी को भूल गए उनके विचारों को भूल गये। अंग्रेजों की दास्तां से तो हम मुक्त हो गए किंतु मानसिक दासता से मुक्त नहीं हो पाए ,माना कि हमारे देश की सभी भाषाएं राष्ट्र की भाषाएं हैं परंतु हिंदी सर्वदेशिक भाषा है आज के समय में भाषा के विकास के लिए विचार किया जाए तो गांधी जी के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

महात्मा गांधी की भाषा नीति और मातृभाषा–

भाषा के क्षेत्र में देखा जाए तो अनेक विद्वानों का विशेष योगदान रहा है परंतु महात्मा गांधी की भाषा नीति को विशेष रूप में देखा जाता है वह इसलिए कि भाषा के प्रति जो दृष्टिकोण आज के समय में हो रहा है उसके ठीक विपरीत गांधी जी के विचार थे जिस हीन भावना की शिकार आज की पीढी हो रही है उसकी वजह भी भौतिक चकाचौंध के साथ–साथ भौतिकता की ओर भागती

मानसिकता व अपने आप को आधुनिक व समय के साथ कदम मिलाकर चलने की कोरी मानसिकता को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है महात्मा गांधी मातृभाषा के हिमायती थे यह मातृभाषा कोई भी भाषा या प्रादेशिक भाषा हो सकती है, वे बालक को शिक्षा हेतु भी मातृभाषा की सिफारिश करते थे उनका मानना था कि मनुष्य चाहे तो पूरे संसार में बोली जाने वाली भाषाओं को सीखें परंतु मातृभाषा के प्रति लगाव व प्रेम को देखा जाए तो उसकी मातृभाषा ही उसके लिए सर्वोपरि होनी चाहिए। वे अंग्रेजी भाषा को माध्यम के रूप में प्रयोग करने के विरोधी थे तथा वे इसे मानसिक दासता के रूप में देखते थे अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया है–"मुझे अपनी मातृभाषा के साथ इस तरह चिपटा रहना चाहिए जिस तरह से बालक अपनी मां के स्तनों से चिपकता है चाहे उसमें कितने ही दोष हों वही मुझे जीवनदायक दुग्ध प्रदान कर सकती है"अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाएं बालकों की मौलिकता को नष्ट करती हैं इसलिए बेसिक शिक्षा मातृभाषा में ही प्रदान की जाए महात्मा गांधी ने पाठ्यक्रम में मातृभाषा को प्रमुख स्थान दिया है यंग इंडिया में उन्होंने लिखा– " अगर मेरे हाथों में तानाशाही सत्ता होती तो मैं आज से ही हमारे लड़के और लड़कियों की विदेशी माध्यम के जरिए शिक्षा बंद करा देता, और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरों से यह माध्यम तुरंत बदलवा दूं या उन्हें बर्खास्त कर दूं, मैं पाठ्य पुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूंगा वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे–पीछे चली आएंगी "ज्ञानोपार्जन हेतु भी उन्होंने मातृभाषा को ही सर्वश्रेष्ठ बताया उनका मानना था कि बालक सर्वप्रथम अपनी मां की भाषा सीखता है और उस भाषा से उसका लगाव मृत्युपर्यंत बना रहता है यदि इसी भाषा में उसे ज्ञान प्रदान किया जाए तो यह ज्ञान अधिक मजबूत होगा तथा उसके मानसिक स्तर को भी बढ़ाएगा ।साथ ही बालक की मौलिकता में भी वृद्धि होगी और मौलिकता में वृद्धि होगी तो नए–नए अविष्कार होंगे जो देश को उन्नति की ओर अग्रषित करेंगे गांधी जी चाहते थे कि बुनियादी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक सब कुछ मातृभाषा के माध्यम से हो। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान ही समझ लिया था कि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा हमारे भीतर राष्ट्र प्रेम को मारने व पीछे हटाने की मुख्य जड़ है 'हिंद स्वराज' में गांधी जी लिखते हैं – करोड़ों लोगों को अंग्रेजी शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है मैकाले ने जिस क्षण शिक्षा की प्रणाली डाली वह सचमुच गुलामी के क्षण थे उसने इसी इरादे से यह योजना बनाई, यह मैं नहीं कहना चाहता किंतु उसके कार्य का परिणाम यही हुआ है हम स्वराज की बात भी परायी भाषा में करते हैं यह कितनी बड़ी दरिद्रता है?..... अंग्रेजी शिक्षा से अत्याचार आदि बढ़े हैं अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों ने जनता को थकान और परेशान करने में कोई कसर नहीं रखी। भारत को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग हैं जनता की हाय अंग्रेजों को नहीं हमें लगेगी।"अपने अनुभवों से गांधी जी इस निष्कर्ष पर पहुंचे– "अंग्रेजी शिक्षा के कारण शिक्षितों और शिक्षकों के बीच कोई सहानुभूति कोई संवाद नहीं है शिक्षित समुदाय ही शिक्षित समुदाय के दिल की धड़कन को महसूस करने में असमर्थ है।

महात्मा गांधी और राष्ट्रभाषा हिंदी–

देखा जाए तो महात्मा गांधी का जन्म स्थान गुजरात था तथा गुजराती उनकी मातृभाषा थी परंतु व्यापक दृष्टिकोण के धनी भारतीयता को धारण किए यह विभूति केवल अपने बारे में ही नहीं बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के बारे में सोचते थे क्योंकि पूरे भारत में 'पग– पग पर बदले पानी, पग –पग पर बदले वाणी', कहावत पूरी तरह से चरितार्थ होती है गांधी जी का मानना था कि कोई एक भाषा ऐसी होनी चाहिए जो संपूर्ण राष्ट्र में बोली व समझी जाए। और हिंदी में यह खूबियां थी ।स्वतंत्रता से पूर्व ही न केवल हिंदी भाषी नेताओ ने बल्कि अहिंदी भाषी गण्यमाण्य व्यक्तियों ने हिंदी को अखिल भारतीय संपर्क भाषा बनाने के विचार को बल दिया । जिनमें से एक महात्मा गांधी थे। महात्मा गांधी ने इसका पूर्ण समर्थन

किया तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हिंदी को अपनी नीति व कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग भी बनाया। साथ ही हिंदी भाषी प्रांतों में भी हिंदी का प्रचार कार्य बढ़ने लगा गांधीजी भारत में भाषागत विभिन्नताओं से पूर्णतरू परिचित थे। तथा वे चाहते थे कि देश में राष्ट्रीय चेतना एवं एकता लाने के लिए अहिंदी भाषी भी हिंदी पढ़ें और हिंदी सीखें । 16 जून 1920 के' यंग इंडिया' में गांधी जी ने लिखा था– "मुझे पक्का विश्वास है कि किसी दिन द्रविड़ भाई–बहिन गंभीर भाव से हिंदी का अभ्यास करने लग जाएंगे। आज अंग्रेजी पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए वे जितनी मेहनत करते हैं उसका आठवां हिस्सा भी हिंदी सीखने में करें तो बाकी हिंदुस्तान के जो दरवाजे उनके लिए बंद हैं वे खुल जाएंगे और वे भी इस तरह हमारे साथ एक हो जाएंगे जैसे पहले कभी नहीं थे "गांधीजी यह भी जान चुके थे कि भारत में अंग्रेजी के प्रति लगाव व प्रेम बढ़ता ही जा रहा है जो देश के लिए घातक है 2 फरवरी 1921 के 'यंग इंडिया' के अंक में उन्होंने इस चिंता को व्यक्त किया है "आजकल तो अंग्रेजी ने हमारे हृदयों के प्रिय स्थान पर जबरन स्थान बना लिया है और हमारी मातृभाषाओं को वहां से सिंहासन च्युत कर दिया है अंग्रेजी के साथ हमारे बराबरी के संबंध न होने के कारण वह इस अस्वाभाविक स्थान पर बैठ गई है अंग्रेजी से छुटकारा पाना स्वराज के लिए एक जरूरी काम है"समय–समय पर अहिंदी भाषी लोगों को हिंदी सीखने की प्रेरणा भी दी थी और कहा कि–"कुछ लोग अपने मन से सर्वसाधारण का ख्याल ही भुला देते हैं अंग्रेजी को हिंदी की बराबरी से चलने वाली ही नहीं बल्कि एकमात्र शाक्य भाषा राष्ट्रभाषा मानते हैं परदेसी जुए की मोहनी न होती तो इस बात की कोई कल्पना भी न करता। "भारत के विभिन्न नेताओं ने भी गांधी जी के इस विचार का समर्थन करते हुए हिंदी को ही अखिल भारतीय संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया इसके पीछे यह धारणा रही कि हिंदी संपूर्ण भारत की राष्ट्रीय चेतना को एक सूत्र में पिरोने में पूरी तरह से कामयाब हो सकती है संविधान में हिंदी को महत्वपूर्ण स्थान मिलना आकस्मिक घटना नहीं कहा जा सकता क्योंकि अनेक वाद विवाद व काफी संघर्ष के बाद उसे यह पदवी मिली है यद्यपि वे अहिंदी प्रांत के थे परंतु देश में एकता स्थापित करने के लिए हिंदी के महत्व को उन्होंने मन व आत्मा से स्वीकार किया था सन 1935 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के इंदौर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए गांधी जी ने स्पष्ट कहा था–"अगर हिंदुस्तान को हमें सचमुच एक राष्ट्र बनाना है, तो चाहे कोई माने या ना माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है वह किसी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकता हिंदू मुसलमान दोनों को मिलाकर करीब 22 करोड़ मनुष्यों की थोड़े बहुत हेर– फेर से हिंदी हिंदुस्तानी ही है।"देश की स्थिति को देखते हुए यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि देश में एकता स्थापना की दृष्टि से भी हिंदी ही सबसे समर्थ माध्यम है भारत की यही एक ऐसी भाषा है जिसे प्रांत का आदमी आसानी से समझ सकता है तथा बोल सकता है स्वतंत्रता आंदोलन के साथ–साथ राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य को भी महात्मा गांधी ने अग्रसर किया सन 1917 ईस्वी में गुजरात शिक्षा परिषद के अधिवेशन में गांधी जी ने कहा कि राष्ट्रभाषा अंग्रेजी नहीं हो सकती और सन 1918 में कांग्रेस के इंदौर अधिवेशन में उन्होंने कहा कि–"मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए।"इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने कहा कि "हिंदी का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है"उन्होंने सैद्धांतिक दृष्टि से राष्ट्रभाषा की व्याख्या करते हुए उसे भाषा के लिए कुछ आवश्यक शर्तें भी बताई जो इस प्रकार है–

1. वह भाषा राष्ट्र के बहुसंख्यक लोग जानते बोलते हों जो सीखने में सरल हो
2. जिसके द्वारा भारतवर्ष के धार्मिक आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवहार निभा सके
3.उसकी व्याकरण एवं संरचना सरल ,सुबोध और वैज्ञानिक हो
4.उसकी शब्दावली व अभिव्यंजनात्मक क्षमता उत्तम हो

5. उसमें जीवंतता व सजीवता हो

6. उसकी लिपि पूर्ण और वैज्ञानिक हो

गांधी जी का मानना था यह सभी गुण हिंदी भाषा में है महात्मा गांधी ने सन 1936 ईस्वी में कहा था–"अगर हिंदुस्तान को सचमुच आगे बढ़ाना है तो चाहे कोई माने या ना माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता"अगर स्वराज अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का हो और उन्हीं के लिए होने वाला हो तो निरूसंदेह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी लेकिन अगर स्वराज करोड़ों भूखों मरने वालों निरक्षरों और दलितों तथा अंत्यजों का हो और उन सब के लिए होने वाला हो तो हिंदी ही एक मात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है इन लक्षणों से युक्त हिंदी की समता करने वाली दूसरे कोई भाषा है ही नहीं। हिंदी भाषा का निर्माण राष्ट्र के योग्य ही हुआ और बहुत वर्षों पहले राष्ट्रभाषा की भांति व्यवहृत हो चुकी है।"महात्मा गांधी की प्रेरणा से ही वर्धा और मद्रास में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति स्थापित हुई इसने हजारों प्रचारकों को नहीं हजारों लाखों लोगों को हिंदी सिखाई दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास की स्थापना गांधी जी ने ही की केरल कर्नाटक आंध्र प्रदेश में भी शाखाएं खोली गई राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, हिंदुस्तानी प्रचार सभा वर्धा, हिंदी विद्यापीठ मुंबई, गुजरात विद्यापीठ, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे और हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद आदि प्रचार सभाओं ने अपने–अपने प्रदेश में उल्लेखनीय कार्य किया ये संस्थाएं आज तक सक्रिय हैं। इस प्रकार महात्मा गांधी के प्रयत्नों से पूरे देश में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार प्रचार हुआ और भाषा की एकता के साथ गांधीजी ने देश को एक करने में सफलता प्राप्त की अब राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रभाषा एक दूसरे का पर्याय बन गए थे।

निष्कर्ष –

प्रारंभ में भारत में संपर्क भाषा के रूप में संस्कृत को उच्च स्थान प्राप्त था किंतु धीरे–धीरे यह स्थान हिंदी भाषा ने ग्रहण कर लिया स्वाधीनता आंदोलन के दौरान ही यह महसूस किया गया कि राष्ट्रीय एकता के लिए तथा अपने विचारों को आम जनता तक पहुंचाने के लिए एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जो सब समझ व बोल सके इसके लिए अनेक प्रचार सभाओं का गठन किया गया राष्ट्रभाषा प्रचार सभावर्धा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास प्रचार सभा आदि की स्थापना गांधीजी द्वारा की गई। अनेक महापुरुष इस क्षेत्र में विशेष योगदान दे रहे थे परंतु गांधी जी की भाषण नीति आज भी प्रासंगिक है उन्होंने न केवल राष्ट्र प्रेम की भावना को जागृत किया बल्कि राष्ट्रभाषा प्रेम को भी बढ़ाया उनके प्रयासों से हिंदी को नवजीवन मिला। वर्तमान समय में भाषा विकास में भाषा के प्रति उनके विचारों को आत्मसात कर हम मानसिक विकास को आगे बाधा सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. "हिंदी भाषा"– डॉ. हरदेव बाहरी
2. "हिंदी भाषा हिंदी भाषा का उद्भव और विकास तथा बोलियां"– डॉ. हेतु भारद्वाज
3. "भाषा विज्ञान"– डॉ. भोलानाथ तिवारी
4. "हिंदी शिक्षण"– डॉ. अमरेंद्र सिंह
5. "शिक्षा में दर्शन एवं प्रमुख शिक्षा शास्त्री"– डॉ राकेश शर्मा
6. "समकालीन भारत एवं शिक्षा"– डॉ. विमल डॉ अरुण गुप्ता
7. "प्रभात खबर" डिजिटल लेख– डॉ. अमरनाथ

To Study Effect of Different Training Methods on Hand and Shoulder Muscle Strength and Abdominal Strength on Hockey Players



Dr. BHAWANI PAL SINGH RATHORE
HOD, Department Of Physical Education
J.R.N. Rajasthan Vidyapeeth, University, Udaipur



Karan Singh Sarangdevot
Research Scholar
J.R.N. Rajasthan Vidyapeeth University, Udaipur

Introduction:

The aim of Physical Education programme is to make healthy, physically fit, socially active and morally stable builders of a new society and true defenders of their nation. The aim of Physical Education programmes are imparting health, comprehensive and harmonious development of human body and their functions.

Selection of Subjects

The purpose of the study was to see the effect of Plyometric and Circuit Training on Selected Physical, Physiological and Psychological Variables on school children. In order to draw an adequate representative sample, 150 Hockey Players from Udaipur division were selected as subjects with age ranging between 14 to 16 years. Total 150 Hockey Players were selected as subjects for the sample of the present study, from which 50 Hockey Players were included in the plyometric training group, 50 Hockey Players in circuit training group and 50 Hockey Players were included in the control group.

Outline of Subjects

No.	Group	Training	No. of subjec
1	Plyometric Training Group	Plyometric Training	50
2	Circuit Training Group	Circuit Training	50
3	Control Group	Free from above training	50
Total			150

Criterion Measurement

No.	Variable	Test	Measurement
1	Hand and Shoulder Muscle Strength	Pull Ups	Number
2	Abdominal Strength	Bent Knee Sit Ups	Number

Accurate data was assured by reliability of authorized tools, reliability of test and efficiency of characters.

Reliability of Tools

To collect qualitative data for the present study, testing of research tools used in the present study was made following experts' guidance.

Test Reliability and Efficiency of Tester

Efficiency of tester is connected to reliability of test. To define reliability of test, it was tried out on 10 randomly selected subjects under ideal and same situation according to guidance of the guide. Correlation of scores obtained by those characters was found out, which is mentioned in the following table.

Reliability coefficient by Test-retest method

No.	Variable	Test	Coefficient of correlation
1	Hand and Shoulder Muscle Strength	Pull Ups	0.96
2	Abdominal Strength	Bent Knee Sit Ups	0.97

Table

Analysis of covariance of mean scores of Hand and Shoulder Muscle Strength of two experimental groups and a control group

Test	Groups			Analysis of variance				
	Plyometric	Circuit	Control	Sum of classes (SS)		*df*	MSS	*'F'*
Pre-Test Mean	6.32	6.74	6.86	A	8.04	2	4.02	1.497
				W	394.52	147	2.683	
Post-Test Mean	8.82	8.66	5.94	A	261.973	2	130.987	35.046*
				W	549.42	147	3.737	
Adjusted Mean	8.821	8.659	5.938	A	259.682	2	129.841	34.503*
				W	549.409	146	3.763	

*Significance Level at 0.05 'F' (2,147) = 3.057 & (2,146) = 3.058

In above table, the complete statistical data of Pre-Test Means, Post-Test Means and Analysis of Covariance is shown. Accordingly, in the performance of Hand and Shoulder Muscle Strength Test 'F' ratio of means of Pre-Test (Plyometric Group = 6.32, Circuit Group = 6.74 Control Group = 6.86) was found to be 1.497. Comparing it with Table value (3.057), it was found insignificant at 0.05 level. Therefore, the division of subjects in Two Experimental Group and control group was successful.

The 'F' ratio of Post-Test Means of all the three groups (Plyometric Group = 8.82, Circuit Group = 8.66 Control Group = 5.94) was found 35.046. Comparing it with Table value (3.058) it was found significant at 0.05 level. Therefore, it is proved that, because of the given training, the performance of the subjects is improved significantly. In addition, the 'F' ratio of Adjusted Means (Plyometric Group = 8.821,

Circuit Group = 8.659 Control Group = 5.938) was found to be 34.503. Comparing it with Table value (3.058) it was found significance at 0.05 level.

Table

Analysis of covariance of mean scores of Abdominal Strength of two experimental groups and a control group

Test	Groups			Analysis of variance				
	Plyometric	Circuit	Control	Sum of classes (SS)		*df*	MSS	*'F'*
Pre-Test Mean	17	16.94	16.8	A	1.053	2	0.526	0.099*
				W	776.82	147	5.284	
Post-Test Mean	22.76	22.82	16.78	A	1204.093	2	602.047	56.837*
				W	1557.08	147	10.592	
Adjusted Mean	22.751	22.817	16.791	A	1196.221	2	598.111	56.331*
				W	1550.171	146	10.617	

*Significance Level at 0.05 'F' (2,147) = 3.057 & (2,146) = 3.058

In the above table, the complete statistical data of Pre-Test Means, Post-Test Means and Analysis of Covariance is shown. Accordingly, in the performance of Abdominal Strength Test 'F' ratio of means of Pre-Test (Plyometric Group = 17, Circuit Group = 16.94 Control Group = 16.8) was found to be 0.099. Comparing it with Table value (3.057), it was found insignificant at 0.05 level. Therefore, the division of subjects in Two Experimental Group and Control Group was successful.

The 'F' ratio of Post Test Means of all the three groups (Plyometric Group = 22.76, Circuit Group = 22.82 Control Group = 16.78) was found 56.837. Comparing it with Table value (3.058) it was found significant at 0.05 level. Therefore, it is proved that, because of the given training, the performance of the subjects is improved significantly. In addition, the 'F' ratio of Adjusted Means (Plyometric Group = 22.751,

Circuit Group = 22.817 Control Group = 16.791) was found to be 56.331. Comparing it with Table value (3.058) it was found significance at 0.05 level.

References:

Anderson, Jammers, "Positive effect of Plyometric Training", Journal of Sport Science and Medicine (2002), P. 42.

European Journal of Applied Physiology, (14, October 2008), Online Internet, 21, January 2009.

James ,A. Gamer, "The effect of weight training and Plyometric training on vertical jump, standing broad jump and forty meters sprint", Dissertation Abstracts International, (1987), p. 47.

Javed, Q. S., "Stress and Mental Health of Athletes: A Correlation Study", Asian Journal of Physical Education & Computer Science in Sports, Volume 6, ., (2012), No. 1, p.12-13

Medhat ,Kasem , "Effectiveness of Shock Plyometric Training of Bone-Density and Protection From Fracture Injury In Athletes", World Journal of Sports Science, Volume-3, p.1-6, 2010.

P. Seenivasagam , "Effect of Lower Body Plyometric Training on Leg Strength, leg Endurance and Leg explosive Power of High School Boys," Unpublished master?s Thesis. M.S. University, Tirunelveli (1995).

Pradip,K.. Patel, "A Study of Effects of Plyometric Training on Abdomen Muscular Power and Endurance, Leg Strength, and Thighs and Calves Circumference", (Unpublished thesis, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad, (April - 2009).

A Study on assessment of functional fitness among Athletes and Non-Athletes of Kota Division



Dr. BHAWANI PAL SINGH RATHORE
HOD, Department Of Physical Education
J.R.N. Rajasthan Vidyapeeth University, Udaipur



Rakesh Sharma
Research Scholar
J.R.N. Rajasthan Vidyapeeth University, Udaipur

Introduction:

Population ageing is actually the process whereby the older population emerges to be a proportionately larger share of the total population and goes on to become one of the most egregious demographic phenomenon of the modern day world. Two evident aspects of the ageing process are being accepted globally, one is progressive demographic ageing of the older people and the other is the feminization of ageing. The 21st century has seen an unmatched demographic shift in the form of population ageing. This century has witnessed explosive increase in aging population with special reference to the women. This pace of demographic transition that prevails is inevitable. In the absence of a precise definition for an aged individual, yet an age more than 60 years is contemporarily accepted as an earmarking aspect indicating transition to old age. An ageing world poses social economic challenges not only to the family , but also to the society as a whole , and has to rise in order to meet these challenges

Selection of Subjects

The subjects selected for the study were community residing independently living without regular use of assistive device and without any medication condition that prohibited the subject from participation in the test. A total of one hundred (N-100) Sample out of which 50 each in the category of Athletes and Non Athletes from Kota Division, were selected as the subject of the study. The sampling technique for the selection of subject used was stratified convenient sampling method.

The data collection schedule for the subjects of Athletes is as follows :

In this schedule the data of 50 Athletes from Kota division was collected of the selected components.

The data collection schedule for the subjects of Non Athletes is as follows

In this schedule the data of 50 Non-Athletes from Kota division was collected of the selected components.

Demographic Profile

Demographic profile describes the adequate information about the participants. The details adopted from the demographic profile has been mentioned below :

1) Name
2) Age (in years)
3) Height(in cm)
4) Weight (in kg)

5) Days of physical activity participation per week

6) Type of physical activity

Selection of Variables

Based on the purpose of the study the following three variables were selected for assessment in the Athletes and Non-Athletes from Kota division:

(i) Physical Activity Levels

(ii) Functional Fitness (Senior fitness test battery by Rikli & Jones (1999)

(iii) Psychological Well Being

Criterion Measures

The standard procedure was used for the purpose of data collection from the sample:

1. Physical activity participation was assessed by administering the Rapid Assessment of Physical Activity (RAPA) questionnaire, which helps to assess the level and intensity of physical activity.

2. Lower Body Strength was measured with the help of Chair Stand Test and the scoring was number of standing up cycles performed in 30 seconds.

3. Upper Body Strength was measured with the help of Arm Curl Test and the score was the total number of correctly performed forearm flexions within 30 seconds .

4. Lower Body Flexibility was measured with the help of Chair Sit and Reach Test and the score was the distance measured between the middle finger and the first toe . A positive value "+" indicated that the fingers crossed the toe line, and a negative - " value indicated that the fingers did not cross the toe line. The score was given to the nearest 0.5 cm.

5. Upper Body Flexibility was measured with the help of Back Scratch Test and the score was the distance measured between the middle fingers of the hands. If the fingers overlapped, the value was positive - "+", if otherwise, a negative - " score was awarded. The score was taken to the nearest 0.5cm.

6. Agility was measured with the help of 8 feet Up and Go Up test and the score was the time taken by the subject in covering the distance from the chair to the pole and back .

7. Aerobic Endurance was measured with the help of 6 Minutes walk test and the score was the total distance covered by the subject during the 6 minute walk test.

8. Psychological Well Being was assessed by administering the Psychological Well Being questionnaire by Ryff (1995). It contains 18 statements and the response scale is based on a 6 points Likert scale. The response is anchored from strongly Agree to Strongly Disagree. The questionnaire consists of 6 dimensions namely: Autonomy, Environmental mastery, Personal Growth, Positive Relationship with Others , Purpose in life and Self-acceptance.

Table Testers Reliability by Test Retest Method for the Assessment of Functional Fitness Variables of Fitness Test by Rikli & Jones (1999)

Test Name	r-Values
Chair Stand Test	0.911
Arm Curl Test	0.922
Chair Sit and Reach Test	0.967
Back Scratch Test	0.981
Agility Test	0.984
Aerobic Endurance	0.997

Table : Explanation of Rapid Assessment of Physical Activity among Athletes and Non-Athletes based on the Activity Levels

Variable	Range of PhysicalActivity Level	Score	N(%)	
			60-64 years	65-70 years
Aerobic Activity	Sedentary	1	88 (58.66)	97 (64.66)
	Underactive	2	12 (8)	4 (2.66)
	Underactive regular light activities	3	0 (0)	3 (2)
	Underactive Regular	4 5	21 (14)	10 (6.66)
	Active	6 7	29 (19.33)	36 (24)
Strength & Flexibility Exercise	No activity to improve muscle strength and flexibility	0	102 (68)	106 (70.66)
	Activity to improve strength	1	5 (3.33)	0 (0)
	Activity to improve flexibility	2	25 (16.66)	30 (20)
	Both (strength and flexibility)	3	18 12)	14 (9.33)

Table shows the Rapid Assessment of Physical Activity participation (Aerobic activity) among Athletes based on the Activity Levels, the following are the data obtained: 58.66% were falling under the sedentary level; 8% under the underactive levels; 0% in underactive regular light activity ;14% in underactive regular; 19.33% in active levels and in Non-Athletes based on the Activity Levels, the following are the data obtained: 64.66% were falling under the sedentary level; 2.66% under the underactive levels; 2 % in underactive regular light activity; 6.6 % in underactive regular; 24% in active levels. Similarly Based on the Rapid Assessment of Physical Activity participation (Strength & Flexibility exercise) among Athletes based on the Activity Levels, the following are the data obtained: 68 % were not performing any activity to improve muscle strength and flexibility; 3.3% were participating in activities to improve strength; 16.66% were participating in activities to improve flexibility; 12% were participating in both strength and flexibility activities. Rapid Assessment of Physical Activity participation (Strength & Flexibility exercise) between Non-Athletes based on the Activity Levels, the following are the data obtained: 70.66 % were not performing any activity to improve muscle strength and flexibility; 0 % were participating in activities to improve strength; 20 % were participating in activities to improve flexibility; 9.33% were participating in both strength and flexibility activities.

References:

Kinsella, K. G., & Phillips, D. R. (2005). Global aging: The challenge of success (Vol. 60, No. 1, p. 3). Washington, DC: Population Reference Bureau

Kochanek, S. A., & Hardgrave, R. L. (2007). India: Government and politics in a developing nation. Cengage Learning.

Parkar, S. R. (2015). Elderly mental health: needs. Mens sana monographs, 13(1), 91.

Timonen, V. (2008). Ageing societies: a comparative introduction. McGraw-Hill Education (UK).

World Health Organization. (2009). Women and health: today's evidence tomorrow's agenda. World Health Organization.

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन



डॉ. सुनीता मुर्डिया
मार्गदर्शिका
प्रोफेसर
माणिक्यलाल श्रमजीवी महाविद्यालय,
उदयपुर (राज.)



खुशबू दोषी
पीएच. डी. स्कॉलर
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
विश्वविद्यालय, उदयपुर राजस्थान

सार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति (SC) एवं अनुसूचित जनजाति (ST) के भावी शिक्षकों की स्व–सामर्थ्यता (Self-Efficacy) का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। स्व–सामर्थ्यता को चार प्रमुख आयामों–उच्च लक्ष्य निर्धारण, निरंतर प्रयत्नशीलता, आंतरिक उत्साह एवं लगन, तथा आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता के आधार पर मापा गया। अध्ययन में 400 प्रशिक्षु शिक्षक (200 SC एवं 200 ST) सम्मिलित किए गए, जिनमें प्रत्येक वर्ग से 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ थीं। आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान (Mean) के आधार पर किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की स्व–सामर्थ्यता अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई।

भूमिका (Introduction)

स्व–सामर्थ्यता (Self-Efficacy) व्यक्ति की वह आंतरिक धारणा है जिसके माध्यम से वह अपने कार्यों को सफलतापूर्वक करने की क्षमता पर विश्वास करता है। भावी शिक्षकों के लिए स्व–सामर्थ्यता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनके शिक्षण व्यवहार, निर्णय क्षमता एवं प्रेरणा को प्रभावित करती है।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि उनके आत्मविश्वास एवं प्रयास स्तर को प्रभावित करती है। इस अध्ययन में स्व–सामर्थ्यता को निम्नलिखित आयामों में विभाजित किया गया है :

1. उच्च लक्ष्य निर्धारण
2. निरंतर प्रयत्नशीलता
3. आंतरिक उत्साह एवं लगन
4. आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता

अध्ययन के उद्देश्य

1. SC एवं ST के छात्रों (Boys) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. SC एवं ST की छात्राओं (Girls) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. SC एवं ST के कुल विद्यार्थियों (200–200) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यायदर्श (Sample)

वर्ग	छात्र	छात्राएँ	कुल
उच्च उपलब्धि के अनुसूचित जाति (SC)	100	100	200
उच्च उपलब्धि के अनुसूचित जनजाति (ST)	100	100	200
कुल	**200**	**200**	**400**

अनुसंधान पद्धति (Methodology)

– अनुसंधान प्रकार : वर्णनात्मक (Descriptive)
– उपकरण : स्व–सामर्थ्यता मापनी
– सांख्यिकीय तकनीक : मध्यमान (Mean)

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1: SC एवं ST के छात्रों (Boys) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन

स्वसामर्थ्यता क्षेत्र	SC Mean	ST Mean
उच्च लक्ष्य निर्धारण	68.4	64.2
निरंतर प्रयत्नशीलता	70.2	66.1
आंतरिक उत्साह एवं लगन	69.5	65.3
आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता	67.8	63.7
समग्र स्वसामर्थ्यता	69.0	64.8

विश्लेषण :

सभी क्षेत्रों में उच्च उपलब्धि के SC छात्रों का मध्यमान ST छात्रों से अधिक है।

निष्कर्ष :

SC Boys की स्व–सामर्थ्यता उच्च उपलब्धि के ST Boys की तुलना में अधिक पाई गई।

सारणी 2: उच्च उपलब्धि के SC एवं ST की छात्राओं (Girls) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन

स्वसामर्थ्यता क्षेत्र	SC Mean	ST Mean
उच्च लक्ष्य निर्धारण	72.3	68.5
निरंतर प्रयत्नशीलता	73.8	69.7
आंतरिक उत्साह एवं लगन	72.5	68.9
आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता	71.0	67.2
समग्र स्वसामर्थ्यता	72.4	68.6

विश्लेषण :

छात्राओं में भी उच्च उपलब्धि के SC समूह का मध्यमान सभी क्षेत्रों में अधिक है।

निष्कर्ष :

SC Girls की स्व–सामर्थ्यता उच्च उपलब्धि के ST Girls से अधिक पाई गई।

सारणी 3 : SC एवं ST (कुल 200–200) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन

स्वसामर्थ्यता क्षेत्र	SC Mean	ST Mean
उच्च लक्ष्य निर्धारण	70.3	66.4
निरंतर प्रयत्नशीलता	72.0	67.9
आंतरिक उत्साह एवं लगन	71.0	67.1
आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता	69.4	65.4
समग्र स्वसामर्थ्यता	70.7	66.7

विश्लेषण :

समग्र स्तर पर भी उच्च उपलब्धि के SC विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है।

निष्कर्ष :

SC एवं ST के कुल विद्यार्थियों में स्व–सामर्थ्यता का अंतर स्पष्ट रूप से SC के पक्ष में है।

समेकित निष्कर्ष (Major Findings)

1. SC विद्यार्थियों की स्व–सामर्थ्यता ST विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।
2. छात्राओं का स्व–सामर्थ्यता स्तर छात्रों से अधिक है।
3. निरंतर प्रयत्नशीलता एवं आंतरिक उत्साह में अधिक अंतर देखा गया।
4. सभी क्षेत्रों में SC समूह का प्रदर्शन बेहतर रहा।

आंकड़ों का विश्लेषण (t-test सहित)

(स्वसामर्थ्यता – Self - Efficacy)

सारणी 1 : उच्च उपलब्धि के SC एवं ST के छात्रों (Boys) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन

स्वसामर्थ्यता क्षेत्र	SC Mean	SC SD	ST Mean	ST SD	t-value	Significance
उच्च लक्ष्य निर्धारण	68.4	5.2	64.2	5.8	4.21	Significant
निरंतर प्रयत्नशीलता	70.2	4.9	66.1	5.5	4.36	Significant
आंतरिक उत्साह एवं लगन	69.5	5.1	65.3	5.7	4.18	Significant
आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता	67.8	5.3	63.7	5.9	4.05	Significant
समग्र स्वसामर्थ्यता	69.0	5.1	64.8	5.7	4.32	Significant

$f = 198$, $t(0.05) = 1.97$

निष्कर्ष :

सभी क्षेत्रों में t-value सारणी मान से अधिक है, अतः अंतर सार्थक है।

सारणी 2: उच्च उपलब्धि के SC एवं ST की छात्राओं (Girls) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन

स्वसामर्थ्यता क्षेत्र	SC Mean	SC SD	ST Mean	ST SD	t-value	Significance
उच्च लक्ष्य निर्धारण	72.3	5.0	68.5	5.6	3.92	Significant
निरंतर प्रयत्नशीलता	73.8	4.8	69.7	5.4	4.10	Significant
आंतरिक उत्साह एवं लगन	72.5	5.1	68.9	5.7	3.85	Significant
आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता	71.0	5.2	67.2	5.8	3.76	Significant
समग्र स्वसामर्थ्यता	**72.4**	**5.0**	**68.6**	**5.6**	**3.98**	Significant

$df = 198$, $t(0.05) = 1.97$

निष्कर्ष

सभी क्षेत्रों में अंतर सार्थक पाया गया।

सारणी 3 : उच्च उपलब्धि के SC एवं ST (कुल 200–200) की स्व–सामर्थ्यता का तुलनात्मक अध्ययन

स्वसामर्थ्यता क्षेत्र	SC Mean	SC SD	ST Mean	ST SD	t-value	Significance
उच्च लक्ष्य निर्धारण	70.3	5.1	66.4	5.7	4.85	Significant
निरंतर प्रयत्नशीलता	72.0	4.9	67.9	5.5	5.02	Significant
आंतरिक उत्साह एवं लगन	71.0	5.0	67.1	5.6	4.76	Significant
आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता	69.4	5.2	65.4	5.8	4.68	Significant
समग्र स्वसामर्थ्यता	**70.7**	**5.1**	**66.7**	**5.7**	**5.12**	Significant

$df = 398$, $t(0.05) = 1.96$

निष्कर्ष :

समग्र स्तर पर भी अंतर अत्यधिक सार्थक (Highly Significant) है।

समेकित निष्कर्ष (Final Findings)

1. सभी क्षेत्रों में SC समूह का Mean ST से अधिक है।
2. सभी t-value सारणी मान से अधिक हैं? सभी अंतर सार्थक हैं।
3. छात्र, छात्रा और कुल–तीनों स्तरों पर SC की स्वसामर्थ्यता अधिक है।
4. निरंतर प्रयत्नशीलता और आत्मविश्वास में सबसे अधिक अंतर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

1. ST विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं प्रेरणा बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम आवश्यक हैं।
2. शिक्षक प्रशिक्षण में स्व–सामर्थ्यता विकास को शामिल किया जाना चाहिए।
3. लक्ष्य निर्धारण एवं आत्मनिर्भरता पर कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।

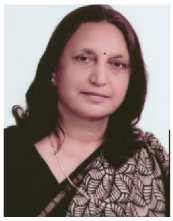
उपसंहार (Conclusion)

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों की स्व–सामर्थ्यता में अंतर पाया जाता है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, प्रयास एवं प्रेरणा स्तर अधिक पाया गया, जो उनके समग्र विकास को प्रभावित करता है।

संदर्भ (APA Style References)

1. Bandura, A. (1997). *Self-efficacy: The exercise of control*. Freeman.
2. Pajares, F. (2002). Overview of social cognitive theory and self-efficacy.
3. Schunk, D. H. (2012). *Learning theories: An educational perspective*. Pearson.
4. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). *Research in Education*. Pearson.
5. Koul, L. (2009). *Methodology of Educational Research*. Vikas Publishing.
6. Mangal, S. K. (2013). *Educational Psychology*. PHI Learning.
7. Singh, A. K. (2010). *Tests, Measurements and Research Methods*. Bharati Bhawan.

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि, का तुलनात्मक अध्ययन।



प्रो. सुषमा सिंह
प्राचार्य
जवाहरलाल नेहरू टीचर ट्रेनिंग
कॉलेज, लखावा, कोटा



गरिमा भारती
शोधार्थी
पी.एच.डी. (शिक्षा संकाय)
कोटा विश्वविद्यालय, बीकानेर

Key Word :- उच्च माध्यमिक, कला संकाय, बुद्धिलब्धि।

प्रस्तावना –

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो बालक के अन्दर बीज रूप में विद्यमान शक्तियों का न केवल प्रस्फुटन करती है वरन् उनका परिमार्जन व संवर्द्धन भी करती हैं। यहीं विचार पेस्टालॉजी ने भी व्यक्त किया है कि शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तितों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।

छात्रों की बुद्धि द्वारा प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि स्कूल या कॉलेज के स्तर को व्यक्त करती है इसके अलावा यह कक्षा में छात्रों के स्तर को भी निर्धारित करती है। बुद्धि द्वारा शैक्षिक उपलब्धि कई चरों पर निर्भर करती है – जैसे :– लिंग, जाति, स्थानीय भिन्नता, स्कूलों के प्रकार, अभिभावक की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव प्रमुख रूप से दृष्टिगत होता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि या उनके ज्ञान की परीक्षा प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में होती रहती है। प्राचीन काल में जब गुरू के पास लोग ज्ञानार्जन उद्देश्य से जाते थे तो पहले उनके ज्ञान, जिज्ञासा, भाव एवं निष्पत्ति की परीक्षा ली जाती थी। इस प्रकार तक्षशीला, नालन्दा, विक्रमशीला में जो विद्यार्थी प्रवेश पाना चाहते थे, उन्हें पहले द्वार–पण्डितों के प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता था। इस प्रकार उनकी निष्पत्ति परीक्षा ली जाती थी।

जब से शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत भिन्नता के विचारों को महत्व मिला तब से यह बात आवश्यक रूप से समझी जाती है कि छात्रों के व्यक्तिगत विशेषताओं, उनके द्वारा अर्जित ज्ञान बुद्धि आदि के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिये। निष्पत्ति परीक्षा बालक की व्यक्तिगत विशेषताओं तथा उनके ज्ञान बुद्धि के मापन की समस्या के समाधान के लिए किया गया।

अमेरिका के न्यूयार्क स्टेट रेजन्ट ने सन् 1865 में लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। इसके परिणामस्वरूप बोस्टन ने लिखित परीक्षाओं के प्रयोग का श्रीगणेश किया।

''थार्नडाइक ने इस दिशा में अपने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है, ''अगर वस्तु का अस्तित्व है तो वह कुछ मात्रा में अवश्य है और यदि कोई भी वस्तु थोड़ी सी भी मात्रा में अपना अस्तित्व रखती हे तो वह मापी जा सकती है।

बुद्धि परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है जो बालिकाओं के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते है। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों का अधिगम करने में बालिकाओं ने कहाँ तक सफलता प्राप्त की हैं ? इनका मापन करने के लिए उन परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी भी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि प्रशिक्षण कहते है।

दूसरी तरफ भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृति जन्य है, तथा जनसंख्या विस्फोटक की समस्या ने बौद्धिक संसाधनों के विकास की महत्ता को और भी अधिक बढ़ा दिया है। अतः यह आवश्यक है कि

शिक्षा द्वारा मानव संसाधनों को और अधिक कुशल तथा बौद्धिक दृष्टि से सशक्त बनाया जाए, ताकि वे पर्यावरण के साथ तारतम्यता बनाये हुए व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के विकास में शत–प्रतिशत योगदान कर सकें। शिक्षा समाजीकरण एक सशक्त प्रक्रिया है जो बालक की पाश्विक और जैविक प्रवृत्तियों को संशोधित एवं परिमार्जित करती है जिसकी सहायता से बालक अवस्था, लिंग व आयु विशेष के अनुरूप सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करता है, और धीरे–धीरे एक जैविक प्राणी से सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ न केवल व्यक्गित रूप से कल्याणकारी होती है, बल्कि समाज और मानवीय दृष्टि से भी हितकारी सिद्ध होती है। ऐसा केवल समाज में संचालित कुशल शिक्षा प्रक्रिया के कारण ही संभव हो पाता है, इसके साथ–साथ शिक्षा बालक के समुचित समायोजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बुद्धि के स्वरूप एवं बुद्धि के सिद्धान्त दोनों ही बुद्धि के विषय में विचार प्रकट करते है। परन्तु फिर भी दोनों में भिन्नता दृष्टिगत होती है। बुद्धि के सिद्धान्त उसकी संरचना को स्पष्ट करते हैं जबकि स्वरूप उसके कार्यों पर प्रकाश डालते हैं।

गत शताब्दी के प्रथम दशक से ही विभिन्न देशों के मनोवैज्ञानिकों में इस बात की रूचि बढ़ी की संरचना कैसी है तथा इसमें किन–किन कारकों का समावेश है। इन्हीं प्रश्नों के परिणाम स्वरूप विभिन्न कारकों के आधार पर बुद्धि की संरचना की व्याख्या होने लगी। अमेरिका के थार्सटन, थार्नडाइन, थॉमसन आदि मनोवैज्ञानिकों ने कारकों के आधार पर बुद्धि के स्वरूप विषयों में अपने–अपने विचार व्यक्त किये। इसी तरह फ्रांस में अल्फ्रेड बिने, ब्रिटेन में स्पीयरमेन ने भी बुद्धि के स्वरूप के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये।

समस्या का औचित्य –

किसी भी समस्या पर शोध करने से पहले यह देखना अति आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से उस समस्या का हल आवश्यक रूप से कितना निकलना चाहिए? अर्थात् उस समस्या का शोधकार्य किया जाये तो उससे समाज व राष्ट्र को कितना एवं क्या लाभ होगा ?

प्रत्येक शोधकर्ता के लिए उसकी समस्या के महत्व को स्पष्ट करना अति आवश्यक है, क्योंकि तभी इस बात का पता लगेगा तथा भविष्य में इसमें क्या सुधार किये जा सकते है। इस शोध कार्य को चुनने का कारण यह है कि भविश्य के लिए विषय का चयन सोच समझकर करना चाहिए। क्योंकि व्यक्ति को आगे जाकर क्या कार्य करना है तथा उसको करने पर क्या फायदा होगा। किस विशय को आसानी से पढ़ा जा सकता है तथ जिस क्षेत्र में कार्य करना है उसे क्षेत्र से सम्बन्धित ही पढ़ाई करनी है क्योकि यह सब बुद्धि पर आधारित होता है। शिक्षा की रिपोर्ट नामक सर्वे से पता चलता है कि भले ही छात्रों के स्कूल जाने की संख्या बढ़ रहीं हो पर इनमें आधे से ज्यादा छात्र दूसरी कक्षा तक की किताब पढ़ने में असमर्थ है और सरल गणितीय सवाल भी हल नहीं कर पाते। इतना ही नहीं गणित पढ़ने का स्तर भी घटता जा रहा हैं इतने प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन इनकी दिशा भी सहीं नहीं है कुछ राज्यों में शिक्षक व छात्रों की उपस्थिति में भी कमी आ रही है, जिनकी वजह से भारत में शिक्षा विफल हो रही है। स्कूल व छात्रों की सफलता का मूल्यांकन करना जरूरी है। समय पर मूल्यांकन से समस्याओं और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जा सकता है। हम सब को इन समस्याओं का हल निकालने की जरूरत है। जिससे भारत में शिक्षा से जुड़े हर मुद्दे को सुलझाया जा सके।

अतः यह समस्या अध्ययन मात्र विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है जिसे निम्न पूर्ण से स्पष्ट किया जा सकता है –

समस्या कथन –

''उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि, का तुलनात्मक अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

1. उच्च माध्यमिक स्तर – प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के पश्चात उच्च माध्यमिक स्तर आता है, इस स्तर के अन्तर्गत कक्षा 11 से 12 की स्कूली शिक्षा को शामिल किया गया है।

2. कला संकाय – कला संकाय को हिन्दी में कला विभाग भी कहा जाता है। जहॉ कला से सम्बधित विषयों के बारे में पढ़ाया जाता है। यह उच्च माध्यमिक विद्यालयोंए, कॉलेजो तथा विश्वविद्यालयों का प्रमुख विभाग होता है।

3.बुद्धिलब्धि – किसी व्यक्ति की मानसिक क्षमता सेचने का ज्ञान तर्क करना तथा समस्या का समाधान व आकलन करता है। बुद्धिलब्धि कहलाता है।

शोध परिसीमन –

इस अध्ययन को कोटा जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की कक्षा 11 व 12वीं तक ही सीमित रखा गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

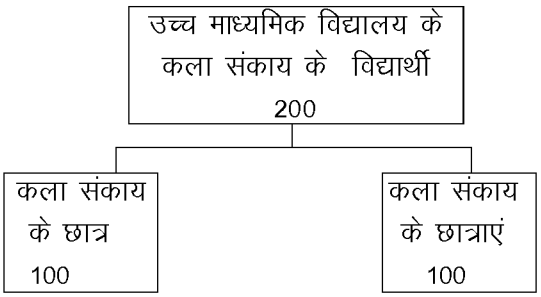
जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध में कोटा जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11वीं व 12वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या हेतु चयन किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कला संकाय के विद्यार्थियों में से यादृच्छित विधि (लॉटरी प्रणाली) द्वारा 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिनमें से 100 छात्र व 100 छात्राओं को लिया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने कोटा जिले के माध्यमिक विद्यालयों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया है।



प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण –

शोधकर्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि को जानने के लिए एस. एस. जलौटा द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी टेस्ट

शोध निष्कर्ष –

परिकल्पना :– उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या :1

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी परीक्षण।

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
कला संकाय के छात्र	100	52.66	8.09	0.96	0.05 स्तर पर स्वीकृत
कला संकाय की छात्राऐं	100	54.33	6.87		

1. $df = N_1 + N_2 - 2$
2. $df = 100 + 100 - 2 = 198$
3. df 198 पर 0.05 का मान 1.97

परिकल्पना के आधार पर व्याख्या एवं विश्लेषण –

व्याख्या एवं विश्लेषण –

उपर्युक्त सारणी से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का मध्यमान क्रमशः 52.66 एवं 54.33 प्राप्त हुआ तथा प्रमाप विचलन 8.09 तथा 6.87 प्राप्त हुआ है। दोनों समूह

के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की गणना से टी मान 0.96 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि df 198 पर 0.05 स्तर पर टी का सारणीयन मान 1.97 से कम है।

निष्कर्ष – प्रतिपादित शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है अर्थात् दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में अन्तर नहीं पाया या है । अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना –

सारणी 1 के अन्तर्गत कोटा कोटा जिले के उच्च माधमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धि–लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन दर्शाया गया हैं। उच्च माध्यमिक विद्यालय की कला संकाय की छात्राओं का मध्यमान छात्रों के मध्यमान से अधिक है। तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय की कला संकाय की छात्राओं का प्रमाणिक विचलन छात्रों के प्रामाणिक विचलन से कम है। और सारणी के टी–मूल्य से यह ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों के बुद्धि–लब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है । सामान्य तौर पर यह देखा गया है कि कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि समान है।

शैक्षिक निहितार्थ –

कोई भी कार्य तभी सफल माना जा सकता है जबकि वह शिक्षा के क्षेत्र में अथवा समाज व राष्ट्र के लिए ऐसा योगदान प्रस्तुत करता हैं, जो कि दुरगामी समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक हो। प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धि–लब्धि के तुलनात्मक अध्ययन को जानने की दृष्टि से एक सर्वेक्षण के रूप में किया गया है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के शैक्षिक अनुप्रयोग निम्नलिखित हो सकते है।

1. विद्यालय में विद्यार्थियों की बुद्धि–लब्धि ज्ञात करने के लिए पाठ्यक्रम का स्थान निर्धारित करना चाहिए।
2. बालकों की बुद्धि–लब्धि ज्ञात करने के लिए विद्यालय में समय–समय पर मानसिक योग्यता की परीक्षा ली जानी चाहिए।

भावी अनुसंधान के लिए सुझाव –

1. भावी शोध हेतु कोटा जिला व अन्य जिलों पर भी इस शोध कार्य किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य केवल उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन महाविद्यालय के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, आर.ए. (1980), शिक्षा अनुसंधान
2. श्रीवास्तव, डी.एन. (2005), मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. बेस्ट जॉन डब्ल्यू (1990), रिचर्स इन एजुकेशन
4. सिन्हा, एच. सी. (1979),शैक्षिक अनुसंधान

Journals -

- Indian Psychological Review, Vol. 80 No. 2 Year 2013, Page 95-102
- Indian Journal of Teacher Education : Anweshika, December 2009, vol.-6 Number-2

Websites -

- https://psychology.as.uky.edu.
- www.shodganga.com

विभिन्न आयु वर्गो के खिलाडियो व गैर खिलाडियो की दुश्चिता पर प्राणायाम के प्रभावों का एक अध्ययन



डॉ. भवानी पाल सिंह राठौड
विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा
जे.आर.एन. राज. विद्यापीठ
विश्वविद्यालय, उदयपुर



शिक्षा माथुर
शोधार्थी
जे.आर.एन. राज. विद्यापीठ
विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रस्तावना:

खिलाडी देश का भविष्य है। उनका सर्वांगीण विकास देश की उन्नति में सहायक है। प्रत्येक खिलाडी कुछ जन्म जात विशेषताओं को लेकर जन्म लेता है। यदि योग के माध्यम से ही उनका सही विकास हो पाता है। इसी प्रकार जो बालिकाएं खेलो में भाग नहीं लेती है उनका विकास भी आवश्यक है। जिससे वे भावी जीवन में उन्नति करे और राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बन सके। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य खिलाड़ीयो व गैर–खिलाडीयों की मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी एक विशिष्ट महत्व रखता है।

सन्दर्भित साहित्य का अध्ययन :

निरंजन और बलराम : बेंगलुरु में अध्ययनरत विश्वविद्यालय स्तर के 18 से 35 आयु वर्ग के चयनित विद्यार्थीयों को उज्जाई प्राणायाम का अभ्यास करवाया गया, इससे उनके दुश्चिंता स्तर में सार्थक कमी आई, साथ की उनकी एकाग्रता का स्तर भी सुधरा जिससे कि उनका अकादमिक प्रदर्षन बेहतर हुआ। यह शोध कार्य मात्र 34 विद्यार्थियों पर किया गया। भविष्य में इसी प्रकार का शोध कार्य वर्ग समूह पर किया जा सकता है जिससे कि उज्जाई प्राणायाम की प्रभावशीलता को सत्यापित किया सके और इसे विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाते हुए विद्यार्थीयों के अकादमी के प्रदर्शन में सुधार के लिए प्रयोग में लाया जा सके।

भोयारे और अन्य: प्राणायाम तनाव को कम करने में कारगर रहता है। इसके कोई साइड इफेक्ट नहीं होते है। यह बिना किसी निवेश के बहुत ही आसानी से किया जा सकता है। यह श्वास को लेने, रोकने और छोडने की पद्धति है। जिसके द्वारा व्यक्ति अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकता है। प्राणायाम से शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक व व्यवहारिक उत्थान होता है। व्यक्ति का शरीर स्वस्थ होने से उसके विचारों का स्तर अच्छा होता है।

दाधीच विजय कुमार: कोविड–19 कोरोना महावारी ने सारे संसार में भारी तबाही मचाई। इससे जन–जन प्रभावित हुआ। प्रतयक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से करोडो लोगों को भारी क्षति झेलनी पडी। ऐसे में उनका मानसिक रूप से स्वास्थ्य भी खराब हुआ है। ऐसे में उनका मनोबल बढाने की बडी आवष्यकता है। हालांकि व्यक्ति के जीवन में सुख और दुख आते रहते है। किंतु व्यक्ति इसके दौरान अपना संतुलन बनाए रखें और यह उसके मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रखने के लिए योग एक उत्तम उपाय है।

शोध प्रारूप:

इस शोध हेतु खिलाडी व गैर खिलाडी बालिकाओं का चयन किया गया। इस अध्ययन में शहरी व ग्रामीण खिलाडी व गैर खिलाडी बालिकाओं को लिया गया। इस अध्ययन हेतु उदयपुर के खिलाडी व गैर खिलाडी बालिकाओं का चयन किया गया।

प्रस्तुत शोध हेतु कुल 360 बालिकाओं का चयन किया जायेगा। जिसमें 180 प्रयोग समूह बालिकाएं तथा 180 नियंत्रण समूह बालिकाएं। दोनों समूहो में 90 खिलाड़ी

बालिका और 90 गैर खिलाड़ी बालिकाओं का चयन किया जायेगा।

प्रयोग समूह का शोध न्यादर्श –

180 बालिकाएं

90 खिलाडी बालिका　　90 गैर खिलाडी बालिका

नियंत्रित समूह का शोध न्यादर्श –

180 बालिकाएं

90 खिलाडी बालिका　　90 गैर खिलाडी बालिका

सारणी

खिलाडी बालिकाओं और गैर खिलाड़ी बालिकाओं की दुश्चिता पर प्राणायाम के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	क्षेत्र	खिलाडी बालिकाओं		गैर खिलाडी बालिकाओं		टी–मूल्य
		Mean	S.D.	Mean	S.D.	
	दुश्चिता	182.38	30.68	176.91	29.14	3.18
1	शैक्षिक दुश्चिन्ता	66.59	13.91	64.81	13.57	4.71
(अ)	परीक्षा संबंधी	29.72	6.27	28.92	6.26	2.35
(ब)	अध्यापन एवं अध्यापन संबंधी	36.87	7.64	35.89	7.31	2.39
2	खेल संबंधी दुश्चिता	48.20	19.28	44.62	17.35	3.40
(अ)	प्रशिक्षण की दुश्चिता	14.74	7.83	13.40	6.80	3.26
(ब)	शारीरिक दुश्चिता	16.83	7.07	15.55	6.62	3.36
(स)	लक्ष्य प्राप्ति की दुश्चिता	16.63	5.15	15.67	5.59	9.6
3	पारिवारिक दुश्चिता	67.59	17.34	67.56	19.98	1.15
(अ)	परिवार की आर्थिक स्थिति	24.71	6.50	24.53	6.86	0.48
(ब)	परिवार की संबंधी दुश्चिता	15.43	4.87	15.35	4.93	0.30
(स)	परिवार की खेल में सद्भावना	27.45	5.97	27.68	8.19	0.37

स्वतंत्रता के अंश df=98

0.05 स्तर का सारणीमान　= 1.98

0.01 स्तर का सारणीमान　= 2.63

सारणी का विश्लेषण करने पर पाया गया कि खिलाडी बालिकाओं और गैर खिलाडी बालिकाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करने पर खिलाडी बालिकाओं की दुश्चिता Mean एवं S.D. 182.38 व 30.69 और गैर खिलाडी बालिकाओं की दुश्चिता का Mean एवं S.D. 176.91 व 29.14 पाया गया। दोनों समुह की तुलना करने पर टी–मान 3.18 पाया गया जो कि df=98 स्तर पर 3.18 है। जो टी–मान 2.63 से अधिक है। जो यह दर्शाता है कि खिलाडी बालिकाओं और गैर खिलाडी बालिकाओं की दुश्चिता में अन्तर पाया गया। इस आधार पर परिकल्पना गलत पायी गयी।

खिलाडी बालिकाओं और गैर खिलाडी बालिकाओं की खेल संबंधी दुश्चिता का Mean 48.20, 64.62 एवं S.D. 19.28 एवं 17.35 पाया गया एवं दोनों की तुलना करने टी–मान 3.40 पाया गया। जो कि 0.01 स्तर पर 2.63 से अधिक पाया गया अतः खिलाडी बालिकाओं और गैर खिलाडी बालिकाओं की खेल संबंधी दुश्चिता में अंतर पाया जाता है। इस आधार पर परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भित ग्रंथ :

अंकद आर बी, हयूर ए और चिनगुडी एस 2011 स्वस्थ व्यक्तियों में हृदय संबंधी कार्यप्रणाली पर अल्पावधि प्राणायाम और ध्यान के प्रभाव, हार्ट व्यूज खंड 12 (2) पृ. 58–62

अवध केपी, लाहौर केएच और अधव पीआर 2014 विभिन्न उपचारो में रसायन के रूप में योग की भूमिका, अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेदिक मेडिकल जर्नल, खंड 2(6) पृ. 1052–1059

अमीन एच. शर्मा आर, व्यास जीएस, व्यास एचए व्यास एम के और प्रजापति पीके 2014 स्मृति पर स्ववजय चिकित्या के रूप में चयनित योगिक प्रक्रियाओं का प्रभाव, जर्नल ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन इंडियन मेडिसिन, खण्ड 20 (3–4) पृ. 181–189

अलजसीर बी. एम. ब्रायसन और बी. अल–शेहरी 2010 वयस्कों में टाइप 2 मधुमेह मेलिटस के प्रबंधन के लिए योग अभ्यास एक व्यवस्थित समीक्षा साक्ष्य आधारित पूरक और वैकल्पिक चिकित्सा वॉल्यूम 7(4) पृ. 399–408

अवस्थी बी.एम और अमिता शर्मा द्वारा अनुवादित 1985 दत्तात्रेय का योग शास्त्र स्वामी केशवानंद योग संस्थान, रूप नगर नई दिल्ली। वाल्यूम 8(4) पृ. 312–312

शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का प्रभाव



प्रो. ममता गुप्ता
प्रोफेसर
जे. एस. विश्वविद्यालय
शिकोहाबाद (उत्तरप्रदेश)



हेमन्त यादव
शोध छात्र
जे. एस. विश्वविद्यालय
शिकोहाबाद (उत्तरप्रदेश)

शोध सारांश

यह शोध पत्र माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के प्रभाव का विश्लेषण करता है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर समग्र व्यक्तित्व निर्माण पर बल देती है, जिसमें शारीरिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यार्थियों की अभिवृत्ति उनके व्यवहार, सहभागिता तथा उपलब्धियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है, और यह अभिवृत्ति उनके परिवेश में विद्यमान विभिन्न मूल्यों से निर्मित होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों को स्वतंत्र चर तथा शारीरिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को आश्रित चर के रूप में लिया गया है। अध्ययन के लिए माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन नमूना विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत प्रश्नावली एवं अभिवृत्ति मापन स्केल का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया।

शोध के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का उनकी शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जबकि राजनैतिक मूल्यों का प्रभाव मध्यम स्तर का पाया गया। धार्मिक मूल्यों के संदर्भ में मिश्रित परिणाम प्राप्त हुए, जहाँ कुछ परिस्थितियों में यह सकारात्मक अभिवृत्ति को प्रोत्साहित करते हैं, वहीं कुछ मामलों में सहभागिता को सीमित भी कर सकते हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से गहराई से प्रभावित होती है। इसलिए शिक्षकों एवं नीति–निर्माताओं को चाहिए कि वे शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों को इस प्रकार विकसित करें, जिससे सकारात्मक मूल्यों का संवर्धन हो और सभी विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जा सके।

मुख्य शब्द (Keywords)– शारीरिक शिक्षा, अभिवृत्ति, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, माध्यमिक स्तर।

प्रस्तावना :–

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है, जिसका उद्देश्य केवल बौद्धिक उन्नति तक सीमित न होकर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास को सुनिश्चित करना भी है। इसी संदर्भ में शारीरिक शिक्षा का विशेष महत्व है, क्योंकि यह विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, अनुशासन, टीम भावना, नेतृत्व क्षमता तथा सकारात्मक जीवन दृष्टिकोण के निर्माण में सहायक होती है। माध्यमिक स्तर वह अवस्था है, जहाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तीव्र विकास होता है तथा उनकी अभिवृत्तियाँ स्थायी रूप धारण करने लगती हैं। अतः इस स्तर पर शारीरिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक संकल्पना है, जो किसी व्यक्ति के विचारों, भावनाओं एवं व्यवहारों को प्रभावित

करती है। शारीरिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों को खेल–कूद एवं शारीरिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित करती है, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति उनके सहभागिता स्तर को कम कर सकती है। विद्यार्थियों की यह अभिवृत्ति केवल व्यक्तिगत रुचि पर आधारित नहीं होती, बल्कि उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों से भी गहराई से प्रभावित होती है।

सामाजिक मूल्य विद्यार्थियों को सहयोग, अनुशासन, समानता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना प्रदान करते हैं, जो शारीरिक शिक्षा में सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं। वहीं राजनैतिक मूल्य जैसे लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, अधिकार एवं कर्तव्य की समझ भी विद्यार्थियों के व्यवहार एवं दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक मूल्य विद्यार्थियों के नैतिक आचरण, जीवन शैली एवं सांस्कृतिक मान्यताओं को दिशा देते हैं, जो कभी–कभी शारीरिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

वर्तमान सामाजिक परिवेश में विभिन्न मूल्यों का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है, जिससे विद्यार्थियों की सोच एवं व्यवहार में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इन परिवर्तित सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

अतः प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना तथा यह विश्लेषण करना है कि उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्य किस प्रकार इस अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन न केवल शिक्षकों एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों के व्यवहार को समझने में सहायक होगा, बल्कि शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व :–

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के समग्र विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है, जिसमें शारीरिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में उभरकर सामने आई है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यवहार एवं अभिवृत्तियों का तीव्र विकास होता है, जिससे यह स्तर अध्ययन के लिए अत्यंत उपयुक्त बन जाता है। इस अवस्था में विकसित होने वाली अभिवृत्तियाँ उनके भविष्य के स्वास्थ्य, जीवनशैली एवं सामाजिक सहभागिता को दीर्घकालीन रूप से प्रभावित करती हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि शारीरिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति किन–किन कारकों से प्रभावित होती है।

विद्यार्थियों की अभिवृत्ति केवल व्यक्तिगत रुचियों तक सीमित नहीं होती, बल्कि उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों से गहराई से प्रभावित होती है। वर्तमान समाज में मूल्यों के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन हो रहा है, जिसके कारण विद्यार्थियों के दृष्टिकोण एवं व्यवहार में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ऐसे में यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि इन मूल्यों का शारीरिक शिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है, ताकि शिक्षा प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं यथार्थपरक बनाया जा सके।

इस अध्ययन का महत्व कई दृष्टियों से स्पष्ट होता है। प्रथम, यह अध्ययन शिक्षकों को यह समझने में सहायता प्रदान करेगा कि विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति के पीछे कौन–कौन से सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक कारक कार्य कर रहे हैं। द्वितीय, यह अध्ययन नीति–निर्माताओं एवं शिक्षाविदों को शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रमों को इस प्रकार विकसित करने में मार्गदर्शन देगा, जिससे विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्यों का विकास हो और उनकी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जा सके।

तृतीय, यह अध्ययन अभिभावकों एवं समाज को भी जागरूक करेगा कि वे अपने बच्चों में ऐसे मूल्यों का

विकास करें, जो उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने में सहायक हों। चतुर्थ, यह शोध भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए एक आधार प्रदान करेगा, जिससे वे इस विषय पर और अधिक गहन एवं विस्तृत अध्ययन कर सकें।

अतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन न केवल शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञानवृद्धि करेगा, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास, स्वास्थ्य संवर्धन एवं सकारात्मक जीवनशैली के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

समस्या कथन–

"शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का प्रभाव"

समस्या कथन में प्रयुक्त षब्दों की परिभाषा :–

1. शारीरिक शिक्षा– इस अध्ययन में शारीरिक शिक्षा से आशय विद्यालय में संचालित उन सभी शारीरिक गतिविधियों, खेल–कूद, व्यायाम एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों से है, जिनमें विद्यार्थी नियमित रूप से भाग लेते हैं।

2. माध्यमिक स्तर– माध्यमिक स्तर से अभिप्राय कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है, जो इस शोध के अंतर्गत चयनित किए गए हैं।

3. विद्यार्थी– विद्यार्थी से तात्पर्य उन चयनित बालक एवं बालिकाओं से है, जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हैं।

4. अभिवृत्ति– अभिवृत्ति से आशय विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक मानसिक प्रवृत्ति, भावनात्मक प्रतिक्रिया एवं व्यवहारिक झुकाव से है। इसे एक मानकीकृत अभिवृत्ति मापन स्केल द्वारा प्राप्त अंकों के आधार पर मापा जाएगा।

5. सामाजिक मूल्य– सामाजिक मूल्य से तात्पर्य उन मान्यताओं, आदर्शों एवं व्यवहारों से है, जो समाज द्वारा स्वीकार किए जाते हैं, जैसे सहयोग, अनुशासन, समानता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व।

6. राजनैतिक मूल्य– राजनैतिक मूल्य से आशय लोकतांत्रिक विचारधारा, अधिकार एवं कर्तव्य की समझ, नेतृत्व क्षमता एवं नागरिक जिम्मेदारी से संबंधित मान्यताओं से है।

7. धार्मिक मूल्य– धार्मिक मूल्य से अभिप्राय उन नैतिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं से है, जो किसी धर्म या आस्था से प्रेरित होती हैं, जैसे सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता एवं नैतिक आचरण।

8. प्रभाव– प्रभाव से आशय सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के कारण विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में होने वाले परिवर्तन या संबंध से है।

अध्ययन के चर :–

स्वतंत्र चर – सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य

परतंत्र चर – अभिवृत्ति

नियंत्रित चर – माध्यमिक स्तर के शारीरिक शिक्षा विद्यार्थी आदि

अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2. शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3. शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन का सीमांकन :–

1. इस अध्ययन माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत केवल 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्रायें) तक सीमित रखा गया।

2. अध्ययन में केवल सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों को ही स्वतंत्र चर के रूप में लिया गया है।

3. प्रस्तुत अध्ययन केवल शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों को ही ध्यान में रखकर किया गया है।

4. अध्ययन हेतु चयनित नमूना केवल कन्नौज के विद्यालयों के क्षेत्र विशेष तक सीमित रखा गया है।

5. विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन स्वयं निर्मित मापनी/प्रश्नावली द्वारा किया गया है।

6. अध्ययन में सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी वातावरण, शिक्षक प्रभाव तथा सहपाठी समूह जैसे बाह्य कारकों का पृथक विश्लेषण नहीं किया गया है।

अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :–

1. न्यादर्श के चयन हेतु वर्गीकृत यादृक्षिक विधि को अपनाया गया।

2. प्रस्तुत शोध के लिए 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

उपकरण :–

– अध्ययन के उपकरण के रूप में डॉ0 एस0पी0 अहलूवालिया (सागर), डॉ0 हरमान एल0 सिंह (उदयपुर) द्वारा निर्मित "जीवन मूल्य" का प्रयोग किया गया।

– अभिवृत्ति मापनी के लिए स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :–

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' टेस्ट सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों का विश्लेषण निम्नलिखित है–

सारणी संख्या–1

शोध अध्ययन मे सम्मिलित कन्नौज शहर के शारीरिक शिक्षा के विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य व अभिवृत्ति के अंकों के मध्यमान अंतर की सार्थकता का परीक्षण

Groups	N	Mean	SD	t value	Sig.
सामाजिक मूल्य	200	70.11	5.82	3.99	सार्थक अन्तर है
अभिवृत्ति	200	68.01	5.16		

उपरोक्त सारणी को देखने से पता चलता है कि शोध अध्ययन में सम्मिलित कन्नौज शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों पर खेलो का उनके सामाजिक मूल्य एवं अभिवृत्ति के परीक्षण मे 100 छात्र व 100 छात्राओं को लिया गया एवं तुलना की गयी जिसमे सौन्दर्यात्मक मूल्यों से सम्बन्धित मध्यमान 70.11 व मानक विचलन 5.82 और अभिवृत्ति का मध्यमान 68.01 व मानक विचलन 5.16 है तथा टी का मान 3.99 प्राप्त हुआ।

सारणी संख्या–2

शोध अध्ययन मे सम्मिलित कन्नौज शहर के शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों के राजनैतिक मूल्य व अभिवृत्ति के अंकों के मध्यमान अंतर की सार्थकता का परीक्षण

Groups	N	Mean	SD	t value	Sig.
राजनैतिक मूल्य	200	89.62	7.89	4.12	सार्थक अन्तर है
अभिवृत्ति	200	68.01	5.16		

उपरोक्त सारणी को देखने से पता चलता है कि शोध अध्ययन में सम्मिलित कन्नौज शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों पर खेलो का उनके राजनैतिक मूल्य एवं

अभिवृत्ति के परीक्षण मे 100 छात्र व 100 छात्राओं को लिया गया एवं तुलना की गयी जिसमे राजनैतिक मूल्यों से सम्बन्धित मध्यमान 89.62 व मानक विचलन 7.89 और अभिवृत्ति का मध्यमान 68.01 व मानक विचलन 5.16 है तथा टी का मान 4.12 प्राप्त हुआ।

सारणी संख्या–3

शोध अध्ययन मे सम्मिलित कन्नौज शहर के शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों के धार्मिक मूल्य व अभिवृत्ति के अंकों के मध्यमान अंतर की सार्थकता का परीक्षण

Groups	N	Mean	SD	t value	Sig
धार्मिक मूल्य	200	65.12	6.61	3.89	सार्थक अन्तर है
अभिवृत्ति	200	62.25	5.16		

उपरोक्त सारणी को देखने से पता चलता है कि शोध अध्ययन में सम्मिलित कन्नौज शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों पर खेलो का उनके धार्मिक मूल्य एवं अभिवृत्ति के परीक्षण मे 100 छात्र व 100 छात्राओं को लिया गया एवं तुलना की गयी जिसमे धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित मध्यमान 65.12 व मानक विचलन 6.61 और अभिवृत्ति का मध्यमान 62.25 व मानक विचलन 5.16 है और टी का मान 3.89 प्राप्त हुआ।

परिणाम–

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामस्वरूप निम्न षोध परिणाम प्राप्त हुए हैं–

1. सारणी संख्या–1 में दर्शाये गये परिणामों में सामाजिक मूल्य के मध्यमान की अपेक्षा अभिवृत्ति का मध्यमान अधिक पाया गया तथा टी मूल्य 3.99 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर से अधिक पाया गया। अर्थात दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। इसलिये यहाँ पर हमारी उपकल्पना "शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" अस्वीकृत की जाती है।

2. सारणी संख्या–2 में दर्शाये गये परिणामों में अभिवृत्ति मध्यमान की अपेक्षा का आर्थिक मूल्य का मध्यमान अधिक पाया गया तथा टी मूल्य 4.12 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर से अधिक पाया गया। अर्थात दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। इसलिय यहाँ पर हमारी उपकल्पना "शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" अस्वीकृत की जाती है।

3. सारणी संख्या–2 में दर्शाये गये परिणामों में अभिवृत्ति मध्यमान की अपेक्षा का आर्थिक मूल्य का मध्यमान अधिक पाया गया तथा टी मूल्य 3.89 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर से अधिक पाया गया। अर्थात दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। इसलिय यहाँ पर हमारी उपकल्पना "शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का उनकी अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष यह निकलता है कि छात्र–छात्राओं के सामाजिक मूल्यों, राजनैतिक मूल्यों तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों का प्रभाव उनकी अभिवृत्ति पर पड़ता है।

अतः अन्त में हम कह सकते हैं कि शारीरिक शिक्षा के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर उनके मूल्यों का उनकी अभिवृति पर प्रभाव अवश्य पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, जे0सी0 (2010). शैक्षिक अनुसंधान का परिचय नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस।

भाटिया, के0के0 (2009). शैक्षिक मनोविज्ञान, लुधियाना, कल्याणी पब्लिशर्स।

चौहान, एस0एस0 (2007). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान, मेरठ, विकास पब्लिशिंग।

दुबे, एस0 (2020). माध्यमिक शिक्षा में मूल्यों की भूमिका.

कानपुर, ग्रंथालय प्रकाशन।

कोठारी, सी0आर0 (2004). अनुसंधान पद्धति, विधियाँ एवं तकनीकें, नई दिल्ली, न्यू एज इंटरनेशनल।

पाण्डे, के0पी0 (2012). शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ, वाराणसी, विश्वभारती प्रकाशन।

षर्मा, ए0आर0 (2008). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।

सिंह, वाइ0के0 (2011). शैक्षिक अनुसंधान, नई दिल्ली, ।च् पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।

श्रीवास्तव, एच0एस0 (2012). शिक्षा का समाजशास्त्र, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

सिंह, आर0 (2018). शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा का महत्व, नई दिल्ली, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन।

शुक्ला, एम0 (2015). शारीरिक शिक्षा के सिद्धांत एवं व्यवहार, लखनऊः विश्वविद्यालय प्रकाशन।

तिवारी, जी0 (2019). विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।

वर्मा, जे0पी0 (2013). शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, नई दिल्ली, Tata McGraw&Hill।

यादव, एस0 (2015). मूल्य शिक्षा का स्वरूप एवं विकास, जयपुर, रावत पब्लिकेशन।

NCERT (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।

सिंह, ए0 (2014). माध्यमिक विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, भारतीय शारीरिक शिक्षा पत्रिका, 6(2), 45–50।

मिश्रा, आर0 (2016). सामाजिक मूल्यों का विद्यार्थियों के व्यवहार पर प्रभाव, शिक्षा शोध पत्रिका, 8(1), 30–35।

गुप्ता, एन0 (2017). धार्मिक मूल्यों एवं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का संबंध, भारतीय शिक्षा समीक्षा, 10(3), 60–66।

त्रिपाठी, पी0 (2013). राजनैतिक जागरूकता एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, शैक्षिक अध्ययन पत्रिका, 5(2), 22–28।

यादव, आर0 (2011). मूल्य शिक्षा एवं विद्यार्थियों पर उसका प्रभाव, भारतीय शिक्षा जर्नल, 37(2), 45–52।

E- GOVERNANCE/GOOD GOVERNANCE

Prof. DR. D.P. MISHRA
(Supervisor)
MAHARAJ VINAYAK
GLOBAL UNIVERSITY
DHAND AMER JAIPUR
(RAJ.)



RAM NIWAS SAINI
(Research Scholar)
MAHARAJ VINAYAK GLOBAL
UNIVERSITY DHAND AMER JAIPUR
(RAJ.)
MAIL-RNSAINI189@GMAIL.COM
MOB.NO. - 9785230430

Introduction:

Background of E-governance :- History of &-governance in India: The Governance of India established the Department of Electronics in 1970. The first major step towards E- governance in India was the establishment of the National informatics Centre (NIC) in 1977. This was followed by the launch of MICNET in 1987. The four prominent pillars of E-governance are-people Process, Technology and resources. The act of process of governing or overseeing the control and direction of something.

Meaning:- E-governance meaning electronic governance is using information and communication technologies (ICTS) (such as wide Area Networks &the Internet and mobile computing) at various levels of the government and the public sector and beyond for the purpose of increasing governance. It is simplifies transactions between the government and citizens.

Re-inventing government has been a dominant theme since 1990s.where in governments world over are a attempting to improve the systems of public service delivery. Rapid strides made in the field of information and communication Technology (ICTS) have facilitated the re-invention of governments and prepared them to serve the needs of a diverse society. In other words, the information age has redefined the fundamentals and transformed the institutions and mechanisms of service delivery forever. The vision is the articulation of a desire to trans form the way government functions and the way it relates to its constituents. The Concept of Electronic governance, popularly Called e-governance. Democracies in the world share a vision of the day when e-governance will become a way of life.

It has a lot of opportunities especially in the social and economic growth & transparent rules of governments of the developing world.

2. CONCEPT OF E-GOVERNANCE:

E-governance is the application of ICT to the processes of government functioning for good governance. In other words, e-governance is the public sector's use of ICTs with the aim to improve information and service delivery, encourage citizen participation in decision-making and make government more accountable, transparent and efficient.

The Ministry of Information and Technology states that e-governance goes far beyond mere computerization of stand alone back office operations. It implies fundamental changes in government operations; and new set of responsibilities for the legislature, executive, judiciary and citizens,

According to the Comptroller and Auditor General, UK, e-governance means providing public access to information via the internet by

government departments and their agencies.

So in essence, e-governance is the application of ICT in government functioning to bring in SMART governance implying: simple, moral, accountable, responsive and transparent governance.

SMART GOVERNANCE

1. Simple- meaning simplification of rules, regulations and processes of government through the use of ICTs and thereby providing for a user-friendly government

2. Moral- connoting emergence of an entirely new system of ethical values in the political and administrative machinery. Technology interventions improve the efficiency of anti- corruption agencies, police, judiciary, etc.

3. Accountable- facilitating design, development and implementation of effective Management Information System and performance measurement mechanisms and thereby ensuring accountability of public service functionaries.

4. Responsive- streamlining the processes to speed up service delivery and make system more responsive.

5. Transparent- bringing information hitherto confined in the government documents to the public domain and making processes and functions transparent, which in turn would bring equity and rule of law in responses of the administrative agencies.

Smart- Governance thus helps in:-

- Improving the internal organizational processes of governments;

- providing better information and service delivery;

3. STAGES OF E-GOVERNANCE:

Different stages of e-governance are identified on certain set of criteria. These stages are:

- Simple information dissemination (one-way communication)- it is considered as the most basic form, as it is used for merely disseminating information;

- Two-way communication (request and response)- it is characterized with e-mail system and information and data-transfer technologies in the form of website;

- Service and financial transactions- It is online services and financial transactions leading to web based self-services;

- Integration (both vertical and horizontal)- in this stage the government would attempt inter and intra-governmental integration.

- Political participation-this stage means online voting, online public forums and opinion surveys for more direct and wider interaction with the government.

Another classification of e-governance has six stages of which the first two are similar to that of the above classification. The remaining four are:

- Third stage-refers to multi-purpose portals, which allow customers to use a single point of entry to send and receive information and to process transactions across multiple departments;

- Fourth stage-consists of portal personalization, wherein customers are allowed to customize portals with their desired features;

- Fifth stage- is when government departments cluster services along common lines to accelerate the delivery of shared services and clustering of common services; and

- Sixth and final stage-technology is integrated further to bridge the gap between the front and back office.

After our discussion of the concept and stages of e-governance, we will now deal with significant models of e-governance that can be used in designing e-government initiatives.

4. Significance of E- Governance in India :

ICT Applications impact upon the structures of public administration systems. Technological advancements facilitate the administrative systems by enabling.

Administrative Development:-

- Automation of Administrative processes
- paper work reduction
- Quality of services.
- Elimination of Hierarchy.
- Change in Administrative culture.

Effective service Delivery:-

ICTS play an important role in effectively delivering services to the people.

Likes: 1.Transparency
2. Economic Development
3. Social Development
4.Strategic information system.

5. Suggestions:

The above discussion highlighted the important role of ICTS in governance. In order to highlight the benefits of ICTs maximally, we need to develop sufficient and adequate infrastructure, provide sufficient capital and investment, enable easy and wider accessibility and generate ample and skillful human resources. These as some of the immediate and effective challenges to implementation of ICTS & e-governance. We will now discuss these issues-

- Infrastructure.
- Capital.
- Access.
- Utility of information.
- Human Resource Development.
- Capacity Building.
-Changing the mindset of government functionaries.
- Language.
- Standardization in Data Encoding.
- Grievance Redressal mechanism.
- Cyber laws etc.

6. KEY CONCEPTS:

E- Governance: use of technology to enhance the access to and delivery of government services to benefit citizens, business partners and employees.

ICTs:are the information and communication technologies such as, radio, computers, Internet, Intranet, Websites, and satellites; providing database, knowledge database, expert systems, Geographic Information System, Management Information System, video and audio teleconferencing.

State Wide Area Network: Networks linking the state headquarters right up to the block level through National Informatics Centre Network.

National E-governance Plan :seeks to implement 25 Mission Mode Projects at the Centre, State and integrated service levels so as to create a citizen-centric and business-centric environment for governance, create governance and institutional mechanisms, set up core infrastructure.

7. CONCLUSION:

E-Governance in India is in its early stages of development. Though, a significant progress has been made by the government to provide e-governance facilities to the citizens but it is still limited to only a small section of the society. E-Governance will bear fruit only when it is inclusive, sustainable and provided to all sections of the society.

Dr. APJ Abdul Kalam the former President of India had a vision in the field of e-Governance. E-Governance has to be citizen-friendly. Delivery

of services to citizens is considered a primary function of the government. It is impossible to give transparent administration in a democratic nation of our one billion people without e - governance.

E - Governance has given the direct benefit of policies of government to the beneficiary citizens.

E - Governance has reduced the corruption in rules, administration, public tenders, bureaucracy, government and private works of public.

E - Governance has brought the transparency in the every sector of human life.

8. REFERENCES:

DAC.(2005). Annual Report: 2005-2006, Government of India: Department of Agriculture and Co-operation.

DAC.(2006). Annual Report: 2006-2007, Government of India: Department of Agriculture and Co-operation.

DAC.(2007). Annual Report: 2075-2008, Government of India: Department of Agriculture and Co-operation.

DAC.(2014). Annual Report: 2014-2015, Government of India: Department of Agriculture and Co-operation.

DIT. (2003).INDIA: E-Readiness Assessment Report 2003.Government of India: Department of Information Technology.

DIT. (2004).INDIA: E-Readiness Assessment Report 2004.Government of India: Department of Information Technology.

DIT. (20035a).INDIA: E-Readiness Assessment Report 2005.Government of India: Department of Information Technology.

DIT. (2005b). Information Technology Annual, Report 2005-06.Government of India: Department of Information Technology.

उत्तर आधुनिकता के उपन्यासकार मधु आचार्य 'आशावादी'



प्रियंका हर्ष
शोधार्थी
महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज.)
मो. 6376414605

बीकानेर की साहित्यिक प्रतिभाओं में जनकवि हरीश भादानी, कथाशिल्पी यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', उपन्यासकार अन्नाराम 'सुदामा' और नंदकिशोर आचार्य जैसे अनेक लब्धप्रतिष्ठ सृजनधर्मियों की साहित्य–सेवा कालजयी कही जा सकती है। इन्हीं प्रतिभाओं की अगली कड़ी में उत्तर आधुनिकता का भी प्रवेश होने लगता है और तब जो नाम हमारे सामने आता है, वह है बहुआयामी प्रतिभा के धनी उपन्यासकार मधु आचार्य 'आशावादी' का। मधुजी ने हिंदी राजस्थानी में प्रायः सभी विधाओं में लेखनकार्य किया है। इन्होंने शुरुआत तो कविता और नाट्य–लेखन से की, पर बाद में पत्रकारिता, कहानी–लेखन और उपन्यास लेखन में भी नाम कमाया। 'गवाड़' पर जब इन्हें साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली से राजस्थानी का सर्वोच्च पुरस्कार मिला, तब उस उपन्यास की कथा–वस्तु को लेकर उत्तर आधुनिक विमर्श ने साहित्य–प्रेमियों को बहुत प्रभावित किया। कोलाज शैली के बिंबात्मक दृश्यांकन और संवाद–संप्रेषण की प्रभावोत्पादकता ने इस उपन्यास को हिंदी के प्रख्यात लेखक कमलेश्वर के "कितने पाकिस्तान" का स्मरण दिला दिया।

सन् 1996 में अपनी पहली कृति "अन्तस उजास" से चर्चा में आए मधुजी ने अद्यावधि एक सौ बीस से अधिक रचनाओं का सृजन किया है। ये पुस्तकाकार कृतियां पाठकों में सदैव चर्चा का विषय बनती रही है। मूलतः पत्रकार मधुजी के तीन रूप हमारे समक्ष आते हैं – नाटककार, साहित्यकार और पत्रकार के रूप में। इन्होंने व्यंग्य भी लिखे हैं, संस्मरण भी लिखे हैं, रेखाचित्र भी लिखे हैं, जीवनी और डायरी भी लिखी हैं, बाल साहित्य एवं प्रेरक प्रसंगों पर भी अपनी कलम चलाई है, किन्तु कथा–साहित्य में उत्तर आधुनिक सोच को लेकर आपने जो प्रयोग किए हैं, वे अनुपम कहे जा सकते हैं। आपने लेखन में प्रयोगधर्मिता के साथ–साथ आलोचकीय दृष्टि भी दिखाई देती है। हिंदी में आपके बारह उपन्यास हैं – हे मनु, खारा पानी, मेरा शहर, इंसानों की मंडी, एट द 24 घंटे, दलाल, अपने हिस्से का रिश्ता, एक लम्हा जिन्दगी, थर्ड ए.सी. का सफर, सूरजमुखी, बड़ी आंखों वाली लड़की, टेढ़े–मेढ़े पोज आदि। इनके अतिरिक्त राजस्थान में आपके "गवाड़", "अवधूत", "आड़ा तिरछा लोग", "भूत भूत रो गळो मोसै", "आस री अमावस", "डोकरीं", "जूण सूं नूंणी जूण", "पीड़ रो पतियारो", "उळझ्योड़ा सवाल" इत्यादि उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

यदि हम बाल उपन्यासों की बात करें, तो "चींटी से पर्वत बनी पार्वती", "गुल्लू री गुल्लक", "उम्र से आगे", "सीमा सलीब पर", जैसे उपन्यासों की भी अलग ही विशेषताएं हैं। इनमें आशावाद तो है ही, बाल–मनोविज्ञान का भी सुंदर निदर्शन हुआ है। आपका रचना–कौशल अद्भुत है। आपने पारंपरिक मिथक का अतिक्रमण करते हुए इतने नए प्रयोग किए हैं कि हर किसी रचनाकार के लिए ऐसा करना संभव नहीं होता। आपके "गवाड़" उपन्यास का कथानक देखें, तो वह बिखरा हुआ है। "गवाड़" के विभिन्न दृश्यों को हम यदि क्रमबद्ध करें, तो हम उसके माध्यम से कथानक की कमी से उबर जाते हैं। इस उपन्यास में केन्द्रीय पात्र कोई व्यक्ति नहीं होकर "गवाड़" ही है।

उपन्यासकार चाहता है कि गवाड़ को हम जानें–पहचानें और उसके माध्यम से सबके सुख–दुख साझा करें, प्रेम–भाईचारे के साथ रहें। उपन्यास के अंतिम दृश्य में मंच स्वयं ही दर्शकों में घुल–मिल जाता है और ऐसा लगता है मानो ''गवाड़'' का समग्र प्रभाव समष्टिगत रूप में साकार हो उठा हो।

मधु आचार्य ''आशावादी'' के उपन्यास ''उम्र से आगे'' में संवेदना के स्तर पर जो सीख मिलती है, वह अत्यंत सराहनीय कही जा सकती है। उपन्यास का मुख्य पात्र भंवर है, जिसके बारे में विचार करते हुए हरदयाल अपने पुत्र के संबंध में सोचता है – ''निष्ठा और समर्पण से परिस्थिति का सामना किया जाए तो इंसान को जीतने से कोई भी नहीं रोक सकता। एक छोटा–सा बच्चा भी बड़ा इतिहास रच सकता है। यह बात अब तक तो उन्होंने किताबों में ही पढ़ी थी, आज प्रत्यक्ष देख भी ली। अपने बेटे पर उन्हें बहुत गर्व हुआ।''1

नगेन्द्र नारायण किराडू के शब्दों में, ''यह उपन्यास इस बात की सीख देता है कि यदि आपका उद्देश्य उदात्त है तो आपको बड़ी से बड़ी सफलता भी प्राप्त हो जाती है, जैसे कि भंवर को मिलती है। इस उपन्यास की भाषा बहुत ही मधुर और स्पष्ट है। इसमें व्याकरण के चिह्नों का बहुत अधिक सहारा लिया गया है।''2

यह सही है कि पांच भागों में विभाजित इस उपन्यास में विस्मयबोधक चिह्न, प्रश्नवाचक चिह्न, अल्प विराम, पूर्ण विराम, विसर्ग और योजक चिह्नों के साथ–साथ लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी यथास्थान बहुत ही प्रभावपूर्ण तरीके से किया गया है।

इस प्रकार की विशेषताएं मधु आचार्य ''आशावादी'' की अन्य रचनाओं में भी दृष्टिगत होती हैं। चूंकि हरेक लेखक की अपने एक विशेष शैली होती है और यही कारण है कि मधु आचार्य के लेखन की ये शैलीगत विशेषताएँ हमें इनके अन्य उपन्यासों में भी दृष्टिगोचर होती है।

मधु आचार्य ''आशावादी'' का एक उपन्यास ''एक लम्हा जिन्दगी'' एक यथार्थवादी उपन्यास है। इस उपन्यास में एक वृद्ध व्यक्ति की संवेदनशीलता और मनोदशा बहुत ही प्रभावशाली रूप में उजागर होती है। इस उपन्यास में वर्तमान हालात का सुंदर चित्रण हुआ है। यह उपन्यास हमें बताता है कि प्यार वासना के पंक में सना हुआ नहीं होना चाहिए। जहां वासना होती है, वहां प्यार का नामोनिशान तक नहीं होता। वस्तुतः प्यार एक पवित्र बंधन होता है दो आत्माओं का, वहाँ कामना के स्थान पर त्याग की भावना होती है और देने का भाव मन में रहता है। प्यार में उम्र बा बंधन नहीं होता, निश्छलता होने से ही प्रेम का पल्लवन होता है। इस उपन्यास में अनेक विविधताएं दृष्टिगोचर होती है। लेखक का मत है कि प्यार में जितनी दृढ़ता और निष्कलुषता होगी वह उतनी ही पवित्रता के साथ आगे बढ़ेगा।

मधु आचार्य के पात्र मानवीय मूल्यों के उपस्थापक होते हैं। चरित्रों की उदात्त प्रवृत्ति पाठकों को सहज आकर्षित करती रहती है। ''एक लम्हा जिंदगी'' की ही बात करें तो यहाँ प्रेम का आदर्श प्रतिफलित होता है। यहां निश्छल प्रेम प्रस्फुटित हुआ है, संकीण सोच को यहां कोई स्थान नहीं मिलता और न ही उम्र कहीं प्रेम में बाधक होती है। यहां मां को बहुत महत्त्वपूर्ण बताया गया है। यद्यपि इस उपन्यास में विमला काकी के रूप में शालू को मां का प्यार मिलता है, फिर भी मां तो मां ही होती है।

इसी प्रकार ''खारा पानी'' ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। हम जानते हैं कि इतने विशाल रेगिस्तान में पानी की कमी तो है ही। उपन्यासकार ने जल को जन से जोड़कर इसे राष्ट्रीयता का मुद्दा बनाया है। पानी राष्ट्र की एक बड़ी समस्या है। लोक में प्रचलित है कि अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा। इस कथन में कितनी सच्चाई है, यह तो नहीं कह सकते, पर इस कथन से आने वाले समय में जल–संकट का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। वर्तमान में तेजी से भूजल का सतर नीचे गिरता जा रहा है, मानसून का अनियमित होते जाना और वर्षा जल–संग्रहण के पारंपरिक स्रोतों को नष्ट करते जाना, ये कुछ ऐसी स्थितियां हैं, जो

आगामी समय में बहुत ही भयावह नजारा उपस्थित करने में सहयोगी बनेंगी। यहाँ जल–आंदोलन में एक किसान पुलिस की गोली से शहीद हो जाता है। फिर उसी किसान की लड़की आंदोलन का झंडा अपने हाथों में पकड़ती है। उपन्यासकार बताना चाहता है कि बिना संघर्ष के सफलता नहीं मिलती। निडरतापूर्वक संघर्षरत रहने पर ही सफलता मिलती है। जल है तो कल है। जल की समस्या को इस उपन्यास में बहुत ही मजबूती से उठाया गया है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े इस उपन्यासकार की सकारात्मक सोच उजागर हुई है, जो सहज एवं स्वाभाविक रूप में प्रकट हुई है।

उत्तर आधुनिकतावाद बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जलाया गया एक सांस्कृतिक आंदोलन था, जो कला, दर्शनशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं आलोचना के प्रचलित प्रतिमानों को चुनौती देने के उद्देश्य से आगे बढ़ा और आधुनिकतावाद को चुनौती देते हुए इसने सांस्कृतिक वातावरण को बदल डाला। कुछ आलोचकों का मत है कि यह आधुनिकता का अंत है वह कुछ का मत है कि उत्तर आधुनिकता के बाद की स्थितियों की उपज है, जबकि वास्तविकता तो यही है कि कोई भी साहित्यकार अपनी पूर्ववर्ती परंपरा से बिल्कुल अलग नहीं रह सकता, वह अपनी प्रयोगधर्मिता और युगानुरूप नई सोच अपने साहित्य में प्रस्तुत कर सकता है और यही कार्य मधु आचार्य ''आशावादी'' ने अपने सृजन में कर दिखाया है। यहां हम पाते हैं कि आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के बीच मधु आचार्य की रचनाएं सेतु–स्वरूप परिलक्षित होती हैं।

''खारा पानी'' में विभिन्न राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विषमताओं के धरातल पर पर्यावरणीय चिंतन पर बल दिया गया है। जल संकट इस असंतुलन का पहला पायदान है। जलाभाव से त्रस्त मरुभमि के जीव–जंतु और मनुष्यों की मनोदशा को इस उपन्यास में बखूबी दर्शाया गया है और इसके निदानार्थ जन–आंदोलन को जरूरी बातया गया है। ''इंसानों की मंडी''में बताया गया है कि प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ मानवदेह को भी बाजार की वस्तु बनाया जा रहा है। ''सूरजमुखी'' के माध्यम से यह सन्देश दिया गया है कि मनुष्य को प्राकृतिक उपादानों से जुड़े रहना चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि मधु आचार्य मनुष्य और प्रकृति के मध्य संतुलन को जीवन के लिए अति अनिवार्य तत्त्व मानते हैं।

मधुजी के पात्रों के मौकापरस्त सेठ–साहूकार और राजनेता हैं, वहीं दयालु एवं परोपकारी पात्रों का भी अभाव नहीं है।

मधुजी के पात्र दुनियादारी के झमेले में फंसे हैं और वस्तुस्थिति को समझना चाहते हैं, पर उन्हें लगता है कि वे साजिशों के शिकार हैं। ''टेढ़े–मेढ़े पोज'' का यह संवाद देखिए–

– अब तो मुझे भी लगता है, जो यह साजिश है।

– हम जान गए हैं तो इस साजिश का शिकार नहीं होंगे।

– हम अपने अतीत को जानकर रहेंगे।

– वही तो हम कर रहे हैं। अतीत को जानने की कोशिश में ही हमें कई टेढ़े–मेढ़े पोज दिख रहे हैं।

– हम इन पोज को देख रहे हैं, मगर लोग तो पोज बना रहे हैं।4

पढ़ने में तो ये संवाद साधारण–से लग रहे हैं, लेकिन इनमें निहित व्यंजना बहुत ही अर्थपूर्ण है, जो उत्तर आधुनिकता का स्मरण दिलाती है।

डॉ. अखाराम चौधरी के शब्दों में, ''मधु आचार्य के उपन्यासों में उत्तर आधुनिकयुगीन प्रवृत्तियों के तौर पर व्यक्ति केन्द्रित भावना के कारण पारिवारिक एवं सामजिक मूल्यों में गिरावट के प्रति गंभीर चिंता झलकती है। संपूर्ण मानव समाज में विविध प्रणालियों एवं पद्धतियों के रूप में विद्यमान है। समकालीन हिंदी कथा साहित्य में विवाह संस्था के प्रति नई पीढ़ी के दृष्टिकोण में आ रहे बदलाव का यथार्थपरक चित्रण हुआ है। इन उपन्यासों में पुरानी और नई पीढ़ी के विभिन्न दंपतियों के आदर्शपरक और यथार्थपरक संबंधों का समुचित विवेचन मिलता है। इनमें एक ओर जहां प्रगाढ़ दांपत्य संबंधों के साथ पारिवारिक और सामाजिक दायित्व निर्वहन में तत्पर नर–नारियों के

प्रेरणास्पद ब्यौरे मिलते हैं, वहीं तथाकथित पाश्चात्य अंधानुकरण और प्रतिकूल परिस्थितियाँ में आर्थिक अभावों की भरपाई के लिए विवाहेत्तर संबंधों की बढ़ती प्रवृत्ति पर भी यथेष्ट परिमाण में चर्चा की गई है।''5

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान नैनो–टेक्नोलोजी के दौर में बदलते मानवीय सोच की व्याख्या करना कोई आसान कार्य नहीं है। निरंतर गिरते जा रहे मानवीय मूल्यों के प्रति तो कोई भी संवेदनशीन रचनाकार चिंतित हो उठता है और यह स्वाभाविक भी है। तेजी से बदल रहे पर्यावरणीय और आर्थिक संकटों से घिरे हुए मनुष्य को प्रकृति और पर्यावरण से किनारा नहीं करना चाहिए। हमारे संस्कारों का जो क्षरण हो रहा है, उसके प्रति चिंता करने की जरूरत है। उत्तर आधुनिकता के इस दौर में एक सजग लेखक हमें आईना दिखाने का कार्य ही कर सकता है, उसके पास युगीन को बदलने का कोई उपाय नहीं है। ऐसी स्थिति में बहुआयामी प्रतिभा में धनी मधु आचार्य ''आशावादी'' के उपन्यासों से यही आशा की जानी चाहिए कि इनके विपुल सृजन से समाज का हित हो और इनका लेखन कालजयी और सार्थक सिद्ध हो।

शोध–संदर्भ :

1. मधु आचार्य ''आशावादी'', उम्र से आगे, पृ. 27
2. नगेन्द्र नारायण किराडू, मरु नवकिरण, जुलाई–सितम्बर 2022, पृ. 25
3. नगेन्द्र नारायण किराडू, मरु नवकिरण, जुलाई–सितम्बर, 2022, पृ. 25
4. मधु आचार्य ''आशावादी'', टेढ़े–मेढ़े पोज, पृ. 94
5. डॉ. अखाराम चौधरी, मधु आचार्य ''आशावादी'' के उपन्यासों में निरूपित समकालीन युगबोध (शोध प्रबंध), पृ. 362

OUR ADVISORY BOARD



DR. CHANCHAL B.
Texas U S A



PROF. SHAD AHMAD KHAN
Sultanate of Oman



DR. BIMLA RAI
Thimphu Bhutan



SANDEEP JOSHI
N.C.T.E.,New Delhi



PROF. (DR.) SAROJ GARG
Educationist, Udaipur



DR. SANTOSH SHARMA
Educationist, Jodhpur



DR. DINESH CHAND
U.G.C., New Delhi



DR. REKHA LALWANI
Educationist, Jhalawar

OUR EDITORIAL BOARD



DR. OM PRAKASH MEHRARA
Educationist, Hanumangarh



PROF (DR.) BABITA JAIN
Educationist, Bikaner



PROF. (DR.) BHAGIRATH BISHNOI
Educationist, Jalore



DR. NIRANJAN K. BOHRA
Educationist, Jodhpur



DR. PAWAN K. GUPTA
Director & Educationist, Jaipur



DR. MAHESH C. GURJAR
Educationist, Kotputli



DR. SAMINA
Educationist, Jodhpur



PROF. (DR.) SUNITA
Educationist, Jalore



DR. SUBHASH CHANDRA SAINI
Principal & Educationist, Dundlod, Jhunjhunu



DR. RITU BAIRAGI
Educationist, Udaipur



DR. DEEPIKA SHARMA
Educationist, Jaipur



DR. ASHA SHARMA
Educationist, Jodhpur



DR. GAYATRI BAIRWA
Educationist, Jaipur



Dr. Kashmir Singh Khunda
Educationist, Amritsar, Punjab



DR. JAKIR HUSAIN ANSARI
Educationist, Hindoli, Bundi



DR. PRATIMA GUPTA
Educationist, Jaipur



DR. BHARTI SANKHLA
Educationist, Bikaner



DR. ALPANA SHARMA
Educationist, Bikaner



DR. VIMLA KHATRI
Educationist, Bikaner



DR. SHWETA GUPTA
Educationist, Jaipur

ACADEMIC EDITOR



PROF. SHREESH PAL SINGH
Chief Academic Editor



PROF. (DR.) RAJENDRA K. SHRIMALI
Chief Editor



DR. PRIYANKA SHRIMALI
Associate Editor

ABOUT THE JOURNAL

CHHAVI National Journal of Higher Education is a reviewed periodical published in January, April, July and October in every year by the Shubham Education, Research & Information Centre, Bikaner, Raj.

Journal registered by National Institute of Science Communication and Information resources, New Delhi's Letter NSL/ISSN/INF/2012/2816 Dated December 04, 2012 and assigned ISSN (Print) 2319-9679. Bilingual journal's broad subject is Psychology, Philosophy and Sociology is the special reference of focus subject is Education.

Journal Title	:	CHHAVI : National Journal of Higher Education
Publication Language	:	Bilingual Hindi & English both.
Publication Frequency	:	Quarterly
Publication Nature	:	Print & Online
ISSN	:	2319-9679
Broad Subject	:	Psychology, Philosophy, Sociology
Focus Subject	:	Education
Published by	:	Shubham Educational, Research and Information Centre
E-mail	:	shrimalidrrajendra@gmail.com
website	:	www.chhavinjhe.in
Contact No.	:	9414742973, 9413471252, 8209618803

GUIDELINES FOR CONTRIBUTORS

Membership registration fees can be sent in the shape of at per cheque / cash or online transfer. Cheque shall be prepared in favour of Shubham Shrimali and Online Deposit Phone-Pay Number. - 9352628093.



Youth Publisher

Name of Bank	:	State Bank of India
Branch	:	Dauji Road, Bikaner
Account Name	:	Shubham Shrimali
Account No.	:	37051542804
IFSC Code	:	SBIN0031447
MICR Code	:	334002039

PIN : 31447

The subscription rates are as under :

Single Copy	₹ 350
Annual Subscription	₹ 1000



Youth Editor

Communication Address : PROF. (DR.) RAJENDRA KUMAR SHRIMALI
Behind Karni Mata Temple, Outside Jassusar Gate, Bikaner-334004 (Raj.)
Mobile: 9414742973, 9413471252, 8209618803
Google Scholar Profile : https://scholar.google.com/citations?user=kNxjU_8AAAAJ&hl=en
Social Science Research Network ID : 4556183

Print at : Rajasthan Computger & Printers, Bikaner M. : 9352999951